मनुष्य

(कहानी सग्रह)

-शिव सिंह भाटी 'हाडला'

सुकीर्ति प्रकाशन

I S B N 81 88796 233-4

पुस्तक : मनुष्य (कहानी संग्रह)
लेखक : शिव सिंह भाटी 'हाड़ला'
सर्वाधिकार : लेखकाधीन
प्रकाशक : सुकीर्ति प्रकाशन
डी सी निवास के सामने करनाल रोड
कैथल-136027 (हरियाणा)
फोन 01746-235862, 09215897365
मुद्रक : सुकीर्ति प्रिंटर्स, करनाल रोड, कैथल
संस्करण : 2010
मूल्य : भारत में रुपये 150 00
विदेश में 15 $ (पन्द्रह यू एस. डालर)

Manushy (Khani Sangrah) by Shiv Singh Bhati 'Hadla'

समर्पण

धर्मपत्नि श्रीमति कचन कवर

को

जिनके सहयोग के अभाव मे

'मनुष्य' की रचना

सभव नही होती।

क्रम स

भूमिका

मनुष्य वास्तविक जीवन मे एक अजीब, गूढ, रहस्यमयी, अलौकिक मानवीय कृति है। मनुष्य रूपी अबुझ पहेली को समझना जितना आसान दिखाई देता है, यथार्थ मे ऐसा है नही? मनुष्य तरह तरह के मुखौटे ओढे रहता है। इसकी आँखो मे दिखाई कुछ और देता है, जबकि उसके दिल मे छुपी हुई भावनाऐ कुछ और ही होती है। इसकी ककर्श और कटु बाते चुभती है, परन्तु परिस्थितियो वश उनका भावार्थ अत्यधिक गहरा एव सार्थकता लिए हुवे भी हो सकता है। शव को अर्थी पर सजाने की प्रक्रिया मे बाहरी जगत को उसके कर्म भले ही सात्विक और पवित्र लगे, परन्तु अत्येष्टि के बाद उसके यही कर्म खौफनाक इरादे लिए हुवे, मानवीय सभ्यता के रिश्ते-नातो को तार-तार करने वाले भी हो सकते है।

अतिशयोक्ति भले ही लगे पर यह मानना होगा कि 'ससार का प्रत्येक मनुष्य सीधा, सरल, और निस्कपट है, बशर्ते कि उससे काम नही पडे।' जैसे ही उससे वास्ता पडा, तत्काल ही उसने किन्तु, परन्तु, लेकिन का अडगा लगाकर अपनी औकात दिखाई।

वस्तुत मानव जाति के लिए मनुष्य को समझना, तलवार की धार पर चलने के समान है। मानव सस्कृति का विकास ही इसलिये हुआ कि मनुष्य अपने आप को समझे। मनुष्य जीवन मे बहुदा हमारा अत उसी समय हो जाता है, जब सब कुछ अपने मनोकुल नही होता। तब निराशात्मक दु ख उभर आता है, जो कुठा और विसगतियो को जन्म देता है।

मनुष्य जीवन मे कोई निश्चिन्तता नही है। जीवन के सुख दु ख, हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश मे कोई तारतम्य नही हे, इनका परस्पर कोई सबध ज्ञात नही है। कम से कम मनुष्य के लिये तो वह अज्ञेय ही है। मनुष्य के इन्ही विविध रग भरे, भिन्न-भिन्न, सकारात्मक-नकारात्मक पहलुओ को दर्शाने का प्रयास इस पुस्तक मे किया गया है।

सभ्यता के उत्तरोतर विकास मे शिक्षा की भूमिका निसन्देह सर्वग्राही और सर्वमान्य है। उन्नति की धुरी शिक्षा के केन्द्र बिन्दु पर ही घुमती ह। इसका प्रयास (साक्षरता) मे किया गया है। मध्यकालीन भारत मे तलवार की नोक पर इतिहास लिखे और मिटाऐ जाते रहे है इस पृष्ठ भूमि मे युद्धो मे कत्ल किये जाने वाले, लडाको की खेप कहा और किस प्रकार तैयार की जाती रही है का वर्णन (रक्तरजी तलवार) मे है। मानवीय वृत्ति की सबसे कडी आलोचना मनुष्य के आलस्य, लालच,

धनलिप्सा पर केन्द्रित रही है। जो मनुष्य इनका दास बना रहेगा, वह अनिवार्यत पतनोन्मुखी होकर (पथ भ्रष्ट) होगा।

मनुष्य की मनुष्यता को, सर्वमान्यता प्रदान करते हुवे, इसे देश, काल, और स्थान से भी ऊपर का दर्जा दिलाने के लिहाज से (दर्द) मे व्याख्या की गई है। भीषणतम प्राकृतिक आपदा मे मनुष्य पशुवत होकर भी अपनी परम्परागत मान मर्यादाओ की रक्षा किस प्रकार करता चला आ रहा है, यह (छप्पनियॉ अकाल) से जाना जा सकता है। गरीबी, अशिक्षा, हारी-बीमारी से ग्रसित मनुष्य कैसे नशे के जाल मे फॅसता हुआ, अपने साथ, अपने परिवार को जिदगी के फिसलवा धरातल पर, हर क्षण-हर मोड़ पर फिसलाता हुआ, वह रसातल मे डूबता ही चला जाता है। (फिसलन) इसका दृष्टान्त है।

सत्य-असत्य परस्पर विलोम है, जो सर्वदा एक दूसरे के बिलकुल विपरीत और भिन्न है। मनुष्य की इसी सोच को, अच्छे की अच्छाई और बुरे की बुराई को (हजार पाया) मे रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। मनुष्य अपने जीवन मे, अपने दु खो, तकलीफो से इतना अधिक परेशान नही होता बल्कि उसकी तकलीफ इस बात पर केन्द्रित रहती है कि उसका भाई बधु, पडोसी, परिचित उससे अधिक सुखी क्यो है? ईर्ष्या की यह सक्रामक बीमारी पूरे विश्व मे फैली हुई है। इन्ही भावनाओ को (सबक) मे व्यक्त करने का प्रयास किया गया है।

पुत्रहीन, विधवा व बेबस नारी को भी समाज मे बक्सा नही जाता। हद तो तब हो जाती है जिसने जिदगी भर देते रहने का कार्य किया उसे जब सामाजिक मान्यताओ के तहत पुरुष वर्ग की जरूरत पडती है, तब यही पुरूष वर्ग उसके प्रति निर्मोही होकर द्रोही हो जाता है। समाजिक रिश्ते-नातो को झकझोरती पीडा को (सतमासी) मे प्रगट करने का प्रयास हुआ है। परिस्थितियो वश जहा नारी लाचार व बेसहारा है। वही यही वीर नारी, अपने असीमित धैर्य, साहस और कूटनीति के बलबुते पर, अपने पुत्र की हत्या का प्रतिशोध चमत्कारिक ढग से लेती है, और उसका (इन्तजार) समाप्त होता है।

वक्त किसी का गुलाम नही बल्कि समस्त सृष्टि ही समय के नचाऐ नाच पर नाचती है। काल अजर अमर है, जबकि ससार का प्रत्येक जीवधारी नाशवान है। समय की धारा के साथ परिवर्तित नही होकर अपरिवर्तित बने रहने वाले मनुष्यो को (चिरदर) मे उकेरा गया है।

ससार मे तीस प्रतिशत भूमि पर वन आच्छादित है। जबकि मरूस्थलीय रेतीले धोरो वाले पश्चिमी राजस्थान मे इनकी उपस्थिति नगण्य ही मानी जाती है। ऐसे क्रुरतम कठोर, अप्राकृतिक परिस्थितियो मे सदियो से यहा के निवासियो ने

अदम्य साहस व धैर्य के बल पर अपने अस्तित्व को बनाऐ रखा है। इनकी इस जीवन्त जिजीविषा का आधार, उनके खेत है, उनकी जमीन है, जिसे धरती माँ का दर्जा प्राप्त है। ईक्कीसवी सदी के प्रारम्भ मे परिवर्तित, आधुनिक युग की आवश्यकताओ के मध्य नजर, यदि इन निरक्षर, अज्ञानी किसानो को विकास और प्रगति के नाम पर इनको गाँव से बेदखल किया जाता है। तो क्या ये भूमिहीन कृषक अपना उजड़ा हुआ घरौंदा फिर से बना पायेगे? इनका पुर्नवास हो सकेगा? इन्ही से ओत प्रोत (गाँव-बदर) है।

ग्रामीण जीवन की मुसबतो से भरी, अभावो को दर्शाती (सेवरा) है। मनुष्य की अबुझ और रहस्यमयी मनोवृत्ति को प्रगट करता कथ्य (त्रासदी) है।

आज के अति आधुनिक युग मे जहा तक नजरे जाये वहा तक विकास के चरमोत्कर्ष शीर्ष के शीर्ष नजर आते है। महानगरो के आसपास के हजारो गॉवो को कक्रीट के जगलो ने निगल लिया है। परन्तु मनुष्य अपनी मनुष्यता के मौलिक गुणो-परस्पर सहयोग, आपसी विश्वास, भाईचारा, प्रेम, अपनत्व को तेजी से खोता हुआ भी जा रहा है। इन्ही को दृष्टिगत रख कर (स्वर्ग-नर्क) का कथ्य गढा गया है।

अन्त मे मै आदरणीय, प्रखर लेखक, विचारक और प्रकाशक श्री सुरेश जांगिड उदय सॉब का हृदय से आभार व्यक्त करना अपना परम और नैतिक कर्त्तव्य मानता हूँ कि इनके सुकीर्ति प्रकाशन ने मेरे जैसे नवोदय लेखक को, देश विदेश मे अपना मच प्रदान किया है।

देश की हजारो लाखो प्रतिभाऐ उचित स्थान और मच के अभाव मे दम तोड देती है। पत्थर रूपी नगीनो को कलात्मक ढग से निखारने और उनको वास्तविक मुकाम,तक पहुचाने वाला ही यर्थाथ मे श्रेय पाने का हकदार होता है। ऐसा ही कार्य सुकीर्ति प्रकाशन के द्वारा देश मे सबसे अधिक 'पुस्तक मेले आयोजित' कर, नवोदय लेखको को अधिक से अधिक पाठको तक पहुचाने का श्रेष्ठतम प्रयास किया जा रहा है। जिसके लिये इन्हे कोटि-कोटि धन्यवाद।

–शिव सिंह भाटी 'हाड़ला'
हाडला हाऊस
सी-160, करनीनगर योजना,
(लालगढ पैलैस)
बीकानेर (राज.)-334001
मो 09413725751

साक्षरता

अति वृद्ध एक किसान दीन हीन दशा मे राज्य के प्रासाद जैसे भव्य उच्च न्यायालय की सीढियो पर लाठी टेकता हुआ, हौले-हौले चढ रहा था। उसकी जर्जर काया जवाब दे रही थी परन्तु वह था अपनी धुन का पक्का जो अपनी ही धुन मे रेगता हुआ सा बढता ही चला जा रहा था।

यह वृद्ध अपने सिर पर एक गठरी का बोझ लिये, बगल मे पोटली दबाये, लाठी के सहारे से अब, उच्च न्यायालय के लम्बे गलियारो मे पहुँच चुका था।

उच्च न्यायालय की सिगल बैच मे आज प्रात के बहुचर्चित एव शिक्षा के क्षेत्र से जुडे ऐतिहासिक फैसले को सुनने को आतुर हजारो दर्शक जिसमे बुद्धिजीवी, पत्रकार, प्रशासनिक अधिकारी एव राजनैतिक प्रभुत्व वाले सभ्रात गणमान्य नागरिक न्यायालय मे अपने अस्तित्व को न्यायालय मे ही फैसला सुनाये जाने तक बनाये रखने की भरसक कोशिश कर रहे थे।

शिक्षा से जुडे इस अति महत्वपूर्ण मुकद्दमे के फैसले की उत्तेजना चरम सीमा पर थी। न्यायालय मे इतनी भीड थी कि चीटी के भी पैर रखने की गुजाइश शेष नही रह गई थी।

वृद्ध किसान, न्यायालय की चौखट पर पहुँच कर भी अपने आपको निरीह एव बेबस महसूस कर रहा था। वकीलो के एक टोले के भीड-भाड से धक्का-मुक्की करते हुवे बाहर निकलने से रिक्त हुये स्थान मे यह किसान भी अदर पहुँचने की रेल पेल मे शामिल हो गया।

भीड सागर की भाति हिलोरे लेती हुई आगे बढ रही थी। वृद्ध किसान का अस्तित्व इस परिदृश्य मे मात्र उसके सिर पर रखी गठरी से ही पहचान पाना सभव रह गया था। इस उच्च कुलीन एव सौम्य वातावरण मे उसकी गठरी दुर्गन्ध का सबब बनती जान पड रही थी।

तभी उच्चाधिकार प्राप्त कुशाग्र बुद्धि के एक प्रशासनिक अधिकारी ने इस गठरीधारी की तलाशी लेने का आदेश जारी कर दिया। इससे न्यायालय मे एक अलग ही प्रकार का भय मिश्रित, हलचल उबल पडी। आनन-फानन मे वृद्ध किसान को हिरासत मे ले लिया गया तथा प्रबुद्ध न्यायाधीश के सामने खाली पडे बहस के स्थान पर उसकी पोटली का पोस्टमार्टम किया जाने लगा।

न्यायाधीश महोदय का ध्यान भग हो चुका था। उन्होने अपने सामने पडी फैसले की फाईल से नजरे हटाई और वृद्ध किसान पर टिका दी। भीड मे हडकप मचा हुआ था तथा स्पष्ट काना-फुसियाँ सुनाई दे रही थी। 'यह कोई जरूर सिरफिरा आतकवादी है जो इस न्यायालय मे बहरूपिये का रूप धर के आया है।'

'नही नही यह अनपढ निरक्षर, जाहिल और पागल व्यक्ति है जो अवश्य ही रिश्वत देकर अपने हक मे फैसला करवाने आया होगा?'

वृद्ध किसान अचभित सा, भयभीत होकर डब डबाई आँखो से कभी भीड की ओर देखता तो कभी कपकपाता न्यायाधीश महोदय की ओर करूण, कातर भरे हृदय से निहारता नजर आ रहा था। जाहिल, निरक्षर, पागल, मूर्ख की सज्ञा से सुशोभित यह वृद्ध अपनी चिदी-चिदी हो चुकी गठरी को ताकता जा रहा था।

न्यायालय मे उपस्थित हजारो ऑखे एक साथ भय, शोक एव आत्मग्लानि से एक टक नजरो से इधर-उधर बिखरी पडी सागरिया, कैरियो, खेलरो, बाजरी के रोटी के चूरमे के रूप मे पडी 'विस्फोटक सामग्री' को निहार कर शर्म से जमीन मे गढी जा रही थी।

न्यायाधिपति अपना आसन छोड कर खडे हो चुके थे। वे विषाद व करूणा मे डूबे हौले-हौले उस वृद्ध किसान के पास पहुँच कर अत्यन्त ही भावावेश मे उसके चरण स्पर्श किये। उसे सहारा देकर उठाया। वृद्ध किसान सहारा पाकर उठ खडा हुआ और तेज, ओजस्वी आभा चेहरे पर लिये हुये गर्वीले परन्तु डगमगाते कदमो से सहारा देने वाले न्यायाधिपति के साथ धीरे-धीरे उनके चेम्बर मे समा गया।

न्यायालय मे जनसमूह का हुजूम किलबिलाते हुये पुन भयमिश्रित आशा-आशका के वातावरण मे तब्दील हो रहा था। न्यायालय मे कानाफुसियो

ा अति उत्तेजना के परिदृश्य को न्यायाधीश के पुन अपने आसन पर राजने के साथ ही टूटी।

धीर, गभीर एव निहायत ही अद्‌भुत तेजस्विता लिये हुये न्यायाधि ते का चेहरा सूर्य की भांति दमक रहा था। उन्होने तेज आवाज मे कहना रू किया-'आप सभी महानुभव जो आज शिक्षा क्षेत्र के बहुप्रतिष्ठित एव हस्ती मुकद्‌मे के फैसले को बेसब्री से सास रोक कर सुनने को बेकाबू हो हे है, मै इस मुकद्‌मे का निर्णय आगामी तारीख तक सुरक्षित रखते हुये, ाज की अदालती कार्यवाही को कल तक के लिये स्थगित करता हूँ।'

न्यायालय मे न्यायाधिपति के उद्‌बोधन से सन्नाटा और अधिक ाहरा गया। प्रबुद्ध लोगो के सिर पर उत्तेजना का भूत कल तक की प्रतीक्षा के लिये एक बार फिर आ खडा हुआ। न्यायाधिपति महोदय अपने आसन ार खडे हो चुके थे उन्होने चेम्बर की ओर मुडने से पूर्व एक नजर न्यायालय मे खडी भीड पर डाली और उससे मुखातिब होकर कहा-'हा मै एक अन्य मुकद्‌मे का निर्णय जरूर सुनाना चाहूँगा यदि आप लोगो की दिलचस्पी इस मुकद्‌मे मे हो तो?'

लगभग प्रत्येक व्यक्ति के मुँह से अनायास ही हॉ-हॉ शब्द स्वयमेव ही उच्चारित होने लगे। न्यायाधिपति ने अपने आप को सयत कर कहना प्रारम्भ किया-'अभी कुछ देर पूर्व आपके सामने जो वृद्ध किसान खडा था, उसको अनपढ, निरक्षर, जाहिल, मूर्ख, पागल और न जाने कौन-कौन सी गालियो से आप प्रबुद्ध बुद्धिजीवियो के द्वारा सुशोभित किया जा रहा था। उस वृद्ध किसान को दुत्कारने एव अपमानित कर उसे मर्मान्तिक पीडा पहुँचाने का आपको कोई अधिकार नही था।

वह वृद्ध किसान निरक्षर जरूर है परन्तु जाहिल, पागल या मूर्ख कदापि नही। यदि वह गँवार या जगली होता तो यकीनन मै भी आज इस प्रात के उच्च न्यायालय की कुर्सी पर न्याय करने के लिये बैठने लायक नही हो पाता। चेम्बर मे बैठे वो वृद्ध किसान मेरे पुजनीय पिता जी है और वो गॉव से मेरे लिये जो सौगात लाये थे वो आपके सामने बिखरी पडी है।

हॉ मेरे पिता जी के पिता जी को आप अवश्य ही मूर्ख कह सकते है जिन्होने अपने पुत्र को शिक्षा रूपी वरदान से वंचित रखा और वे एक नेक दिल, सदाचारी देश को अन्न पैदा कर खिलाने वाले उदार हृदय

किसान तक सीमित रह गये। परन्तु मेरे पिताजी ने शिक्षा का महत्व समझा, शिक्षा के ज्ञान से प्रकाश फैलता है, उन्होने जाना कि इस से कभी ना सूखने वाले झरने प्रस्फुटित होने से मनुष्य का चहुमुँखी विकास सभव है। मेरे पिताजी ने स्वय निरक्षर होते हुये भी मुझे पढा-लिखा कर इस उच्चासन तक पहुँचाया। क्या ऐसा सीधा-सादा महान सार्थक जीवन जीने वाला व्यक्ति मूर्ख हो सकता है?'

इन्ही शब्दो के साथ ही न्यायाधिपति की आँखो से अविरल आँसुओ की धाराऐ बहने लगी, उनकी आवाज भर्रा गई। भावावेश मे उनका गला अवरुद्ध हो गया और वे तेजी से अपने चेम्बर मे समा गये।

परन्तु जाते-जाते प्रबुद्ध जनसमूह के लिये ऐसा निरुत्तर प्रश्न छोड गये, जिसका उत्तर इस प्रखर बुद्धिजीवियो के पास नही था। सभी व्यक्ति परस्पर बगले झाकते अपने आप से नजरे चुरा कर शीघ्रता से न्यायालय परिसर से बाहर निकलने के लिये बेचैन हो उठे।

ააა

रक्तली तलवार

पौष माह की भयानक सर्द रात के अन्तिम पहर से पहले ही वृद्धा तेज कवर अपने झोपडे मे चारपाई के बिस्तर से सदा की तरह उठ बैठी। उसने सहेज कर गुदडी को एक ओर किया और सदे कदमो से झोपडे के बीचो-बीच अलाव के पास आकर, उसने लकडी के ठूठ से अलाव को कुरेदना शुरु किया। अलाव की तलहटी मे मद्धिम-मद्धिम आग लिए अगारे उसकी ओर ताकने लगे। तेज कवर ने पास ही पडे घास-फुस को इक्कट्ठा किया और दोनो हाथो से, इस घास-फुस को ऐठ कर एक आकार दिया और इसे कुण्डलीनुमा बनाकर, मद पडे अगारो पर रख दिया। कुछ पलो उपरान्त ही...उसका झोपडा...गहराते धुँए से भर उठा। धुआँ जब असहनीय हो गया तो तेज कवर ने एक तेज फुक मारी, जिससे अलाव एकाएक झक करके जल उठा, जिसके तेज प्रकाश से झोपडा भर उठा।

तेज कवर ने जलते हुये अलाव पर ढेर सारी सुखी लकडिया डाल दी जो अब धूँ-धूँ कर जलने लगी जिसकी आग के ताप से झोपडा गर्म हो उठा। झोपडे की आहटे पाकर, पास ही के कच्चे गारे के बने ओसारो मे भी फुसफुसाहट होने लगी। इससे लगने लगा कि तेज कवर का कुनबा, तेज सर्दी की परवाह किये बिना सदैव की भांति, भोर का स्वागत करने उठ खड़ा होने को उद्दत् है।

कुछ ही क्षणो के बाद झोपडे से सटे गारे के कच्चे ओसारो और उससे लगे, नवनिर्मित झोपडे मे से भी धर्र_धर्र_धर्र की आवाजो ने साबित कर दिया कि_तेज कवर का परिवार पूर्णतया जाग कर सक्रिय हो चुका है और जीवन रूपी प्राण बाजरे को घट्टीयो म डाल कर आटा पीसने की प्रक्रिया मे मशगुल हो चुका है। तेज कवर आश्वस्त हो चुकी थी कि उसकी तीनो विधवा बहुऐ_और पोते प्रतापसी की नव पुत्रवधू घट्टियो पर, आटा पीसने के काम मे लग गई है अत वह झोपडे से बाहर, दायी तरफ कच्चे ओसारे मे अपनी सासु के पास जा पहुँची। उसकी सासु माँ चारपाई पर बैठी अपनी पुजा की माला हाथ मे लिए_राम नाम का जाप कर रही थी। सो तेज कवर बाहर आ गई और बाखल से सटे, पशुओ के बाडे की ओर रुख किया।

बाडे मे पहुँच कर तेज कवर ने, अपनी दुधारू गायो, भैसो, बकरियो को एक-एक कर खोलना शुरु किया। जब वो अपने सभी दुधारू पशुओ को उनके खूटो से खोल चुकी तो, उन सब को कतारबद्ध कर, हॉक कर बाडे से बाहर ले आई और गॉव के बीच मे से उतराद दिशा की ओर बने कुए की ओर ले जाने का उपक्रम करने लगी। परिपाटी की तरह_गॉंव का प्रत्येक घर अब नीद त्याग कर जाग चुका था_प्रत्येक घर से दो-दो_ तीन-तीन घट्टियो की सामुहिक धर्र-धर्र-धर्र की तेज आवाजे वातावरण मे एक सुहावने सगीत की स्वर लहरियो को बिखेर रही थी।

घूघट काढे तेज कवर अपने पशुओ को तेजी से कुऐ की ओर हाँके ले जा रही थी। गॉव के मार्गो मे अपनी उपस्थिति का अहसास दिलाते _खखारते_खॉसते_बुर्जुग पुरष, मोट्यार नवयुवक बनो की ओर नित्यकर्म हेतु प्रस्थान कर रहे थे। कुऐ की आठो खेलियाँ लबालब पानी से भरी हुई थी। सो प्यासे पशु पानी पीने मे संलिप्त हो गये और तेज कवर कुऐ पर कुऐ से पानी निकालने की प्रक्रियाँ मे जुटी_दिखणाद बास की महिलाओ से बतियाने लगी। 'मुजरो ठुकराईन सा ' 'खम्माघणी अर्ज होवे सा' आदि सबोधनो से सबोधित होनी तेज कवर ने तोगाजी लुहार की वय प्राप्त जोडायन से पूछ ही लिया 'आज कुऐ जोतने की बारी तो जुझारसी के जिम्मे ही_पण_थै_आज_अठै_किया?

'हॉ ठुकराईनमा आज बारी तो जुझारजी बाजीसा री ही_पण म्हाने_

ठिकाणेदार..जोरजी...आपरै..रणसी गॉव बुलाया है...सो..।'

'हाँ..हॉ ठीक है...आज रात नै..कुऐ नै जोतणे री बारी म्हारी है..हॉ तू..डूगजी राईके नै कँवती जाई जै कै...सिन्झियाँ पडै..ऊॅटा रै..टोले.मे सूॅ..चार ऊॅट म्हारै..बाखल..मे बाध दैवे..।'

'जी जरूर..जरूर समाचार पूगा देस्यूँ सा।'

'हॉ..कह दीजै...चार सौ घरॉ री इण गाँव मे..मोट्यार..मिनख...तो रैयॉ ही..कोनी..सगला..रा सगला..ही लडाईयाँ मे..काम आ गया..अबै तो..मोटयारारी.. गिणती.. आगलियॉ... पर ही पूरी..नही होवै।'..एक ठण्डा...निस्कॉरा डालकर.. बुझेमन से...तेज कवर नै कहा।'

दुधारू पशुओ के डट कर पानी पी लेने के बाद तेज कवर ने इनकी सुध ली और इन्हे घेर कर पुन अपने घर की ओर चल पडी। पौ-फटने लगी थी धीरे-धीरे..अन्धेरा लुप्त होकर उजाले मे तब्दील हो रहा था। ऊॅचे टीबे पर बनी गढी मे से ठाकुर हणुतसी.. अपने पडपौते.. भानीसी.. जो मात्र छ सात वर्ष का ही था..अपने पडपौते को ऑखो की लाठी बनाये ..बाहर निकल रहा था। तेज कवर को यह दृश्य अत्यधिक करूणामय और दर्दनाक लगा। क्योकि उसकी शादी से कई बरस पहले..हणुतसी.. ठिकाणेदार की सेना की तरफ से अत्यन्त वीरतापूर्वक लडा परन्तु शैन्यबल की न्यूनता के कारण वह अपने साथियो सहित युद्धबदी बना लिया गया था। जब इन युद्धबदियो को मुसलमान सेनापति के सामने प्रस्तुत किया गया...तो..हणुतसी ने उस सेनापति खिज्रखॉ की तरफ भरपूर नजरो से देखा..कहते है...इससे ..खिज्रखॉ अत्यधिक कुपित हो उठा और तत्काल ही उसने फरमान जारी कर दिया कि गर्म-गर्म ताकलो से हणुतसी की ऑखे फोड दी जाए..हुक्म की तुरन्त ही तामील हुई। नतीजा आज भी तेज कवर के सामने है। मुर्दालाश बना हणुतसी आज भी जिन्दा है। तेज कवर की ऑखे डबडबा गई और गला भर आया।

तेज कदमो से वह अपने पशुओ को बाडे मे हाक कर ले आई। जहाँ उसकी तीनो विधवा बहुए गायो, भैसो, बकरियो को दुहने को तत्पर थी। दुहारी के बाद सभी मवेशियो के झुण्ड को लेकर..तेज कवर पुन गॉव के गुवाड मे आ गई। जहा पूरे गॉव के पशु-टोलो के रूप मे इकट्ठे हो रहे थे। सम्पूर्ण गॉव के पशुओ को महावारी के हिसाब से, वारी-वारी से

दस-दस घरो के आदमी सामुहिक रूप से जगल मे चराने ले जाते थे। पशुओ की सुरक्षा का उत्तरदायित्व गाँव के नायक जाति के बुर्जग व्यक्ति मोडजी जिसे गाँव का कोटवाल भी कहते है, की थी। कोटवाल को बारी मे दिये गए दस-दस घरो के मर्द-औरते महीने भर पशुओ को सुवह जगल मे ले जाते और गोधुलि को जगल से चराकर गॉव ले आते। गोधुलि मे पशु अपने-अपने यथा स्थान पहुँच जाते।

गॉव-गॉवन्तर आने जाने के साधन के रूप मे ऊँट ही प्रमुख भूमिका निभाते थे। गॉव के ऊँटो का टोला प्राय राईका प्रजाति की निगरानी मे ही रहता। राईका लोग ऊँटनियो (साडो) के ब्याहने..पर गॉव का प्रतीक चिन्ह लोहे से दाग कर..उनको वर्गीकृत करते तथा इनकी हारी-बीमारी मे ये ही इनकी अपने पुश्तैनी तरीको से इनका उपचार आदि करते। वर्षात के मौसम मे गॉव वाले हल जोतने के लिये अपने-अपने ऊँटारूओ को जुताई के काम तक अपने-अपने घर ले आते तथा जुताई कार्य पूर्ण होने पर इन्हे पुन राईको को सौप देते। राईका प्रजाति के लोग चौकन्ने होकर ऊँटो के टोलो को घ्ने बीहडो मे छुपा कर रखते ताकि शत्रु पक्ष के लोगो की नजरे इन पर नही पडे। गाँव मे जिस परिवार के पास सबसे अधिक पशु होते वह परिवार निर्विवाद रूप से उतना ही सम्पन्न, धनवान और प्रभावशाली समझा जाता था।

तेज कवर जब गायो के साथ अन्य पशुओ को गुवाड मे कोटवाल को सुर्पुद कर, जब अपने घर के बाखल मे प्रवेश हुई तो उसका एक मात्र वारिस पन्द्रह वर्षीय प्रतापसी, पत्थर की सिला पर पुश्तैनी रलतली तलवार को रगड-रगड कर उसकी धार बना रहा था। जिसे देखकर तेज कवर के कलेजे मे एक तीर सा बीध गया। वह सरपट प्रतापसी पर झपटी और तलवार छीन ली। प्रतापसी आवाक् सा देखता रह गया और रूष्ठ शब्दो मे उलाहना देकर कहने लगा-'दादी सा यह आपने क्या किया? तलवार तो राजपूत का गहना है। हमसे आपने ये गहना क्यो छीना?'

'हा वेटा प्रताप तलवार राजपूत का गहना है परन्तु ये गहने मॉके टोको पर ही पहने जाते है। असमय इन गहनो से खेलना अच्छा नही होता।'

यह कहकर वह तलवार सहित अपने कच्चे ओसारे मे घुसी और

अत्याधिक पुराने लोहे की सदुक मे तलवार को सहेज कर रख दिया।

इस रलतली तलवार की मूँठ सोने-चाँदी की नक्कासी से मडित की हुई थी। तेज कवर के घर मे यह तलवार तेरह पुश्तो से है जिसके बारे मे अनेको किवदन्तियाँ वर्तमान मे भी प्रचलित है जो वीरता और शौर्य का सचार करती है, कहा जाता है कि वीरान मरूभूमि के जागल प्रदेश मे क्षत्रिय बीकाजी जब अपना नया साम्राज्य स्थापित करने इस भूभाग मे आये थे। तब तेज कवर के पुरखे राव खेमल भी उनके साथ सिन्धु नदी को पार कर आये विधर्मी शासको के साथ निर्णायक युद्ध मे अत्यधिक वीरता से लडे थे। इस युद्ध मे विधर्मी मुसलमान सेनापति कुतुबुद्दीन ने वीर बीकाजी को चारो तरफ से घेर कर उन पर भीषण आक्रमण किया और बीकाजी को भालो, तलवारो, बर्छो से क्षत-विक्षित कर लहुलुहान कर दिया। तब राव खेमल ने अपने दो-तीन चुनिन्दो भाईयो के साथ, घमासान युद्ध किया और घेरा तोड कर बीकाजी की रक्षा की। इस भीषण और भयानक युद्ध मे कुतुबुद्दीन के तलवार के घातक वार से राव खेमल का सिर-धड से अलग हो गया परन्तु खेमल का धड तीव्रता का आवेग लिए, दोनो हाथो मे तलवारे लिये लडता ही रहा। खेमल के भाई बीकाजी को घेरे मे से निकालने मे सफल रहे और वह परम वीर खेमल बिना सिर के, धड के साथ जुझता हुआ सत्रह तुर्को को मार कर युद्ध मे मारा गया।

बीकाजी ने राव खेमल की अद्भुत वीरता और स्वामी भक्ति से प्रसन्न होकर उस क्षत्रिय, वीर पुरुप की लाश के साथ अपनी परम प्रिय 'रलतली तलवार' उसके गॉव भेजी जहा खेमल की जोडायत लाश के साथ सती होकर गाँव का नाम सदा-सदा के लिये अमर कर गई। इस रलतली तलवार के कारण तेज कवर के परिवार की तेरहवी पीढी मे आज तक कोई भी मर्द जात तीस वर्ष की उम्र से अधिक जी नही सका। इस तेरहवी पीढी मे तेजकवर अपने तीन युवा पुत्रो को युद्धो मे झौक चुकी है। घर मे उस समेत पॉच-पॉच विधवाऐ अपने जीवन के शेप दिन बीता रही है।

तेज कवर जब ओसारे से बाहर आई, तब तक उसके घर की बाखल मे गॉव का कारीगरजी अपने साजो-सामान के साथ आ चुका था। कारीगरजी के द्वारा चडस की खिल्ली और ऊँटो के पलाणो की मरम्मत की जानी थी क्योकि तेज कवर की अगुवाई मे आज से अगले सात दिनो तक

गॉव के निवासियो और मवेशियो को कुऐ से पानी खीचकर, पानी पिलाने का जिम्मा उस पर था।

प्रतापसी के द्वारा ऊँटो के पलाण व खिल्लियो हेतु खेजडी की लकडी कारीगर जी को उपलब्ध करवा दी गई। कारीगर अपने काम मे व्यस्त हो चुका था। दोपहर ढल रही थी। तेजकवर के आग्रह पर कारीगर जी *अपना काम छोडकर भोजन करने बैठ गये। बाजरी की रोटी (सोगरा)* सागरियो का साग, दही, छाछ, राबडी आदि का भोजन करके कारीगर जी पुन अपने शेष रहे काम को पूर्ण करने मे जुट गये। तभी प्रतापसी अपनी खाट लेकर वहा आ गया और उसकी लम्बाई बढवाने की जिद्द करने लगा।

दादी तेजकवर और कारीगर जी उसे हैरत से ताकते रह गये। कारीगर जी ने कहा-'बेटा प्रतापसी हमारे पूर्वजो ने जान बूझकर ही खाट की लम्बाई चार फुट की रखी है। इससे लम्बी खाट पर सोना क्षत्रिय धर्म नही है क्योंकि आज के इस जमाने मे हमारे गॉव पर कब कहाँ से आक्रमण हो जाए कहा नही जा सकता। लम्बी खाट पर आराम से सोये वीर क्षत्रिय को दुश्मन सभलने का मौका दिये बिना ही, उसको मार-काट सकते है। इसलिए ही हमारे बुर्जुगो ने इस चार फुट की खाट का उपयोग किया है ताकि सोते समय हमारे पैर जमीन पर ही रहे। दुश्मन यदि हमे खाट पर बाध भी दे तो भी हम खाट के साथ जमीन पर खडे होकर हमलावर का मुकाबला कर सकते है। इस प्रकार का कठोर जीवन जीकर ही हम जिन्दा रह सकते है।'

'हॉ बेटा प्रतापसी कारीगर जी ठीक कह रहे है। तुम्हे मै बचपन से बताती आ रही हूँ कि ये चार फुट की खाट रात मे सोते हुवे पर भी यदि आक्रमण हो तो उससे बचाव करती हैं। तुम्हे मै यह भी समझाने की कोशिश करती आ रही हूँ कि हमारे घरो झोपडो औसारो आदि की ऊँचाई सात फुट से अधिक इसलिए नही रखी जाती क्योंकि आज के युग मे युद्ध के हथियार तलवार, भाले, बर्छे आदि है। भालो व बर्छो की लम्बाई छ फुट तो तलवार की लम्बाई तीन फुट होती है अत यदि शत्रु अचानक रात मे घरो के अन्दर घुस भी जाये तो घरो की छतो की ऊँचाई कम होने की वजह से भालो, तलवारो, बर्छो से वह हम पर वार नही कर सकते और हम उनसे भिड कर अपनी आत्मरक्षा करने मे सक्षम हो जाते है।' दादी तेजकवर और कारीगर

जी की बात शायद प्रतापसी की समझ मे आ चुकी थी। अत वह बिना कुछ कहे, आश्वस्त सा होकर बाखल से बाहर गॉव मे चला गया।

कारीगर जी अपने कार्य से निवृत होकर अपने घर चले गये। दोपहर ढल चुकी थी। तेजकवर अपने कुनबे के साथ पशुओ के लिये चारे-दाने की व्यवस्था मे व्यस्त हो गई। प्रतापसी की नववधु ओखली मे मोठ बाजरे को कूटकर शाम को खीचडा बनाने मे कार्यरत हो गई।

गोधुलि के काल मे सहसा सम्पूर्ण गॉव ही गायो के रम्भाने, भेडो-बकरियो की चिल्ला-पौ, ऊँटो बैलो के कोलाहल से भर गया। चहु दिशा से गॉव की ओर लौटते पशुओ के झुण्डो के आगमन से सारा गॉव कई-कई मीलो तक धूल के गुब्बारो व रेत की गर्द से अट गया। ऐसा लगता है जैसे दुश्मनो के हजारो घुडसवारो के दस्ते, हाथी, घोडो और पैदल सैनिको की पदचापो से गुजायमान हो रहा हो। शाम के धुँधलके मे गॉव का प्रत्येक प्राणी अपने-अपने कार्यो मे मुस्तैदी से जुटा हुआ था। प्रत्येक घर जैसे उत्साह से उत्सव मे सम्मलित हो गया हो। गायो, भैसो की दुहारी, ऊँटो, बैलो की चरवाही, बछडे-बछडियो का भूँख से बिलबिलाना। गृहणिया रसोई मे अपने सध्या कार्यो मे तल्लीन थी तो वय प्राप्त प्रौढाए खाद्य तेल से घर के मुख्य-मुख्य स्थानो को दीयो से रोशन करने मे व्यस्त थी अत्यधिक वृद्धाएँ व वृद्ध अपनी शाम की पूजा के कार्य मे लगे हुये थे। दो-तीन घडी का यह अति व्यस्त समय अब धीरे-धीरे सर्दी की गर्दिश मे समा रहा था। रात के गहराने के साथ-साथ गाँव के घरो की गतिविधियॉ अब शनै -शनै शिथिल पडने लगी और निन्द्रा अपने डैने फैलाकर अपना साम्राज्य फैलाने लगी थी।

तेजकवर का परिवार भी खा-पीकर निवृत्त हो चुका था। डुँगजी राईका चार ऊँट, तेजकवर के बाखल मे बाँध गया था। कारीगर जी ऊँटो के पलाण, खिल्लियाँ तैयार कर गया था। पहर भर रात बीतने के साथ ही तेजकवर के नेतृत्व मे मोटयार पुरषो की कमी को गॉव की बहुसख्यक नारियो को, पुरष प्रधान कार्यो को सपादित करने का बीडा उठाने को उद्यत होना था। युध्द, युद्ध और सिर्फ युद्धो की विभीषिकाओ के चलते वीर नारी तेजकवर ने कुए से पानी खीच कर गाव को पिलाने के कार्य को अपना पुनीत कर्तव्य समझा और वह इस कार्य को पूर्ण करने चल पडी।

सम्पूर्ण रात को हाड तोड मेहनत करके, सम्पूर्ण गॉव के मवेशियो और ग्राम वासियो के पीने का पानी का प्रबन्ध 'कुऑ-जोतकर' मुँह अन्धेरे जब वह अपने घर पहुँची तो वह थककर चूर हो चुकी थी। वह निढाल होकर अपनी चारपाई पर जा पसरी, जिसे निन्द्रादेवी ने तत्काल ही अपने आगोश मे ले लिया।

दिन निकलने के साथ ही जैसे-जैसे सूर्य अपनी आकृति मे बढोतरी करता चला गया वैसे-वैसे ही सारा गॉव सूर्य के प्रकाश और धूप से भर उठा। तेजकवर के कानो मे ढोल नगाडो की आवाज के साथ सुगनोजी नाई की मद्धिम-मद्धिम आवाजे पड रही थी। गाँव की गुवाड मे तैडो है सा महाराजधिराज रायसिघ जी रा प्रमुख सेनापति वीरवर रावल बरसलजी पधारियॉ है सा फौज री भरती है सा वैगा-बैगा गवाड मे पहुचो सा। धीरे-धीरे नजदीक आती स्पष्ट आवाजो से तेजकवर हडबडा कर उठ बेठी। कुछ पलो के लिए वह धमक कर निष्चेष्ठ भाव से बैठी रही परन्तु महाराजा साहब के 'तैडे' का अर्थ वह सुस्पष्ट ढग से जानती थी सो वह यन्त्रवत खडी हो गई।

राजधर्म और राज्याज्ञा से तेजकवर भली-भाति वाकिफ और परिचित थी और अब उसे क्या करना है। यह भी तेजकवर से छिपा हुआ नही था। सो उसने यकायक बदलते परिवेश के घटनाक्रम से कैसे सामना करना है, पर विचार करती हुई तेजकवर ने उदिग्नता से अपनी विधवा बहुओ और पौत्रवधू को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये और तेज गति से घर के बाखल से बाहर आकर गॉव के गुवाड की ओर बढ चली।

गाँव मे चार वर्ष बाद हो रहे महाराजधिराज के प्रमुख सिपाहसिलार के आगमन से जहाँ सम्पूर्ण गॉव के मोटयार उमग और उल्लास से लबरेज थे। तो गॉव की औरते भी 'मडती हाटा मौता री मरुधर रै मैदान' से कम प्रफुल्लित नही थी। सारा का सारा गॉव ही, अदृश्यशक्ति के खिचाव से वशीभूत होकर गॉव के गवाड मे जमा हो रहा था। गॉव के हर घर से, हर गली से, हर नुक्कड से गॉंव वासियो का जन सैलाब गवाड की तरफ उमड रहा था। इस विशाल जन समुदाय मे गाँव के वृद्ध, अपग, नौजवानो और किशोरो की सख्या नगण्य ही थी। परन्तु बहु सख्यक के रूप मे गॉव की विधवाओ की सख्या अत्याधिक थी।

तेजकवर जब गाँव के गवाड मे पहुँची तब तक गाँव के गवाड के बीचो-बीच ऊँचे पण्डाल पर सिहासन रख कर उस पर महाराजा रायसिघ जी के प्रमुख सेनापति रावल बरसल विराजमान हो चुके थे। पण्डाल के पास ही जुझारजी, डुगजी राईका, ठाकुर हणुतसी, मोडजी कोटवाल, कारीगर जी, ठाकुरजी के मंदिर के पुजारी मगनजी साध, किसनो जी जाट, सुगनो जी नाई आदि मौजिज व्यक्ति परस्पर सलाह-मशवरा कर रहे थे। और रावल बरसल का कारिन्दा इनके बताए गये नामो की फेहरिस्त बनाने मे मशगुल था।

दो घडी दिन चढते-चढते समस्त गाँव गवाड मे जमा हो गया था। खचाखच भरे गवाड मे तिल रखने की भी जगह शेष नही थी। गाँव के मौजिज व्यक्तियो के द्वारा फौज मे भर्ती हो सकने की फर्द को कारिन्दे वीरभान ने अंतिम रूप दिया और फर्द जुझारजी के हाथो सुर्पद कर दी। जुझारजी, जिनकी दोनो टागे युद्ध मे पजो तक कट चुकी थी, सिर पर तलवार के भीषण, प्रहार से जिनकी बॉयी आँख व कान जबडे से उखड कर अलग हो चुके थे। वे अपना वीभत्स, भयानक रूप लिए, बैसाखीयो के सहारे प्रमुख सिपहासिलार रावल बरसल के पास पहुँचे और फौज मे, गाँव के भर्ती योग्य रणबाकुँरो की फेहरिस्त उनको सौप दी।

रावल बरसल ने फर्द पर गौर फरमाना प्रारम्भ किया ही था कि तभी तेजकवर ने पण्डाल के पास खडे सुगनोजी नाई को इशारे से अपने पास बुलवाया और उनके कान मे फुसफुसा कर कुछ कहा। सुगनोजी तत्परता से पुन पण्डाल के पास पहुँचा और उस पर चढकर रावल बरसल के पास जाकर अदब से कुछ अर्ज करने का उपक्रम किया। रावल बरसल ने तेजकवर की ओर देखा ओर उसे सबोधित करने की इजाजत दी।

घुघट काढे तेजकवर ने धीमे परन्तु दबग आवाज मे कहना शुरू किया-'मेरे कबीले मे राव खेमल से लेकर आज चौहदवी पीढी तक, किसी भी मर्द जात पुरुष ने तीस वर्ष से अधिक उम प्राप्त नही की है। ये सभी वेर, बॉकुरे, अपनी जननी धरती माँ की रक्षा के लिये युद्धो मे वीर गति को प्राप्त हो गये। मेरे सम्मेत, मेरे कुटुम्ब मे आज पॉच-पांच विधवा स्त्रियॉ है। ये कहानी मेरे एक घर की नहीं है बल्कि इस सारे गॉव की है। इस गाँव ने सदियों से जन्म भूमि मरुधरा की रक्षार्थ अपना स्र्वस्व बलिदान कर,

विधर्मियो से अपनी मातृ-भूमि की रक्षा की है। इस गाँव की प्रत्येक जननी को गर्व है कि उसने राजपूताने की मरुभूमि की गौरवशाली परम्परा-

जननी जणै तो दोय जण, कै दाता कै सूर।
नीतर रहजै बाझडी, मनी गमाजे नूर।।

को आज भी कायम रखा हुआ है। हम सब गाँव वासियो की आपसे इतनी अरदास है कि इस गाँव के बलिदान और शौर्य की चमक फीकी ना पडे, इसलिए आप रणक्षेत्र मे फहराये जाने वाले राजशाही ध्वज मे, हमारे गाँव के प्रतीक चिन्ह रलतली तलवार को अधिष्ठातित करवाये, ताकि युद्ध भूमि मे लहराते ध्वज मे अपने गाँव के प्रतीक चिन्ह को देखकर इस गाँव के वीर पुरुष चौगुने जोश से शत्रुओ का सहार कर सके।' यह कहते-कहते तेजकवर की आँखे भावावेश मे तर बतर हो गई।

सम्पूर्ण गवाड मे हर्षोन्माद के साथ ठकुराईन तेजकवर के नाम के जयघोष होने लगे। गवाड के वातावरण मे अद्भुत शौर्य और वीरता का सचरण लिए गुजायमान होने लगा-

'कटै परै उठै लरै, मरै बिना नही रहै।
परे करी तुरवार है, लरै मरै जुझार है।।

OOO

पथ-भ्रष्ट

शैतानियत की सल्तनत पर विराजमान शैतानो के आका के भरे दरबार से उसे अन्तिम कडी चेतावनी भरी धमकी मिली थी

-'अरे! ओ शैतानियत के फन मे माहिर कुशाग्र बुद्धि के धनी शैतानापति अब्दु करीम बेग! तू शैतानो का सरताज है। एक वर्ष से तेरे तरकश के तीर शिकारी को नेस्तनाबूद करने मे असफल हो रहे है? ये क्या माजरा है कि तू अपनी कारस्तानियो से, सफलता को तडफ रहा है? और मुझे बारम्बार शर्मिदा करने पर तुला है? मै तुझे आखिरी बार चेता कर ताकीद करता हूँ कि या तो एक सप्ताह के भीतर-भीतर उस नालायक नरक के कीडे मृत्युलोकवासी सत्यवादी की अक्ल टिकाने लगा वर्ना तुझे ऐसी सजा दूगा कि सारे कायनात मे शैतानो की रूह फना होकर काप उठेगी। जा चला जा मेरी नजरो से दूर, ओझल हो जा। याद रहे नियत अवधि की समाप्ती पर मै स्वय उपस्थित होकर तेरी कारगुजारियो का हालात ऐ हाजरा देखुगा।'

शैतानो का सेनापति अब्दु करीम बेग हक्का बक्का, अनमना सा, भय से भयभीत होकर पृथ्वी लोक के राजपूताना प्रात के रणसी गॉव रात्रि के गहरे अधेरे मे आ धमका। जहा उसका घोर प्रतिद्वन्दी सनातनी धर्म का उपासक सदाचारी और न्यायमूर्ति का साक्षात् अवतार लिये जमीदार ठाकुर सत्यवादी निवास करता है। जिसे शैतानी जगत मे शैतानो का सबसे बडा शत्रु करार दिया गया है। यह सत्यवादी ठाकुर शैतान बिरादरी के लाख प्रयास करने के उपरान्त भी अपने सत्यवादी, सदाचारी, सनातनी धर्म के आचरण से एक पग भी अब तक नही डिगा था।

रणसी गॉव की सात्विक एव मुग्ध परिवेश मे शैतान अब्दु करीम बेग की आत्मा बेचैन होकर किल-बिला उठी। ऐसे धार्मिक, सनातनी वातावरण मे उसका शैतानियत भरा अस्तित्व चीघाडे मार कर रोने को हुआ। कट्टर दुश्मन सत्यवादी को हर हालत मे पराजित करना ही होगा' इसके लिए वह भिन्न-भिन्न तरह की साजिशे भरी चाले सोचने लगा। सोचते-सोचते अब्दु करीम बेग अचानक हडबडा कर जोश से भर उठा।

अब्दु करीम बेग ने निर्णय लिया कि मानव जाति की सबसे बडी कमजोरी भूख है। अत इस मानवीय भूख पर प्रहार कर उसने अपने

ब्रह्मास्त्र का वार करने की ठानी। जिसके लिये उसने सप्ताहान्त का अन्तिम दिन चुना।

सहयोगी, सहृदय, सत्यवादी अपने अटल और दृढनिश्चय के साथ उस दिन भी हमेशा की तरह चाक-चौबद होकर अपने, श्रम रूपी सत्यकर्म मे तल्लीनता से जुटा हुआ, अपने ऊँट से हल जोड कर अपने खेत मे बिजाई कर रहा था। दोपहर की स्वर्णिम आभा मे उसकी देह से श्रम बन पसीने की बूंदे दमकते हीरे जैसे लग रहे थे।

इधर खेत के चप्पे-चप्पे पर सैकडो शैतानो की बिरादरी खेजडी के पेडो, बुजो, बाठो, टीबो, धोरो, खेत की मेडो पर अपना-अपना आसन जमाए बैठे थे। हर क्षण के हालात पर गिद्ध की दृष्टि गडाये शैतानियत की परम शक्ति, उनके आका पल-पल की स्थिति की स्वय खबर ले रहे थे।

शारीरिक श्रम से चूर हुये भूमि पुत्र सत्यवादी ने दोपहर का कलेवा करने की गर्ज से एव जेठ की भीषण अग्नि वर्षा से, अपने ऊँट को कुछ अन्तराल का विश्राम देने की नीयत से, हल जोलने का काम बद कर दिया। ऊँट को हल से अलग कर, उसकी मोहरी पकड घनी खेजडी के वृक्ष की छाव के नीचे बाधा। स्वय ने झोपडी की ओर प्रस्थान किया। सत्यवादी ने झोपडी मे रखी कोरी मटकी मे से ढेर सारा ठडा पानी तसले मे निकाला और उससे अपने हाथ पैर धोये। शीतल जल के छीटे मुँह पर मारे और वह कलेवे की ओर मुडा।

अब्दु करीम बेग के शैतानी भरे कारनामो का क्षण आ पहुँचा था। शैतानो की जमात सास रोके टकटकी बाधे बेग की कारगुजारियो को देख रही थी। सत्यवादी ने जैसे ही अपने खाने की पोटली की ओर हाथ बढाया वैसे ही अब्दु करीम ने झपट्टा मार कर उसके कलेवे की रोटियो पर हाथ साफ कर दिया। शैतानो की हजारो आँखे एक साथ सत्यवादी की प्रतिक्रिया देखने को बेचैन हो उठी।

पोटली मे रोटियाँ ना पाकर पेट मे भूख से किलबिलाती आतो की आन्त्रनाद को सन्तोपी जीव सत्यवादी ने एक दो पल मे ही सयत कर लिया। अगले ही क्षण सत्य का साथी सन्तोपी भाव उसके चेहरे पर आकर विराजमान हो गया। सत्यवादी ने कुछ क्षणो बाद घडे के शीतल जल से पुन तसला भरा और गटक कर सारा पानी उदरअस्थ कर लिया। फिर लम्बी

डकार लेकर पेट की क्षुदा को भगाने का सफल प्रयास किया।

सत्यवादी के साहसिक सन्तोष को साथ रखने की प्रवृत्ति से शैतान सेनापति अब्दु करीम बेग एक बार फिर ठगा सा रह गया और आकाऐ शैतानियत के अगले फरमान की प्रतीक्षा करने लगा। जब सत्यवादी कुछ देर आराम कर पुन हल जोतने अपनी झोपडी मे से वाहर निकला तब सव शैतान, सत्य की करारी चोट से बिलबिला उठे। अपनी कडी पराजय पर शर्मिदा होते हुये कठोर दण्ड देने को उद्दत हुवे।

शैतानो के आका ने, गुस्से और खीज से भन्नाते हुये अपना अगला फरमाना फेका-'ऐ! शैतानी सेनापति अब्दु करीम बेग तेरी पराजय के दण्ड स्वरूप तुझे आज और अभी से ही शैतानो की बिरादरी से बर्खास्त किया, जाकर जाल विरादरी से वेदखल किया जाता है। तुझे हुक्म दिया जाता है कि तू इसी जमी पर, इसी गॉव मे नरक के कीडे इसान का रूप धारण करता हुआ जब तक सडता रहेगा जब तक कि तू इस सत्य के नायक सदाचारी, सत्यवादी को इसके पथ से भ्रष्ट नही कर देगा। जिस दिन तू इस सत्य के पुजारी को सत्य से डिगा कर शैतानो की बिरादरी मे सम्मलित कर लेगा उस दिन हम सब तुझे पुन शैतानो की बिरादरी मे सम्मलित करने सगर्व वापस आयेगे तथास्तु।' इस प्रकरण का पटाक्षेप शैतान सेनापति अब्दु करीम बेग के मनुष्य जीवन मे दुर्जन नामकरण के साथ अवतरित होने के साथ ही हुआ।

मुसीबतो का मारा, हाथी की सी आकृति लिये, अकूत शारीरिक श्रम की कुव्वत लिये दुर्जन को रणसी गाँव मे काम के लिये ज्यादा भटकना नही पडा। दयालु ओर सहृदय ठाकुर सत्यवादी ने उसकी सुनाई भूखमरी की कथा पर सहज की विश्वास कर उसे तुरन्त ही अपनी हवेली मे आश्रय दे दिया।

मृदु एव अल्प भाषी दुर्जन सदा काम की पूजा करने वाला, कर्मवीर सा दौड दौड कर कार्यो को अजाम देने लगा। दुर्जन की शैतानी वुद्धि पृथ्वी लोक पर आ कर ओर अधिक नीक्ष्ण और कुशाग्र हो उठी। मृत्युलोक के अल्प प्रवास मे उसने पाया की-'यहॉ के मनुष्य मे सत्यता का वास उसके द्वारा किये जाने वाले कर्मो के कारण ही होता है। यहॉ श्रमजीवी बनकर इसान देवता के देवत्व का अश प्राप्त कर लेता है। अत

उसे देवत्व की ओर बढने तथा शैतानियत की ओर धकेलने के लिये सद् पुरुष इसान के कर्म की धार को कुंठित और भोथरी करना अनिवार्य है। ऐसा इसान जो अपने सत्कर्म से विमुख होता है। तब उसकी सत्यवादिता की धार धीरे-धीरे कुंद्धित हो जाती है। सत्य पर आलस गहराने से मनुष्य शनै शनै अपनी सदाचारी राह से भटकने को विवश हो उठता है।'

पहले सोपान की सफलता पाने को आतुर दुर्जन ने इसे सिद्ध मत्र बना कर गाठ बाध ली। दुर्जन अब सत्यवादी ठाकुर की हवेली मे गायो, भैसो, ऊँटो, घोडो, भेडो, बकरियो का, अपनी कार्य क्षमता के बल पर, केन्द्र बिन्दु बन गया। सवेरे मुँह अधेरे उठकर रात को दो-दो घडी रात बीतने तक वह श्रम के सागर मे डूबा रहता। गायो, भैसो को दुहना, ऊँटनियो, घोडियो के ब्याहने की प्रक्रिया को सभालना, घोडो की मालिश-वर्जिश करना इन सब कार्यो के कारण धीरे-धीरे सत्यवादी ठाकुर दुर्जन पर आश्रित हो गया।

अपनी पहली सफलता पर मन ही मन पुलकित दुर्जन ने शारीरिक श्रम के महत्व को गहनता से परखा और उसकी शैतानियत भरी रूह ने इसे पैनापन दिया। अब वह पशुओ के अस्तबल से देर रात को मुक्त होकर सत्यवादी ठाकुर के उसी खेत मे पहुँचता जहाँ उसने मुँह की खाई थी। इसी खेत मे दुर्जन कस्सी, फावडे और कुदाल से कई गजो के घेरे मे सुर्योदय होने तक कुआँ खोदने मे व्यस्त रहने लगा। दुर्जन के अकूत शैतानी शारीरिक बल की बदौलत कुछेक माह मे जब सत्यवादी ठाकुर के खेत के कुऐ मे पानी छल छलाया, तो सारा गॉव दुर्जन के दुस्साहसिक परिश्रम से अभिभूत होकर सुखद आश्चर्य से भर उठा।

चार-पॉच वर्षो मे एक बार बारानी खेतो से अनाज की पैदावार से सत्यवादी का गाँव ही नही बल्कि सैकडो कोसो का क्षेत्र शापित था। पश्चिमी राजस्थान के इस गाँव पर इन्द्र देव की कुदृष्टि के कारण अकाल की गहरी छाया निरन्तर ही मडराती रहती थी। जब सत्यवादी को नये खुदे कुऐ के बारे सूचना मिली तो उसकी बाछे खिल उठी। उसने आनन-फानन मे कुऐ मे टयूबवैल के पाईप बैठाये। इसका विद्युतीकरण करवाया और जब भूतल की अथाह जलधारा बरसो से प्यासी धरती पर गिरी तो सारा गाँव उल्लासमय खुशियो से झूम उठा।

भूगर्भ की अथाह जलधारा से जब सत्यवादी का खेत लहलाती फसलो से झूमने लगा तो उसकी खुशी का पारावार ही नही रहा। हर्ष से वह बल्लियो उछलाने लगा। सत्यवादी ठाकुर को काम से पदच्यूत कर आलस्य मे घेर कर और लालच के भवॅरजाल मे फसता देख शैतान सेनापति अब्दु करीम बेग रूपी दुर्जन मन ही मन कुटिल हसी हसता हुआ फुला नहीं समा रहा था।

वर्ष भर लहलहाते खेतो के धन धान्य से जब सत्यवादी के सारे गोदाम, कोठरिया, आदि लबालब भर उठे फिर भी शेष बचे धन-धान्य को रखने का ठौर नही पाकर सत्यवादी विचलित होकर सोचने को मजबूर हो गया।

चाल दर चाल अपनी सफलता मे झुमता हुआ दुर्जन अपनी शैतानियत बुद्धि को सान दर सान पैनी करता चला जा रहा था। सोच मे डूबे सत्यवादी ठाकुर के अर्न्तमन का हाल समझ बुझ कर दुर्जन ने उसे लालच के गर्त्त मे गिराने के उद्देश्य से मशवरा दिया-'मान्यवर ठाकुर साहब! इतना अनाज तो आपकी कई पुश्तो के भी खाये नही खाया जा सकेगा तो क्यो नही इस अपार ढेरो के अनाज को सडाकर इससे मदिरा उत्पन्न कर ली जाये। इस मदिरा को बेचकर ढेरो धन कमाया जा सकता है?'

सत्यवादी ठाकुर की बुद्धि पर पहले ही से कुबुद्धि ने डेरा जमाना शुरु कर दिया था। उसके कर्महीन होने से उसमे आलस्य पैदा हुआ और टयूववैल ने उसके लालची मन को घेर कर वश मे कर लिया था। दुर्जन की इस शैतानी, लम्पट चाल मे वह तुरन्त आ गया और उसने विना सोचे-विचारे अपनी हामी भर दी।

देखते ही देखते गॉव के कई कोसो की परिधि मे अनाज को सडा सडा कर शराब की भट्टियो पर चढाया जाने लगा। दिन रात धूँ धूँ करके जलती शराब की भट्टियो से शराब के ढोल के ढोल भर जाने लगे। धर्म भीरू, सनातनी, सत्यवादी के गॉव मे अव दिन ढलते ही देवान्यो, मन्दिरो मे पूजा-अर्चना चौपट होने लगी। गॉव के शान्त और सौम्य वातावरण मे घी-धूप की सुगन्ध के स्थान पर तेजी से अपने पॉव पसार कर शराब की विषैली दुर्गन्ध महकने लगी। दमघोटू, असहनीय विषाक्त परिदृश्य को देख

देखकर दुर्जन आत्मविश्वास मे भर कर आत्म गौरान्वित होकर नाच उठा।

सत्यवादी ठाकुर अब सन्तोषी ना रहकर असयमी बन चुका था। उसकी सहिष्णुता पर अब असहिष्णुता का कब्जा था। उसके लालच की महत्वाकाक्षा पराकाष्ठा को पार कर गई। धन, वैभव, स्वार्थ लिप्सा से वह अधा हो चला। उसने अपनी पुत्री की शादी रियासत के राजा के पुत्र से करने की ठानी। चालाक दुर्जन ने उसके फैसले को हवा दी 'साहब जी! आप क्या राजा महाराजाओ से कम है? हजारो एकड भूमि के आप स्वामी है। अवसर हाथ से मत जाने दीजिये हजूरे आला!'

इधर सत्यवादी ने अपनी पुत्री की शादी की तैयारी का ढिढौरा पिटवा कर मुनादी करवा दी कि सब गॉववासी उसकी पुत्री की शादी मे सहयोग देवे। उधर दुर्जन ने अपने शैतानी आका को न्यौता दिया कि सत्यवादी ठाकुर का सम्पूर्ण पतन सन्निकट है। अत शैतान लोक से वह दल बल सहित शादी के अवसर पर अवश्य ही पधारे।

शादी की तारीक के दिन हाथी पर सवार होकर दुल्हे ने बिनौली निकाली। राज परिवार के लोग तलवारे, ढाले, बन्दुके, दोनालियॉ लेकर बाराती बने। दुर्जन ने तुरप के अन्तिम पत्ते के रूप मे अपना ब्रह्मास्त्र आजमाने के प्रयास मे सत्यवादी ठाकुर के कान मे फुसफुसाया 'हजुरे वाला! दिले-दिलदार, सत्यवादी महाराज आज शादी की उल्लास का दिन है। गोदामो मे भरी, जमीनो मे धॅसी शराब का उपयोग यदि आज नही होगा तो कब किया जायेगा? शहशाह ऐ कयानात! शादी की खुशी को दुगना करने के लिये दिल खोलकर, शराब को पानी की तरह बहने दीजिये। इसी मे आपकी आन बान और शान है।'

आमोद-प्रमोद मे आकठ डूबा सत्यवादी ठाकुर सत्य की राह से पूर्णतया भटक चुका था। उसकी आँखो पर अहकार का मोटा पर्दा पड गया था। सो उसने ढिढौरा पिटवा कर पुन मुनादी करवाई कि 'समस्त गॉव छक कर शराब पिये, बारातियो को जी खोल शराब पिलाकर उनका अभूतपूर्ण स्वागत करे।'

शैतानी आका अपने दल बल सहित सासे थाम कर मौके की नजाकत को भाप रहा था। उसने देखा कि सम्पूर्ण गाव मे जगह-जगह पियक्कडो की टोलियॉ ढेरो शराब गटकने के बाद उजण्ड और उदण्ड हो रही

है। स्वय सत्यवादी ठाकुर, उसका कटुम्ब कबीला शराब के नशे मे मद मस्त होकर अपना होश गवा रहे है। सारा गॉव अराजकता मे डूबा छोटी छोटी वातो पर लड झगड कर लाठी छुरा निकाल रहा है।

गाँव का सारा माहौल मार काट और हिसा मे तब्दील हो चुका है। जिस हाथी पर दुल्हे राजा सवार था। उसे छक कर शराब पिलाई जा चुकी थी। दुर्जन की इस कारगुजारी से वह हाथी तोरण मारते वक्त भडक उठा और चिघाड कर दुल्हे राजा को अपनी पीठ के छज्जे से फेक दिया। उसके जमीन पर औधे मुँह गिरते ही गॉव मे एक नया कोहराम मच गया। लाठी भाला जग के साथ तलवारे म्यानो से बाहर निकल आई। बन्दूके गर्ज उठी। सारा गॉव लूट पाट और युद्ध क्षेत्र मे तब्दील होकर रक्त के लाल फव्वारो से नहा उठा।

ऐसा क्रूर, घिनौना, हिसात्मक नजारा देख शैतानो के आका ने अपने सेनापति अब्दु करीम बेग उर्फ दुर्जन को अपने पास बुलवाया। समस्त शैतान गणो के दिल बाग-बाग हो उठे। चारो तरफ दुर्जन की जय जयकार आकाश को चूमने लगी।

शैतान के आका ने सत्यवादी ठाकुर मे इसानियत को मार कर उसमे शैतानियत भरने के लिये दुर्जन को ढेरो बधाईयाँ दी और उससे पूछा-'दुर्जन मेरे अजीज! सिपहासिलार!! तुमने ऐसा कैसे कर दिया मित्र! सत्यवादी तो हम सब शैतानो का जानी दुश्मन हुआ करता था?'

'मेरे सरताज, तख्तेजिगर, हजुरे वाला, मेरे मुरीद आका मैंने धरती के मृत्यु लोक के प्रवास मे जाना कि हमारी कौम की सबसे प्रबलतम शत्रु इसानो की मानवीय सदवृत्ति, उसका सन्तोषी जीवी होना है। श्रम साधना मे लिप्त श्रम जीवी, सन्तोषी जीव, निरपेक्ष, तटस्थ रह कर अपने कर्म मे सदा लीन रहता है। जिससे उसके कर्म मे सत्य का वास आ जाता है। सत्य का वास इसान को देवत्व का गुण प्रदान करता है। जिससे वह हमारी कौम के लिये अत्यधिक घातक हो उठता है।'

अत सर्वप्रथम मैंने सत्यवादी ठाकुर को उसके श्रम से विमुख किया। इससे उसमे उसकी सन्तोषी वृत्ति कम हुई और उसमे आलस्य का प्रदुर्भाव उत्पन्न हुआ। आलस्य से मनुष्य कामचोर होकर लालच की ओर उन्मुख होता है। अत मैंने सत्यवादी ठाकुर को कामचोर बनाया। टप-टैल

स्थापित करवा कर मैने उसकी लालची प्रवृत्ति को उभाडा। इसान मे जब लालच जाग उठता है तो वह अधिकार और धन लिप्सा की ओर अग्रसर होता है। इस वृत्ति को उकसाने के लिये मैने उसे धनवान बनाया। उसकी बुद्धि हरने के लिये मैने उसे शराब की भट्टियाँ लगाने को उकसाया सत्यवादी ठाकुर अब पतन की और उन्मुख था। सो उसने धन के लालच मे शराब की भट्टियाँ लगवाई। लालच, पद प्रतिष्ठा की माग करता है अत उसने अपनी पुत्री की शादी राज परिवार मे करने की योजना बनाई। इसान की बुद्धि भ्रष्ट करने के लिये नशा अनिवार्य तत्व है। सो मैने शराब को अपना अन्तिम हथियार बनाया। जिसका नतीजा आप सबके सामने है और वह सत्य से पदच्युत होकर शैतानियत की दौड मे सम्मलित हो गया है।'

'शाबास! शाबास!! मेरे जाबाज लख्ते जिगर! जवाँ मर्द! शेर दिल!! मुझे तुझ पर और तेरी शैतानियत भरी कुटिल बुद्धिमता पर फक्र है। आज से मै तुम्हे प्रधान सेनापति की पदवी अत्ता करता हूँ। वाह रे! मेरे लख्ते जिगर!! तू इसी तरह इस मृत्यु लोक धरती पर मानवता को उसकी डगर, सत्यवादिता से पथ-भ्रष्ट करता रहे यही मेरी जुस्तजु है।'

यह कह कर शैतानी आका ने अब्दु करीम बेग उर्फ दुर्जन को अपनी छाती से लगाकर गर्म जोशी से भीच लिया।

OOO

दर्द

भोर का तारा ऊँगने के साथ ही क्षीण काय वृद्ध किसान अपने लावाजामे के साथ शहर मे प्रवेशित हो चुका था। हाड कपाती सर्द ऋतु मे यह किसान बार-बार चिथडे हो चुके, कम्बल रूपी लबादे को यहा वहा से सहेज कर, डॉफर रूपी तेज सर्द हवाओं से अपने आप को बचाने का असफल प्रयास कर रहा था।

प्रौढ के झुके कन्धो पर गधो की मानिंद, बोझ रूपी भार लदा हुआ था। बॉये कधे पर लम्बा थैले नुमा, सामान से ठसाठस भरा झोला लटक रहा था तो दाये कधे पर आठ दस सेर पानी से भरी लोहे की लोटडी टगी हुई थी। उसकी दशा से ऐसा आभासित हो रहा था जैसे उसके जर्जर शरीर पर तराजु के दो पल्ले लटका दिये गये हो, और यदि इन मे से एक पल्ले का भार हटा लिया जाए तो उसकी क्षीण काया असतुलित होकर, भर भरा कर जमीन पर गिर पडेगी।

वृद्ध ने अपने एक हाथ से दो गज लम्बी लाठी तो दूसरे हाथ से राठी नस्ल की ताजी ब्याही हुई गाय की रस्सी को मजबूती से थाम रखी थी। बछडी के गले मे डाली गई रस्सी, गाय के गले मे पडी रस्सी से नत्थी की हुई थी। इस व्यवस्था मे बछडी की गति गाय के साथ और गाय की गति, वृद्ध के साथ बधी हुई थी।

रात के काले-स्याह आवरण को चीरती हुई धीरे-धीरे सूरज की किरणो ने धरती पर अपना साम्राज्य फैलाना प्रारम्भ कर दिया था। शहर की सडको पर सोकर उठे निवासियो की आवाजाही शुरू हो चुकी थी। रात भर से शात, वीरान, सडको पर अब दुधिये, अखबार वालो, सुबह की सैर को निकले वाले नगरवासियो के साथ-साथ टैक्सियो, तागो, मोटरसाईकिलो, साईकिलो पर स्कूली बच्चो से लदे फदे लोगो की आमद रफ्त से वृद्ध को लगा कि अब शहर नीद के आगोश से मुक्त होकर जाग उठा है।

वृद्ध शनै शनै गाय बछडी को खीचते-खीचते सुथारो की बडी गवाड से, आचार्यो के चौक, मोहल्ला तेलीवाडा, चूनगरानबास, दाऊजी मंदिर, दो पीर, जोशीवाडा से शहर के प्रमुख, हृदय स्थल कोटगेट पर पहुँच गया था।

कोटगेट की सफील से पीठ की टेक लगा कर वृद्ध सोचने

लगा-'नौखा गॉव के जगीदार ठाकुर ने उसे बार-बार बताया था कि बिरधीचद जी, कोचर शहर मे बडे हाकिम है, शहर का बच्चा-बच्चा उनको जानता है, पहचानता है। शहर मे पहुँचते ही किसी भी राहगीर से पूछ लेना। शहर का हर कोई शख्स ना केवल उनका पता ठिकाना बता देगा बल्कि तुझे साथ लेकर उनकी हवेली तक पहुँचा भी देगा?'

आधे से अधिक शहर को नाप चुका हूँ परन्तु हाकम साहब की हवेली तो क्या? उनके मोहल्ले तक भी नही पहुँच पाया हूँ ऐसा भी नही है कि उनके वास का नाम भूल गया हूँ? सारी रात के सफर मे राम नाम की तरह वह मोहल्ले का नाम जपिये की तरह जपता रहा है बिचौकलो का वास, बिचौकलो का वास..?'

उसने तो शहर मे घुसते ही हर गली, हर नुक्कड, हर दुकान, हर चौक पर यही पूछा, बार-बार पूछा, 'भाईजी..ओ.बिचौकलो आलो बास कठै क पडसी? परतु जिससे भी उसने पूछा, तो पता ठिकाना बताना तो दूर उसका मजाक उडाया, उसको अपमानित किया, ठटटा मार कर उस पर हँसे और उसे धकिया कर निरा मूर्ख, पागल, गवार, जाहिल तक कहा। शहर मे पहुचते ही क्या शहर की आबोहवा से सचमुच मे पागल तो नही हो गया है?'

पूरी रात, गाय-बछडी के साथ की गई हाड-तोड अनवरत यात्रा ने वृद्ध को थका कर चकनाचूर कर दिया। उस पर लदा भारी-भरकम बोझ, सफर की थकावट वृद्ध पर धीरे-धीरे हावी होने लगी। वृद्ध ने शहर के हृदय स्थल कोटगेट के तीन दरवाजो मे से बीच के दरवाजे पर अपना डेरा डाला। कधो से भारी बोझ के थैले को सिरहाना बनाकर, कमर सीधी करने की गर्ज से सडक पर ही वह लम्बवत होकर पसर गया। उस पर थकान रूपी निद्रा ने कब डेरा जमाया वह जान नही सका और निद्रा के आगोश मे समा गया।

शहर के प्रमुख और व्यस्ततम स्थल कोटगेट पर यातायात धीरे-धीरे बढकर चरम पर पहुँच रहा था। वृद्ध का गाय बछडी सहित सडक के बीचो बीच राजा-महाराजा की तरह बेसुध, बेफ्रिकी से नीद मे पडे होने को शहर की आवागमन मे बाधा पहुचाने की कुचेष्टा माना गया। जो शालीन व सभ्रान्त शहर वासियो को नागवार गुजरा। वृद्ध का कृत्य अशोभनीय ही

नही वल्कि उनके अधिकारो, हकूको पर सीधा-सीधा अतिक्रमण था। शनै शनै वृद्ध के प्रति नगरवासियो की प्रवल और क्रूर भावनाऐ उबाल पर आ रही थी।

आमजनो का क्रोध, वृद्ध को दड देने के लिहाज से पल पल बढता हुआ उत्तेजना मे तब्दील हो रहा था। तुरत फुरत मे ही सेलफोनो, टेलीफोनो की घटिया घनघना उठी। जिसने पुलिस प्रशासन को मौका-ऐ-मुआवने के लिये मजबूर कर दिया। बढती भीड के साथ शहरियो की तीव्र उत्तेजना, उबाल लेकर उबल पडी और रास्तो, सडको का ट्रैफिक जाम हो गया।

तिल-तिल बढती भीड मे से अति उत्साही काले कोट, सफेद कोट के साथ खॉकी वर्दी ने तेज तर्रार आक्रामक इरादो के साथ गम बूटो की मार से वृद्ध को जगाने का त्वरित अभियान प्रारम्भ कर दिया। हाथो-पैरो, पेट-पीठ, सिर व चेहरे पर एक के बाद एक लगातार पड रहे जूतो, चप्पलो की मार से वृद्ध एकाएक अचंभित सा, होकर कर उठ बैठा। तडातड ओलो की तरह पड रहे लातो, घुसो, थप्पडो, तमाचो, रप्पाटो की मार से बचने के लिये वृद्ध दरवाजे की दीवार से चिपक गया।

जाहिल, गँवार, पागल, मूर्ख की पदवियो से सुशोभित हो चुके वृद्ध को नगर कोतवाल ने बीच बचाव कर आक्रोशित, सुसभ्य, सुशिक्षित, काले कोट, सफेद कोट वालो से छुडवाया। परन्तु शहरियो की मारपीट करने की भूख अभी तक शात होती दिख नही रही थी। 'इसे जेल मे डाल दो', 'इस अहमक, वृद्ध को मार-मार कर यही ढेर कर दो' के नारे भीड के हजुम मे से अब भी उछल रहे थे।

वेबस, लाचार, विवशता मे जकडे वृद्ध के सिर, मुँह, नाक, होठो से रिस-रिस कर खून बह रहा था। वेगैरतो, वेदर्दो की मार से उसके क्षीण काय शरीर मे जगह-जगह से रक्त चुचआँ रहा था। वृद्ध मार से लगी चोटो से बेइन्तहाँ ही घबरा गया।

मुझे पशुओ की तरह क्यो मारा पीटा गया? गालियाँ, देकर मेरा अपमान क्यो किया गया'? आदि अनसुलझे प्रश्नो के दायरे मे से निकलने का प्रयास कर रहा था। तभी 'कहा से और इस शहर मे क्यो आया है?' शहर कोतवाल ने दनदनाता हुआ सवाल उछाला।

'हजूँर! माई बाप!! नौखा गाँव का हूँ। वहा के ठाकुर साब के कहने पर ब्याही हुई गाय शहर के नाजिम की हवेली पर पहुँचाने आपके शहर मे आया हूँ।' आँखो से अविराम बहते हुये आँसुओ के बीच घिघियाने हुवे वृद्ध ने जवाब दिया।' 'नाम क्या है नाजम साब का, वे कौन से मोहल्ले मे रहते है? उससे अगला सवाल उगला।

'जी माँइता, नाजम साब का नाम बिरधीचद जी कोचर है, और उनकी हवेली बिचौकलो के बास मे है।' कुछ-कुछ सयत होकर वृद्ध ने पुन जवाव दिया। वृद्ध के उत्तर से शहरियो के चेहरो पर क्षोभ, परिहास की मिश्रित भाव की रेखाये उभर रही थी।

'माननीय बिरधीचद जी कोचर एसडीएम साब को तो इस शहर का बच्चा-बच्चा जानता है। परन्तु ये विचौकलो के वास के नाम क। तो कोई मोहल्ला इस शहर मे नही है? भीड मे से ही चेहरे पर सफेद दागो की चर्म रोग की बीमारी को, चिपकाये शहर के नामी गिरामी, लब्ध, प्रतिष्ठित नेतानुमा सफेद पोश व्यक्ति ने दिमागी कसरत की। और जिज्ञासा वश वृद्ध से पूछा-

'माईत्ता थॉ विचौकलॉ, किन्हे कैवो हो बिचौकलाँ, सारू थैं और काई जाँणो हो?'

'बिचौकलॉ, सारु, बिचौकलॉ, माने कोचरॉ क छेद होवै है' दर्द की मार से तडफ रहे वृद्ध ने अपनी समझ से जवाब दिया।

नगरवासियो की समझ मे सारा माजरा आ चुका। सारा मजर साफ हो गया। बिचौकलॉ का अर्थ, छेद या कोचरॉ और कोचरो का मोहल्ला, यानी कोचरो के मोहल्ले मे हाकिम बिरधीचद जी की हवेली। गहरे क्षोभ व परदु ख कातरता मे आकठ डूबे शहरवासियो मे से सफेद कोट धारी ने वृद्ध की ओर एक और सवाल फेका।

'थे आच्छा पागल हो माँईत्ता, थानै कोचरा और बिचौकलाँ रै माँई फरक करणो ही नी आयो, बिना ही कारण, थैं डाँगर आने ज्याँ कुटिजग्याँ?' भीड मे से अठाहस मिश्रित कोलाहल का सैलाव उमड पड़ा।

वृद्ध ने सोचा, स्थिति पर विचार किया और तडफते दिल से उसको पशुवत मारने, पीटने वाले शहर के ख्याति प्राप्त, नामी गिरामी, प्रबुद्ध, विदेयमान सफेद पोश सभ्रात शहरियो की ओर मुखातिब होकर उसने

कहा-'थै पढियाँ-लिखियाँ बुद्धि रॉ मालकॅ हो, सुरसती रा पुत्र हो, जै थॉ लोगाँ रा सुवाल निबड ग्याँ तो म्है भी थॉ लोगॉ सूँ ऐक सुवाल पुछणौ चाहु हूँ?

'हॉ-हाँ क्यो नही .एक नही हजार प्रश्न पूछो हम उसका सटीक, तथ्यात्मक उत्तर देने को तत्पर है। पूछो..पूछो?' आपार भीड मे से कौतुहल रुपी नाग राज ने एक बार फिर फुकार मारी।

'थै लौग म्हनैं ऑ बताओ कै पितर जी महाराज आलो खेजडलो कठै है?

शहरियो के हॅजुम भरी भीड मे कुछ पलो के लिये सन्नाटा छा गया। उनकी बोलती को जैसे साप सुघ गया। सभी चुप, खमोश व गहन विचारो मे मग्न। परन्तु प्रत्यक्ष पराजय को स्वीकार नही करने की गर्ज से शैतानियत के कीडे ने सफेद चर्म के रोग वाले नेतानुमा व्यक्ति के दिमाग मे कुँलाचे भरी उसने कहा-

'माँईत्ता, साची साची बात कहूँ तो -थै सठियॉ परा र गुगा गैला होयग्या हो म्हानै शहर माँई रेवण आला नै काई ठॉ कै ओ पित्तर जी आलो खेजडलो कठै है?' शहरियो की गर्दने हुॅकार शब्द के उच्चारण के साथ ही क्रमबद्ध ढग से ऊपर-नीचे होने लगी। काफी समय तक वृद्ध ने अपने प्रश्न का उत्तर नही पाकर स्वयम् को पुन सयमित किया और गम्भीर भाव से दर्द मे डूबे शब्दो मे बोलना शुरु किया-

'हे! सहरियो म्माँ लिछमी जी, माँ सरसुती ज्जी, रा लाडलो, ग्यान, विवेक अर, बुद्धिरॉ ठेकेदारो! म्है आपरै सहर रै मायँ पहली पोत वार ही आय्यो हूँ। म्हारै सु पैल्ला, म्हारै कुटुब कबीले रो कोई भी मिनँख इण रै माँहिने पग नी धरीयो है। जणै ही म्हैं कोचराँ ने बिचौकला कहग्यो, जिण रै साक थै म्हनै बावलो, पागल अर मुरख कहय्यो, सागै ही आप लोगाँ सहर मे आय्योडा मेहमान नै पसु नै भी इयॉ कोनी मारै ज्याँ थॉ सगला मिल्लर म्हनै मारीयो। अरे! ओ भला मानसा, मेहमान तो भगवान होयाँ करै है। भगवान नै तो छोडो थै लोगॉ तो म्हनै मिनॅख ही नही जाणियो। म्हनै मरियो कुटियो, गुगो गैलो बतायो, गॅवारु बावलो कहय्यो।

वृद्ध अत्यन्त दीनता लिये, कातरता से बोले जा रहा था। वृद्ध की आँखो से आँसुओ की झडी लगी हुई थी। उसकी काया से खून की लगातार

बहती धाराऐ 'शहर' की सडक को सिंचित कर रही थी। इससे करूणामय, दारूण मर्मान्तक पीडा का दृश्य साकार हो गया।

'जियॉ थाँ लोगाँ ने म्हारै, गॉव मॉही तीन सौ बरसा पैली आले पित्तर जी रै, थान आले खेजडले रो ग्यान कोनी तो थै म्हासूं आ आस किया करो हो की मै थारे सहर मे आय परोर, कोचरॉ रै बास ने मैं जॉण ज्यासु?'

हे! पढीया-लिखियाँ, अकल रा देवतावॉ, मिनॅख परधान हुयाँ करे है। ईस्थान परधान नही हुऑ करे। धोला गावा आला मिनखाँ, मिनॅख अर इस्थान मे फरक करणो सीखो, मिनख नै मिनख जाणौ, उणरी कदर करणी सीखो, मिनॅखा चॉरो निभाओ भाईडा, कैवणियाँ कह ग्यॉ है। मिनख धरम सूँ ऊॅचौ और कोई धरम कोनी हो सके।'

शहरवासियो की गर्दने आत्मग्लानि से भर कर लाज-शर्म से झुक गई। लोगो की ऑखो से ऑसु निकल कर उनके सफेद कपडो को दागित करने लगे। यत्रवत शहरियो मे से किसी कालेकोट ने वृद्ध का झोला अपने कधो पर लादा, तो किसी सफेदकोट ने पानी की लोटडी को गले लगाया, तो चर्म रोग लिए सफेद दाग वाले नेता ने गॉय माता की रस्सी को अपने हाथो मे सहेजा। तो शहर कोतवाल ने वृद्ध को आत्मीय, श्रद्धा ओर सम्मान से उसका हाथ पकड कर नाजम साहब की हवेली, कोचरो के मोहल्ले की ओर धीरे-धीरे प्रस्थान किया।

वृद्ध के पीछे शहरवासियो की भारी भीड शर्मसार, होती शोक मे डूबी शवयात्रा की सी चुप्पी लिये, अपनी-अपनी गर्दनो को जमीन मे गडाये जुलूस के रूप मे उसका अनुसरण कर रही थी। 'मेरा दर्द तुम ना समझ सके, मुझे सख्त इसका मलाल है' किसी टैक्सी मे गूजता गीत परिदृश्य को भावभीना बना कर दर्द का इजहार कर रहा था।

OOO

छप्पनीयाँ अकाल

विशाल, ऊँचे ऊँचे डूँगरो का स्वरूप लिये रेतीले धोरो के बीच बसे गाँव के दिखणाद मार्ग से वह, प्रभात बेला मे हौले-हौले गन्तव्य स्थल की ओर बढ रहा था। जैसे-जैसे गाँव नजदीक आता जा रहा था वैसे-वैसे उसकी जर्जर क्षीण काया मे उसका धडकता हृदय धबाक्-धबाक् की आवाज के साथ जोर से धडक उठता।

वृद्ध की कद काठी लम्बी पर छरहरी थी। पौने सात फुट की लम्बी काया, उम्र और भयकर छप्पनीये अकाल की दोहरी मार से झुक कर दोहरी हो चुकी थी। जिसे सीधी रखने की गर्ज से वह लम्बी लाठी का सहारा लिये हुये था। बुढ्ढे का पहनावा ठुकराई लिये हुये था। उसने घुटनो के ऊपर तक मोटे सूत की धोती, उस पर घेरदार मिरजई पहन रखी थी। सिर पर घडे की सी भारी पगडी बाध रखी थी।

उसकी चमकती आँखे अपेक्षाकृत कुछ बडी, कट्टार की सी तीखी नाक, आँखो के भौहे सघन बालो के गुच्छो से आच्छादित होते हुवे, परस्पर मिले हुये थे। जो धनुषाकार आकृति का आभास देते जान पड रहे थे। जोर सिग ठुड्डी पर माँग मे विभक्त सन जैसी सफेद, लम्बी शानदार फरफराती दाढी व भरी-भरी गल मुच्छो को बाये हाथ से सवारता, दोनो कानो के ऊपर लपेटता हुआ गाव मे प्रवेश कर रहा था।

बायी ओर गाँव के सुखे कुऐ के पास, गोचर के मैदान मे पडे मृत पशुओ के असख्य ककालो मे से उठते हुये विषाक्त गैस भरी सडाध मारती दुर्गन्ध ने जोर सिग का आगे बढना मुहाल कर दिया। उसने अपने साफे का पल्ला खोला और मुँह-नाक को ढाप कर अब वह नकाबपोश की स्थिति मे आ गया।

मरघट की सी अशुभ नीरव खौफजदा शान्ति लिये, गाँव का चौथाई सफर तय करने पर भी उसे अब तक कोई आदम जात दिखाई नही दिया। भयकर छप्पनीये अकाल की विभीषिका से शमशान बन चुके गाँव मे गिद्ध, चील, कौवे, भूखे कुत्ते, सियार अपनी प्राकृतिक आवाजो मे मनहुसियत लिये कर्कशता से कलेजा चीरती आवाजो के साथ कूक रहे थे।

सम्पूर्ण गाँव निर्जन, कातिहीन मौत की सुरसुराहट लिये गमगीन नारकीय सन्नाटे मे लीन था। गाँव मे मिट्टी के लोथो और खडडी से बने

कच्चे घरो, जिन पर गोबर की लिपाई की गई थी। अपने जर्जर अस्तित्व लिये सॉय सॉय की सुसाड करती तेज आधीयो की आवाजो मे चीत्कार करते हुये घरो के आगे तैनात विलुप्त दैत्याकार यमदूतो के क्रुर पजो से, अपने आप को छुडाने की गुहार करते जान पड रहे थे।

जोर सिग को यदा कदा काले, भूरे ओढनियो के लबादो मे ढकी मानवाकृतियॉ अपनी मुढेरो मे से दबी-छुपी हुई सी, अपने सिरो को निकाल कर लुकती-छिपती चुड़ैलो की प्रेतात्माओ के समान लग रही थी। महा अकाल छप्पनिये से जुझते इस गॉव के कई घरो मे अबोध नग-तडग बच्चो, प्रौढाओ की मृत लाशो को नौचते, घमीटते कुत्तो-गिद्धो मे परस्पर लूट-खसौट के मल्ल युद्धो के मर्मान्तक पीडा से चीत्कार करते हुये मानवीय पीडा के हृदय-विदारक दृश्य दिखाई दे रहे थे। प्रकृति के इस क्रूरतम भीषण त्रासदी से, उमर के सतरवे दशक मे अनुभव के ज्ञान से लबालब जोर सिग का हृदय विचलित होकर किलबिला उठा।

कच्चे घरो, टापरो को घेरे काली स्याह कटीली बाडो के अन्दर, गवाड मे खडी खेजडियो, कैरो के वृक्षो, बेरो की झाडियो, गोचर गवाड मे उगे विशाल पीपल-बरगद, नीमो के पेडो को भूख से अकुलाते गॉव वासियो ने इनके तनो, डालियो को नौच-नौच कर, इनकी छालो को उधेड-उधेड कर, पत्तियो को सूत सूत कर नग-धडग कर, इनको सूखे-ठूठो मे तब्दील कर, अपनी आतो की क्षुधा को बुझाने का असफल प्रयास के कुकृत्यो को चीख-चीखकर बयान कर रहे थे। पेडो के तनो की छालो-पत्तियो को उबाल कर पीस कर दुंभिक्ष महाअकाल, छप्पनिये काल से जुझते गाँव वालो की क्षुधा शान्ति के अप्राकृतिक कुप्रबन्ध के प्रयासो से सदी की सबसे बडी खौफनाक भुखमरी, मानवीय त्रासदी को साक्षात् बयान कर रही थी।

गॉव के उत्तराद टोले मे मानवीय आवाजो की चीखो-पुकार, छीना-झपटी के स्वरो से जोर सिग के सोच की तन्द्रा टूटी और वह उस ओर लाठी टेकते हुये आगे बढा। भरी दोपहर की भीषण गर्मी मे, आसमान मे सीधे ऊपर चढे प्रचण्ड अग्नि वर्षा करते सूर्यदेव के क्रोध भरे तमतमाऐ चेहरे का सामना करता हुआ जोर सिग, बालु भरे रेतीले टीले पर धीरे-धीरे चढता चला जा रहा था। सौ गज के ऊँचे रेतीले पहाडनुमा धोरे पर, धीरे-धीरे चढकर पत्तियाँ एव छाल विहीन ठूठ नुमा पेड के नीचे

खड़ा होकर वह अपने सास को सयन करने लगा।

दम साध कर जैसे ही जोर सिग ने टीले के नीचे नजर डाली तो चैंच ा होकर, उसने देखा कि उत्तराद टोले के हर गली, हर नुक्कड ने बो' बच्चे, युवतियॉ, पुत्र वधुएँ, वृद्ध, प्रौढाएँ अपने-अपने हाथो मे चाकू-छुरियॉं, तसले, तगारिया लिये मरणासन्न ऊँट को घेरले चले जा रहे है। मृत प्राय ऊँट के चारो ओर इन भुखमरो का घेरा बढता ही चला जा रहा है। रेगिस्तान के जहाज के प्राण-पखेरू उडे इससे पहले ही भूख मे किलबिलाती आतो को शात करने के लिये यह अमानवीय जन समूह उस पर टूट पडा।

जिबह किये जा रहे ऊँट की मर्मात्तक आर्त्तनाद भरी, डकारने की चीखे टीले के ऊपर जोर सिग के कानो मे पड रही थी। रक्त के फव्वारो मे डूबे ऊँट की आन्तो, ओजरियो, मास की बोटियो पर छीना-झपटी करते ये खुँखार अमानवीय समुह के साक्षात् मौत के ताण्डव नृत्य के दृश्य से, जोर सिग का हृदय घिन और घृणा से मिचमिचा कर भर उठा। उसकी २ छलछला उठी और वह छप्पनिये अकाल की विभीपिका के आर्त्तनाद से काप उठा।

जोर सिग रेत के ववडरो के बीच, लू के तेज थपेडो को सहता, धुल के भतुलियो को भेलता, बडे शिकार को उदरस्थ किये विशाल अजगर की सी मद मद गति से रेगता हुआ टीले के नीचे उतरा। और अथाह मरूभूमि के विशाल रेगिस्तान मे समुन्द्र के चक्रवात तूफान मे फसी नौका की तरह हिचकौले खाता, हुआ धीरे-धीरे नजरो से ओझल हो गया।

जेठ मास की भीषण गर्मी लू के थपेडो से झुलसती, पानी को पुकारती प्यासी धरती, अपनी प्रलयकारी धधकती उप्मा जिसमे जीव धारियो के मास को तपा कर, सेक देने की कुव्वत थी। महा प्रलयकारी रोद्रावतार लिये, वसुन्धरा पर अगारे फेकने से थक कर चूर हो चुके सूर्य देवता के अस्ताचल होने के वाद धीरे-धीरे वालू रेत के रज कण आहिस्ता-आहिस्ता से अपनी नैसर्गिक आभा को पाते हुये, मद्धिम-मद्धिम निशा मे सकुन की सास ले रहे थे।

गाँव मे दिन ढलने के दो घरी के वाद झुलसाते-अग्नि वर्पा करते सूर्य देव का प्रकोप आंशिक रुप से अब कम से कमोत्तर हो चला था।

अकाल पीडित सारा गॉव हमेशा की तरह अपने-अपने घरो-कुनबो मे से निकल कर गॉव के अग्निकोण मे अवस्थित जर्जरवस्था लिये, गॉव मुखियाँ भूप सिग के घर के दालान मे एकत्र होने लगा।

गाँव के मर्द, नौजवान, अधेड चुकि गॉव वालो के प्राणो की रक्षार्थ आस-पास के गॉवो मे धाडा(डकैती) मारने गये हुये थे। छप्पनिये काल से जुझते हुये गॉव की लगभग एक-तिहाई आबादी काल-कलवित हो चुकी थी। इनमे से अधिकतर मानवीय आकृतियो ने अपनी जन्म भूमि, इसी गाँव मे ही अकाल की भूख से लडते हुये प्राण त्यागे थे। गॉव की आबादी का कुछ हिस्सा टुकडो-टुकडो मे अपने ढोर, गृहस्थी का सामान ऊँट गाडी, गधो पर लाद कर आस-पास के बडे गाँवो, कस्बो, शहरो की ओर जिन्दा रहे तो लौटकर आयेगे, के वायदे के साथ प्रस्थान कर चुके थे।

धाडैती भूप सिग के नेतृत्व मे धाडा मार कर, आसपास के गाँवो को लूटने और अपना अस्तित्व बचाने हेतु गॉव का नर दल धाडे पर था। सो उनकी अनुपस्थिति मे गॉव रक्षा का भार स्वत ही भूप सिग की जोडायत रसाल कवर के सिर आ पडा था।

गाँव मुखियॉ के गवाड मे छित्तरे-छितरे बीस-पच्चीस मानवीय आकृतियो के जमघट के बाद गॉव के अधेड, बर्जुग रण सिग ने हाँक लगाई-'क्या गॉव के सभी लोग-बाग आ गये है?'

उपस्थित नरमुण्डो ने अपने आस-पास बैठे, अडौस-पडौस के जीवात्माओ से नजरे टकराई। कल रात जो जिन्दा थे, परतु आज छप्पनीये काल की भेट चढ चुके, उनकी मृत्यु की गणना की आत्म सन्तुप्टि के भाव से नर मुण्डो ने स्वीकारात्मक हुँकार भर के कहा-'हूँ हूँ हॉ जो मरने से बचे रह गये, जिन्दा है, वो सब मौजुद है, ठकुराईन सा।'

नर मुण्डो के जमावाडे के बीच बैठी अधेड ठकुराईन रसाल कवर एकाएक अपने स्थान पर उठ खडी हुई और शान्त ऑखो से जन-समूह की ओर निहार कर उपस्थिति की जॉच परख कर, मन ही मन गिनती लगाई और बोली-'बाबोसा डूँगर सिग, पन्न जी पटेल की पुत्रवधु दली, छत्तीसी नायन दादी भीकूडी कल हमारे साथ थे पर वो आज हमारे सग जिन्दा नही है। छप्पनीये अकाल के जमदूतो ने हमसे उनकी भेट ले ली है।'

ठण्डा निस्कारा डालते हुवे रसाल कवर ने आगे कहा-'मै, आप और हम सव मालवा, गुजरात और राजपूताने के लोग सदी के भयकरतम छप्पनीये काल से लडकर जिदा रहने के लिये जुझ रहे है। गॉव रक्षात् धाडा डालने गये धाडैती दल के आने तक हमे किसी ना किसी तरीके से जिन्दा रहना होगा। अपने आप को वचाने के लिये हमे अपने प्राणो को कस कर अपनी मुट्ठी मे बाधकर जिन्दा रहना ही होगा। ताकि धरती माँ मानव रहित न होने पावे।'

लहराती आवाज मे खनक पैदा कर रसाल कवर चिघाड उठी-'चार कोस दूर गाँव के बुर्जुग जोर सिग को मुखबिर बनाकर, परले गॉव के धाडैती परमा गुर्जर ने आज यहा भेजा था। दिन भर वह बुर्जुग अपनी गिद्ध आँखो से अपने गॉव के समस्त हालातो की खोज-खबर कर ले गया है। आज रात को हमारे गॉव पर धाडा पडेगा। जिसका मुकावला हमे अपने प्राण देकर करना पडे तो भी करना होगा। हमे आन है, अपने गॉव के गौरव की, इसके अतीत की, हमारे बुर्जुगो के इज्जत की, धाडै मे चाहे हमारी जान ही क्यो ना चली जावे परन्तु गॉव की आन जाने ना पावे।'

गर्व भरी, जोश की तकरीर सुन भूख से बेदम पडे जिस्मो मे त्याग, वलिदान की एक, तेज आवेग लिये आत्म-सम्मान का ज्वार उमड पडा। उपस्थित जन समुदाय गाँव की रक्षार्थ आत्म गौरव से भर कर, तीव्र हुकारे के साथ सामुहिक रूप से सिह गर्जना करता बोल पडा-'जान से ज्यादा हमे अपना गौरव प्यारा है। हमारे रक्त की अन्तिम बूद इस धरती पर गिरकर इसकी रक्षा करेगी। आप आज्ञा दे ठकुराईन साहिबा।'

आत्मोसर्ग के जोश को दुगने, आत्म विश्वास के जोशीले टकार ने, जोश भरे जुनून को आत्म बलिदान के मार्ग को परस्त किया। ठकुराईन रसाल कवर उत्साह की मशाल को चौगुने प्रकाश पुज से प्रज्जवलित करते हुये, तलवारो की खनखनाहट की कर्कश आवाज मे खनक कर सिघनी के समान दहाडती हुई बोली-'काकोसा रण सिग, गाँव मे जितने भी उपलब्ध मवेशी है। बैल, गाय, बछडा, वछडी, भैस, पाडा, पाडी, घोडे, ऊँट, गधो को इक्ट्ठा करो। तुम्हारे साथ कोजू पटेल, पाचीया नायक और भीक सिग रहेगे हालाकि इनकी उम्र बारह-तेरह साल से अधिक नही है फिर भी कम उम्र मे ये तुम्हारे अनुभव को सान चढायेगे। आप इन मवेशियो के सीगो पर,

इनके सिरो, पर कपडो से तैयार की गई मशाले बाधे, हर घर मे जो कुछ भी तेल, घी, बच्चा खुच्चा है इन मशालो पर उडेल कर इन्हे प्रज्जवलित करो। मवेशियो के इस झुण्ड को गाँव के चारो तरफ इन्हे खदेडते हुये पूरी रात पहरा देगे। जिससे धाडैती दुश्मनो मे भय पैदा हो जायेगा। वे अपने नापाक मन्सुबो मे कामयाब नही हो पायेगे।'

अगले ही पल झन्नाटेदार दूसरा आदेश गूज उठा-'ननकी, दिसावरी, असमान कवर, प्रेमकी, छुटकी, गगी तुम सब आज पुरुषो के कपडे पहन कर पुरुषवेश धारण करोगी। ढाल, तलवार बर्छे, भाले, गडासे आदि शस्त्रो मे लैस होकर गाँव भर की गलियो मे, नुक्कडो पर परस्पर छद्म युद्धाभ्यास करती हुई मारो काटो, कोई धाडैती जिंदा बच ना पाये की आवजो से सारी रात सवेरा, होने तक पूरे गाँव को गुजायमान रखोगी।'

बुद्धि, कौशल, वीरता की देवी बनी रणचडी रसाल कवर के बुद्धिमतापूर्ण निर्णय की सामुहिक रूप से जय जयकार हो इससे पहले ही वह पुन चिघाड उठी-'बडी माँ दरियाव कवर, खवासन बढकी, नारायणी पटेलन, झूमकी खातन, लाली सेवगणी आप बुर्जुग औरते गॉव की चारो दिशाओ मे फैल कर गॉव के सूने घरो की छतो पर बैठकर, आपस मे मर्दो की आवाजो मे रात भर गॉव के वीरो की वीरता के आख्यानो, उनकी गाथाओ को परस्पर रात भर दुहराती हुई बतियाती रहेगी, ध्यान रहे इन कामो मे किसी प्रकार की कोई कोताही ना बरती जाये।'

क्षत्राणी सेनापति के उल्लास भरे बयान, अभेदय कुशल रणनीति, आत्मोसर्ग की हार्दिक तमन्नाऐ लिये उपस्थित जन समुदाय गॉव रक्षार्थ, आत्म बलिदान से मदमस्त विशाल गजराज के समान रसाल कवर की जय जयकार से चिघाड उठा। मातृभूमि की रक्षा की तैयारी हेतु सभी दुगने आवेग, उल्लास, त्याग भावना से लबरेज होकर सतकर्म हेतु जी जान से मरने-मारने को उतारू हो उठे।

आधी रात की बेला मे, चार घडी पहर शेष रात रहे, चहुँ दिशा से सैकडो भूखे नगो की धाडैती सेना परले गॉव के परमा गुर्जुर के नेतृत्व मे बढ चला। आठ-आठ दस-दस की टोलियो मे तलवारे, बर्छो, भालो, ढालो, चावु-छुरियो से लेस सशस्त्र दल आनन-फानन मे ठकुराईन रसाल कवर के गॉव की ओर बढता चला आ रहा था।

धाड़ैतियो का टोला पल प्रति पल निकट आता गया और गॉव की दहलीज पर आकर ठिठक गया। महसा गॉव मे प्रवेश करने के दिखणाद मार्ग पर बतियाते जुझार सिग, ईसर सिग की आवाजो ने उनका रास्ता रोका।

'भई ठाकुर भूप सिह कमाल का जवॉ मर्द है। उसने गॉव की रक्षा के लिये पडौस गॉव के लाला के घर धाडा डाला और दस दिनो तक खत्म ना होने वाले धान का प्रबन्ध कर लिया।'

'ठीक कहते हो ईसर सिया ठाकुर का कलेजा सवा सेर का है। क्यॉ मजाल की कोई उससे ऑख मिलाकर बात कर सके। बडा धाड-फाड कदावर मर्द है भाई। किस माई के लाल मे इतना दम है कि उससे बैर मोल ले।'

'ठीक ही है जुझारू भाई, अपने इस इलाके मे तो कोई ऐसी मॉ नही है जिसने सेर सूठ खाकर पूत जना हो जो हमारे भूप सिग से टक्कर ले सके?'

धाडैती दल सहमा, ठिठका और गॉव मे बढने को उद्दत हुआ तो अचानक मारो, काटो, जिन्दा बच के जाने ना पाये की स्पष्ट आवाजे जो उत्तरोत्तर तेज होती गई ने उनके पैरो मे जहरीले नागो का पाश बाध दिया। वे घबराकर ठिठक कर खडे हो गये।

कुछ पल के उपरात धाडैती दल के नायक परमा गुर्जर ने आश्चर्य चकित होकर विस्फारित ऑखो से देखा कि दिखणाद टीले की चोटी पर से मशालो का एक जुलूस लहराता हुआ तेजी से ढलान पार करके उनकी ओर बढा चला आ रहा है।

परमा गुर्जर का कलेजा दरक गया। उसका साहस तिडक गया, शरीर पसीने से नहा गया और आनन-फानन मे ही वह अपने दल से मुखातिब होता चिल्ला उठा 'साले जोर सी ने दगा किया, मक्कार ने झूठी मुखबिरी की, हम सबके मरवाने की चाल चली, कमीना, साला उसने हमे धोखे मे रखा, बताया नही कि ठाकुर भूप सिग वापस आ गया है। भागो। अपनी जान बचा सको तो बचा लो। पकडे गये तो इनके हाथो कोई जिन्दा नही बचेगा।।। भागो भागो।।।'

इसके साथ ही धाडैती परमा गुर्जर का दल तितर-बितर होकर कुछ ही पलो मे ओझल हो गया। सुर्योदय से पूर्व गॉव रक्षक दल कुछ दिनो का जुगाड लेकर कुशाग्र बुद्धि दल पति भूप सिग के नेतृत्व मे गॉव मे प्रवेश कर गया।

OOO

फ़िसलन

'रामदीन अ_अ' कोर्ट मे पेशी के लिये मजिस्ट्रेट का चपरासी जिस भाव भंगिमा से प्रकार आवाज लगाता है। ठीक उसी लहजे मे 'बडे-बाबू' के चपरासी ने रामदीन को पगार लेने के लिये पुकारा। रामदीन ऑफिस के लम्बे बरामदे मे दीवार का सहारा लेकर, ऊघता हुआ उकडू बैठा हुआ था। आवाज सुनकर वह हडबडा कर खडा हो गया परन्तु खडे होने पर उसने महसूस किया कि उसके घुटने दर्द के मारे बिलबिला रहे है। रामदीन का कृश काय, तपेदिक से जर्जर शरीर सुखे पत्ते की भाति कप कपा उठा। उसने दीवार का सहारा लेकर अपने शरीर को थोडा सतुलित किया। इसके पश्चात् वह आहिस्ता-आहिस्ता 'बडे-बाबू' के कमरे की ओर रेगता हुआ सा बढने लगा।

'पगार' शब्द ने रामदीन के मस्तिष्क मे सैकडो बिच्छुओ के एक साथ डक मारने जैसा भयानक ववडर फैला दिया था। उसके दिमाग मे पत्नी सतियाँ उर्फ सावित्री, बेटी जानकी, चौकीदार जोर सिह, जुँआरी कमालु व कलाल भुरे खा के चेहरे नाचने लगे। रामदीन के दिमाग मे चल रहे द्वन्द्व मे 'बडे-बाबू' की छवि से बाधा आ गई। 'बडे-बाबू' ऑफिस की बडी-बडी फाइलो को अपनी विशाल टेबल पर फैलाऐ उनमे कुशल गौताखोर की भाति गौता लगाये हुये थे। रामदीन को 'बडे-बाबू' की काम मे इतनी व्यस्तता देखकर लगा कि ये फाइले ही उनके माँ-बाप, भाई-बहन, पत्नी-पुत्र है।

'हजुर माई-बाप' रामदीन ने शेर के समुख खडी बकरी के मिनमिणने वाले शब्दो मे हौले से अपनी उपस्थिनि का आभास करवाया परन्तु व्यर्थ 'बडे-बाबू' पूर्ववत अपने सिर को फाइलो मे ही डुबाये रहे। रामदीन ने घायल कीडे की तरह पुन दीवार पर चढने की असफल कोशिश की भाति एक बार फिर किलबिलाया परन्तु उसका यह प्रयास भी निरर्थक चला गया। 'ख ऊॅ_ख_ उँ_ऊँ' खासी की आवाज जिसे रामदीन ने पी जाने

के लिये अपनी जर्जर काया की शेष बची सम्पूर्ण ताकत लगा रखी थी। इसी आवाज ने 'बडे-बाबू' का ध्यान सहज ही अपनी ओर आकृष्ट कर लिया।

'बडे-बाबू' ने थोडा सा सिर का कोण बदल कर फाईलो मे से निकाला और रामदीन की ओर तेज चुभती निगाहो से घूरा। रामदीन का ककाल रूपी काला शरीर थर-थर काप रहा था। उसके जबडे निकले दतहीन पोपले मुँह के ऊपर मास का लम्बा लोथडा नाक होने का आभास करवा रहा था। जिसके दोनो तरफ लाल पीली मैल से सनी आँखो मे से पानी रिस रहा था। रामदीन के चेहरे पर खॉसी रोकने के असफल प्रयास की थकान के रूप मे जिस प्रकार सुबह-सुबह पार्क की दूब पर ओस के कण चमकते है। उसी प्रकार पसीना चुअचुआ रहा था।

'रामदीन ने वर्षो पहले मिली फैक्ट्री की वर्दी वाला कुर्त्ता जिस पर अब जगह-जगह पैबन्दो ने अपना अड्डा जमा लिया था और जैसे दुर्गन्ध का जन्मदाता भी वही हो, पहन रखा था। रामदीन ने घुटनो से ऊपर मैली-कुचैली जगह-जगह से फट्टी धोती पहन रखी थी जो कि लगता है वह कुर्ते से भी ज्यादा गदी और घिनौनी होने की प्रतिस्पर्धा कर रही हो।

'बडे-बाबू' का दिमाग घिन से भिन भिना उठा। उन्हे ऐसा लगा जो मुन्सपालिटी का कचरा पात्र उनके मुँह के आगे खडा होकर उनका मुँह चिढा रहा हो। 'बडे-बाबू' ने मुँह मे भर आई घिन को भगाने के लिये तेज सुगन्धित जर्दे के पान का स्थान एक गिलाफ से दूसरी गिलाफ मे परिवर्तित किया। फिर रामदीन से मुखातिब होकर तेज स्वर मे घृणा पूर्वक कहा-

'क्या मेरे ऊपर ही चढ जायेगा? दूर हट, दूर हट'।

कह कर रामदीन की पगार गिनने लगे। पगार गिनकर उन्होने कहा-

'ले यहॉ अगूठा लगा दे'।

इसके साथ ही उन्होने रामदीन के सामने रसीदी टिकट लगा कागज खिसका दिया। रामदीन का चिर प्रशिक्षित अगूठा अपना निशान रसीदी टिकट पर छोडने को बेताब था। सो उसने अगूठे को स्टॉम्प पैड पर रगडा और चट से सही स्थान पर चिपका कर हटा लिया।

'हॉ अब ये ले एक सौ अठाईस रुपये। इस बार तेरी तनख्वाह दो

सौ चालीस रुपये बनी थी। जिसमे से मैने अपने सौ रुपये की किस्त तथा पाच टका कमीशन के काट लिये है। 'बडे-बाबू' ने खुलासा किया। एक सौ अठाईस रुपयो के लिये रामदीन ने अपनी हथेली को धोती से रगडकर 'बडे-बाबू' के सामने पसार दी। हथेली पर रुपयो का स्पर्श पाकर रामदीन का शरीर एक बारगी हर्ष मिश्रित रोमाच से भर उठा। वह रुपयो को सहेज कर गिनने लगा। दस, बीस, तीस, एक सौ, दस बीस, आठ पुरे एक सौ आठाईस रुपये।

पगार गिन कर रामदीन को पूर्ण सन्तुष्टि हुई। उसने पगार के नोटो को कुर्ते की ऊपरी जेब के हवाले किया। जिसकी दुर्गन्ध से नोट कसमसाने लगे। शायद इसलिये ही दरिद्र के पास दरिद्रता ही आती है क्योंकि लक्ष्मी जी को फटेहाली मे रहना नागवार लगता है। रामदीन ने 'बडे-बाबू' को कातर आँखो से कृतज्ञता पेश की तथा सुखी लकडी जैसे हाथो को जोडकर उनका अभिनन्दन करके बाहर जाने को मुडा।

'अरे! हॉ याद आया सुन?' 'बडे-बाबू' की आवाज ने जैसे उसकी चाल मे लोहे की बेडिया डाल दी हो। रामदीन पुन मुडा व यथा स्थान, यथावत खडा होकर 'बडे-बाबू' की ओर सावन-भादो मे आकाश की ओर कातर दृष्टि से ताकते किसान की भाति अपलक देखने लगा।

'हा तो तूने क्या फैसला किया है? अपनी बेटी को 'बडे-साब' के घर 'काम' करने भेजेगा या नही?'

अब 'बडे-बाबू' मृग तृष्णा मे डूबे मृग की भाति रामदीन के चेहरे पर आने-जाने वाले विचारो के भवरजाल मे डूबने लगे।'

-जी! माई बाप, इस बारे मे मै कल आपको अपना निर्णय बता दूगा?' यह कह कर रामदीन पलट कर कमरे मे से बाहर निकलने को हुआ ताकि 'बडे-बाबू' द्वारा 'बडे-साब' की गुणगान की रामायण कथा उसे एक बार फिर ना सुननी पडे।

फैक्ट्री चौकीदार रामदीन के बरामदे मे आते ही उसके मस्तिष्क मे 'बडे-बाबू' व 'बडे-साब' के चेहरो का स्थान उसकी पत्नी सतियॉ और बेटी जानकी ने ले लिया। उसका दिमाग आधी मे थपेडे खाती नोका की भाति डगमगाने लगा। तूफान के बाद शाति की तरह रामदीन का मस्तिष्क अतीत के परो द्वारा यादो की बारात मे उड चला।

उसकी शादी अल्प आयु मे ही कर दी गई थी। जब सतियॉ उसकी पत्नी बनकर उसके घर आई थी तब वह मात्र बारह वर्ष की ही थी। पिता की मृत्यु के बाद रामदीन के भाईयो ने जमीन-जायदाद का परस्पर बटवारा कर लिया। इस तरह से उसके परिवार के घोसले रूपी तिनके इधर-उधर बिखर कर पुन अपने हिस्से मे आये तिनको से नये परन्तु क्षीण घरोदे के निर्माण मे लग गये। रामदीन ने भी जैसे-तैसे अपने घोसले का निर्माण सिर छुपाने की गर्ज से कर लिया था। रामदीन खेती, मजदूरी रूपी श्रम से अपने नये घोसले मे रहने वाले प्राणियो की उदर पूर्ति मे लगातार लगा रहा। रामदीन के गाँव मे कुछ वर्षो के बाद ही अकाल ने अगद के पैर की भाँति डेरा जमा लिया। चार-चार वर्षो के लगातार सुखे ने रामदीन को ही नही बल्कि सैकडो ग्रामीणो की गृहस्थियो को लील कर कुचल डाला। ऐसे भीषण प्राकृतिक विभीषिका मे हजारो पशु-डागर मर खप गये। सैकडो परिवार दाने-दाने को मोहताज होकर भिखारी बन कर दर-दर की ठोकरे खाने को मजबूर हो गये। प्राकृतिक कोप के शिकार हुये इन शिकारो मे से एक रामदीन भी समय के थपेडो को सहन करता हुआ 'बडे-शहर' पेट पालने के लिये आ पहुचा।

इस बडे शहर मे रामदीन ने कई वर्षो तक गगन चुम्बी इमारतो के निर्माण मे हाड तोड मेहनत करता हुआ अपनी सतियॉ का पेट भरता रहा। परन्तु लगातार हाडतोड मेहनत, आधा भूखा, आधा प्यासा रहने व भीषण मानसिक बोझ ने रामदीन के शरीर को धीरे-धीरे दीमक की भाँति चाटना आरम्भ कर दिया। इसके परिणामस्वरूप उसका स्वास्थ्य धीरे-धीरे घुन लगी लकडी की तरह अन्दर ही अन्दर खोखला होता हुआ क्षीण व जर्जर होता गया।

रामदीन की इस शारीरिक कमजोरी का भरपूर लाभ उठाते हुये तपेदिक के भयानक किटाणुओ ने उसके शरीर को अपने निवास का स्थाई अड्डा बना लिया। ये भयानक विषैले किटाणु पल-पल रामदीन के शरीर से पोषण पाकर उसको हर क्षण मौत के मुँह की ओर खीच कर ले जा रहे थे। लाचारी भरी बेबसी ने रामदीन को हर मौके पर नितान्त निराश्रित कर पराजित कर दिया। इसके फलस्वरूप रामदीन अपनी पत्नी सतियॉ को भी 'काम' पर जाने देने की इजाजत देने को मजबूर हो गया।

धीरे-धीरे सतियॉं बडे-बडे साबो, अफसरो के बगलो, फ्लैटो मे काम करने जाने लगी। परन्तु रामदीन के लिये सतियॉं 'सतयुग' की सावित्री साबित नही हो सकी। धीरे-धीरे सतिया सजने सवरने की आदी होने लगी। वह निरन्तर नई-नवेली दुल्हन की भॉति निखरती चली गई। अब सतियॉं गॉव मे रहने वाली दो हाथ लबा घूघट निकालने वाली नारी नही थी।

काम पर से थके मादे घर आये रामदीन को जब वह बतलाती कि अमुक बडे साब ने उसको साडी भेट की है। अपने फला साब ने उसको चादी की पॉजेब कराने का आश्वासन दिया है। तब निढाल रामदीन के चेहरे पर कोलतार पुत जाती। रामदीन को सतिया की इन भेटो का रहस्य मालुम था परन्तु उसके घायल छलनी कलेजे को सतिया की भेटो की बाते तीखी छुरी की भांति बीध-बीध कर ओर अधिक छलनी बना देती। किस्मत व शरीर की मार से मारा रामदीन बेकस, बेबस, लाचारी से हुॅ-हॉ के अलावा ओर कुछ नही कर पाता।

रामदीन जानता था कि सतिया की मेहरबानी से ही वह आज इस फैक्ट्री में चौकीदार है। अब सतिया मासूम जानकी को भी अपने साथ काम पर ले जाने लगी थी ताकि भविष्य मे उसको काम के लिये भटकना न पडे। पिछले चार पाच महीनो मे जानकी फैक्ट्री के बडे-साब से 'पेट भरने' का तोहफा लेकर लौटी तब रामदीन पागल हाथी सा चिघाड उठा था। परन्तु समाज मे अपनी इज्जत-आबरू से डर कर, चुपके से बडे साब ने 'बडे-बाबू' से तीन सौ रुपये रामदीन को उधार दिलवा कर 'पेट' के मामले को किसी प्रकार से रफा दफा करवाया। बडे साब जानकी के काम से बेहद खुश है। वे उसे अपने बगले मे स्थाई रूप से काम देना चाहते है। जिसके लिये उन्होने रामदीन को बगले के सर्वेन्ट क्वाटर तक देने का आश्वासन दे रखा है।

रामदीन अतीत के इन्ही विचारो के सागर मे डूबता-उतरता फैक्ट्री के बाहर आ गया। शाम अब तक इन्डस्ट्रीयल एरिया की चिमनियो के धुऐ से धुधला गई थी। रामदीन ने धीरे-धीरे वर्दी के कुर्ते की जेब मे पगार के नोटो की गर्माहट महसूस की। उसके पॉव यत्रवत सदर कोतवाली के पीछे जुआरियो के अड्डे की ओर मुड गये। रामदीन के दिल मे तर्क-विर्तको

का भयकर ज्वार उमड-घुमड रहा था। बस आज, आज ही वह अपना भाग्य जुऐ की चकरी पर चढायेगा। आज के बाद वह कभी इधर का रूख ही नही करेगा। क्या मालुम आज उसका सोया पडा भाग्य जाग उठे और वह इस पगार से कई गुना धन प्राप्त करले। फिर इस दमघोटू शहर, इन सडको, इन गलियो से निकल कर वह पुन अपने गॉव लाट जायेगा। आशा ने उत्साह भरा, उत्साह ने कर्म को जन्म दिया और रामदीन ने अपने कदमो की गति तेज कर दी।

भलाई पर बुराई जीती। साधु को पुन शतान ने पछाड दिया। अन्धेरा होते-होते रामदीन सफिये गुण्डे के अडडे पर जा पहुचा। आज पगार का दिन है, सो यहा बहुत भीड थी। इस भीड मे रामदीन भी अपना भाग्य चकरी पर चढाता गया परन्तु उसका रुठा भाग्य नहीं माना ओर हठात् सफिये की झोली मे जा गिरा। हताश मन से रामदीन ने सदैव की तरह अब कभी भी इस गली मे नही आने की कसम दुहराई और वह लडखडाते कदमो से गली के बाहर आ गया। पगार के नाम पर उसके पास अब मात्र सत्रह रुपये शेप बचे थे।

गहरी निराशा मे डूबा रामदीन हाफता हुआ सा गली के नुक्कड पर बैठ गया। महीने भर का खर्च कैसे चलेगा? उसकी दवा कहा से आयेगी? यौवन की दहलीज पर खडी जानकी फटी फ्राक पहने कितना शर्माती है? उसकी बार-बार की फर्माईश पर वह उसके लिये साडी कैसे ला पायेगा? उसका दिमाग सैकडो कैंसले सवालो से घिर कर चकरा उठा। घर जाने के विचार मात्र से ही उसका दिल दहल उठा। उसका शरीर मुर्दे की भांति ठण्डा पड गया। मस्तिष्क के विपैले प्रश्नो ने उसके जर्जर शरीर को कपकपा कर पसीने से नहला दिया।

आलीशान मोटर कार की तेज रफ्तार से उठी हवाओ के झोके ने उसको थोडी सी ताजगी प्रदान की। उसने बाये कान मे ठुसी अध-जली बीडी का टोटा निकालकर सुलगाया व ढेर सारा धुंआ फेफडो मे निगला। इस धुंए को फेफडो से मुक्ति के पहले ही उसको खासी के तेज तूफानी दारे ने आ जकडा। खासते-खासते वह दोहरा हो गया। ऑखे सघर्प मे पराजित होकर बाहर की ओर उबल पडी। खासते-खासते जब दौरे का प्रभाव कम हुआ तो उसके फेफडो ने बीडी के धुऐ के स्थान पर ढेर सारा गाढा बलगम

लाल लाल खून से सना उगल दिया। कंपित शरीर को दीवार का सहारा देकर रामदीन उकडू होकर बैठ गया।

घडी, आधी घडी के बाद रामदीन की हालत कुछ-कुछ सयन होकर सामान्य हुई। वह घुटनो पर दोनो हाथो का भार देकर उठ खडा हुआ। सोचा उसकी मौत बहुत नजदीक आ चुकी है। हाँ आँ शायद कुछ ही दिनो मे फिर क्यो ना जानकी का भी भविष्य सुनिश्चित कर दिया जाये। हॉ-हॉ मै यही करूँगा और कल से ही उसे 'काम' पर लगा दूँगा। इस विचार ने रामदीन को असीम शांति प्रदान की। अब वह अपने आप को बहुत हल्का व प्रसन्नचित महसूस कर रहा था। इस निर्णय के साथ ही उसके मस्तिष्क मे शैतानियत ने एक और निर्णय करवा दिया। दारु पीने का फैसला। अरे! उसके सामने ही तो वह देशी-शराब का ठेका है। जहाँ पर बैठा मुस्कुराता हुआ सेठ भूरे खा कलाल हमेशा की तरह जैसे हाथ के इशारे से उसे बुला रहा हो। मुझे ठेके पर जरूर जाना चाहिये और फिर आज पगार का दिन है। मै जरूर जाऊँगा और पीऊँगा।

रामदीन जैसे ही कापते शरीर से ठेके की ओर बढा वैसे ही उसके दिमाग मे एक प्रश्न कौध गया गृहस्थी? गृहस्थी का विचार मिथ्या ही नही बल्कि अन्दर ही अन्दर बेहद खोखला भी है जैसे पहले उसकी पत्नी सतियाँ उस पर आश्रित थी और अब वह सतियॉ पर आश्रित हो गया। रामदीन ने आगे सोचा उसकी मृत्यु के बाद सतियाँ फिसल कर जानकी के सम्बल पर परजीवी हो जायेगी।

इस प्रश्न पर तर्क-वितर्क के विश्लेषण का गहरा प्रभाव रामदीन पर पडा। जिससे उसकी हड्डियो के ढाचे मात्र काया मे अदम्य साहस का सचरण हो गया। वह एक हाथ से वर्दी की कमीज की जेब टटोलता हुआ, अपग किलबिलाते हुये कीड़े की तरह रेगता हुआ, जिन्दगी की फिसलन भरी राहो पर फिसलता हुआ, शराब के ठेके की ओर बढ चला।

OOO

हज़ार पायॉ

मिशनरी, वातानुकूल, भव्य सेनेटोरियम जो, चिकित्सा क्षेत्र के विश्वस्तरीय मापदडो की पूर्ति करता था के आलीशान कक्ष मे जब उसे होश आया तब उसकी जर्जर हो चुकी समस्त ज्ञानेन्द्रियो ने सामुहिक रूप से एक साथ प्रयास करके, इस नये शानदार वातावरण से रूबरू होने की सिद्त से पुरजोर कोशिश की।

परन्तु उसकी देह की समस्त शक्ति, तार-तार हो चुकी थी। उसकी त्वचा झुर्रियो से भर कर लटक चुकी थी। जिस पर खुजली के चकत्तो मे उपस्थित परजीवी उसकी काया के अन्तिम रक्त कणिकाओ को चुसने मे मशगूल थे। उसका शरीर मात्र हड्डियो के अस्थि-पजर के अलावा कुछ भी शेष नही रह गया था। सिर के बाल चमडी के नैसर्गिक स्वरूप के लुप्त हो जाने से झडकर, उसकी खोपडी को गजा कर ककाल के रूप मे चमका रहे थे।

चेहरे पर मास का लम्बा लोथडा उसके, नाक होने का आभास करवा रहा था। जिसके दोनो तरफ मिचमिची छोटी-छोटी आँखे जो कीच-कादा से भरी हुई थी। उस जिन्दा लाश के चेहरा भी है, का अहसास करवा रही थी।

चिकित्सा-विज्ञान के अनुसार वह शख्स पिचानवे प्रतिशत मृत्यु को प्राप्त कर चुका है, उसके शरीर के समस्त अग आन्ते, लीवर, गुर्दे, सिकुड कर निस्प्रभावी दशा की ओर तीव्र गति से अग्रेसित हो रहे थे। उसके फेफडो जिनमे, सवा सात करोड वायु कोष्ठक होते है। तार-तार होकर लकडी के ठूठ की मानिद कडे हो रहे थे, फुफ्फुँसो का एक तिहाई हिस्सा ही क्षय रोग के किटाणुओ से अपराजित रह गया। जो उसे सास रूपी जीवन को इस ससार से जोडे हुये था। सम्भवत सास के आदान-प्रदान के कारण ही यह शख्सियत प्रतीकात्मक रूप से जिन्दे व्यक्तियो की श्रेणी मे थी।

अटक-अटक कर गहरी सासे, सासो से हृदय का सचालन और उसके दिमाग तक रह-रहकर, गाढे काले-काले खून के साथ पहुँच रही ऑक्सीजन उसके मस्तिष्क की अनैच्छिक क्रिया विधि से उसे अभी मृत घोषित नही किया जा सकता। कुछ पैलो उपरान्त यथेष्ठ ऑक्सीजन रूपी

प्राण-वायु से, फेफडो, हृदय और मस्तिष्क के एक साथ सामुहिक प्रयासो के परिणामस्वरूप, इस बार उसे होश ही नही आया बल्कि उसने अपनी ऑखे भी खोली। कादे-कीच से भरी ऑंखो मे से उसने अपने आस-पास के वातावरण का अवलोकन किया। उसने शात, आरामदायक अस्पताल के वातावरण मे अपने आपको उपस्थित होने का अहसास किया।

ड्यूटी पर नर्सिंग स्टॉफ के कमरे मे प्रवेश के साथ ही उसका एहसास यर्थाथ मे तब्दील हो गया कि वह वास्तव मे ही अस्पताल की रोगी शैय्या पर है। गोरी-चिट्टी, सुन्दर नाक-नक्से लिए, छरहरी लगभग पौने छट फुट लम्बी, युवा फीमेल नर्स ने दो मरीजो के इस कमरे मे, पहले खिडकी के पास सोये वेड न तेरह के मरीज का निरीक्षण किया जो चारपाई से लगी खिडकी के बाहर कुछ तॉक रहा था। फीमेल नर्स उसकी ऑक्सीजन की मशीन को वद कर रही थी फिर उसके मुँह से ऑक्सीजन का मॉस्क हटा कर मुस्कुराते हुवे उससे पूछा-'गुड मार्निंग, मिस्टर सिह साब! रात को दमे का दौरा तो नही आया?'

'हॉ .रात ठीक ठाक ढग से गुजरी!' कह कर शब्दो और अपनी गर्दन हिलाकर मि सिह ने सिस्टर मिस प्रकाश कौर का अभिनन्दन किया। सिस्टर प्रकाश कौर उसके बेड न चोहदा की ओर मुडी और अपने काम मे व्यस्त हो गई। उसका पुरा ककाली ढाचा, कृत्रिम मशीनो से सजाया-सवारा गया था। उसके दोनो हाथो मे ग्लुॅकोज की नलियॉ लगी हुई थी। मुत्र मार्ग पर प्लास्टिक की थैली लटकाई हुई थी तो कमर के दोनो तरफ चीर-फाड कर नलकियो के द्वारा डायलिसिस की मशीन से जोडा हुआ था। उसके मुँह पर ऑक्सीजन का मॉस्क लगाकर, ऑक्सीजन की मशीन से जोडा हुआ था। उसे लगा जैसे उसका सम्पूर्ण शरीर मध्य कालीन युद्धो मे वीर योद्धाओ की तरह, जिरह-बख्तरो से सुसज्जित किया हुआ है। और वह इन्ही कृत्रिम चिकित्सीय अगो के सहारे ही अब तक जिन्दा इन्सानो की क्षेणी मे है। उसके चेहरे से ऑक्सीजन का मास्क हटा कर प्रकाश कौर ने आश्चर्य मिश्रित शब्दो से पूछा-'आपको होश आ गया, आप पूरे अठारह दिनो से बेहोशी मे थे। अब आप कैसे हे, मिस्टर ?' गुॅनगुने पानी मे निचुडे हुए नेपकीन से, प्रकाश कोर ने उसके चेहरे ओर ऑखो को साफ किया और ऑक्सीजन का मास्क पुन उसके चेहरे पर चॅम्पा कर दिया।

तकरीबन दो माह के समय के अन्तराल के बाद, चिकित्सा क्षेत्र की विश्व-स्तरीय सक्षमता की बदौलत...मरणासन्न ये दोनो बेड न चौहदा वाला अठारह से उन्नीस तो बेड न तेरह वाला उन्नीस से बीस स्वास्थ्य लाभ का फर्क लिए हुये थे। मेडिसिन और मेडिकल साइन्स के उपकरणो के आधुनिकतम उपचारो से इन्हे मरने नही दिया गया। इनके शरीर के सारे क्षतिग्रस्त अगो को मानव द्वारा ईजाद किए गये मशीनो रूपी अगो के सहारे जिंदा रखा गया।

बेड न तेरह का मालिक मि सिह साब अब ज्यादा उत्सुकता लिए हुये बेड न चौहदा के मालिक की ओर ताका करता और बेड न चौहदा का मालिक अब कुछ-कुछ हरकत लिए जीभ हिलाकर बोलने का प्रयास करता। अन्तत शनै शनै दोनो मे परस्पर वार्तालाप प्रारम्भ हो ही गया। शुरू-शुरू मे मि सिह साब का वक्तव्य प्राय भारत वर्ष के नामी-गिरामी इस मिशनरी सेनेटोरियम की गौरव-गाथा से प्रारम्भ होता।

इस भव्य हॉस्पीटल की गगन-चुम्बी इमारत पन्द्रह माले की है। जो आसमान से बाते करते है। यहाँ के क्षय और दमा-रोग के विशेपज्ञ डॉक्टरो को सम्पूर्ण विश्व मे ख्याति प्राप्त है। यहॉ के नर्सिग कर्मी, हॉस्पीटल का मैनेजमेट डिपार्टमेट, हॉस्पीटल की साफ-सफाई, सम्पूर्ण विश्व के हॉस्पीटलो के लिए अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करते है। विश्व-प्रसिद्ध इस हॉस्पीटल मे विश्व भर के राष्ट्राध्यक्ष, विदेशी राजदूत, विदेशो के मत्री, सचिवो से लेकर विश्व विख्यात अर्थ-शास्त्रीयो, धनाढय परिवार के सभान्त व्यक्ति, क्षय और दमा रोग का इलाज करवाने यही आते है।

सृष्टी के तीन लोको मे से पृथ्वी लोक पर, सर्वोपरि मानवीय कृति इसान को अलौकिक परम परमेश्वर द्वारा विशेष रुप से वरदान स्वरूप प्रदान की गई दो विद्याओ बुद्धि और भापा का इस मरीज कक्ष मे सर्वाधिक प्रचलन था। शैय्या धारक तेरह आर चौहदा दोनो ही रोगी अपने देह के क्षीण काय हुये अगो को चाह कर भी हिलाने-डुलाने मे सर्वथा असमर्थ थे। अत वह दोनो ईश्वरीय देन बुद्धि और बोली का ही उपयोग बखूबी मे करते थे। स्पन्दन-रहित, ककाल रूपी शरीर को, बिना हिलाये-डुलाएँ वे अपनी वाणी का भरपूर उपयोग करते। यदा-कदा जब दमा और क्षय के किटाणुओ पर

मानव निर्मित औषधियॉ अधिक कारगर होती तो इनकी वाणी पर भी इसका प्रभाव दिखाई देता और वह अधिक मुखर हो उठते।

इसी दशा मे मि सिह साब अक्सर जज्बातो की लौ मे बह जाते आर अपनी पृष्ठभूमि के बारे मे वार्तालाप करने को अग्रसर होते। परपीडा दुर करने का गुण मुझे विरासत मे मिला है। राजसाही के जमाने मे जब राजतत्र था तब हमारे परदादा नामी रियासत के बडे तालुकेदार थे। जहॉ सब इसानो को न्याय मिलता था। कोई भी इशान हमारे तालुके मे भूखा नही सोता। किसी के भी साथ जाति, धर्म और वर्ग के आधार पर अन्याय नही होता था।

राजशाही के पतन और लोकशाही के आगमन के साथ ही हमारे पुज्य पिताजी राज्य के जाने-माने स्वतत्रता सेनानी रहे, और उन्हे लोक शाही मे 'ताम्र-पत्र' मिला। पिताजी के बाद स्वतत्र भारत मे मैने जन कल्याणर्थ राजनीति के क्षेत्र को चुना और आज तक मै कभी भी जनता की सेवा करते हुवे कोई भी चुनाव नही हारा हूँ। लोग मुझे अपराजित विध ायक के नाम से भी सम्बोधित करते है। मि सिह साब के काया विरोधी दिए गये लम्बे वक्तव्य पर दमे के जोरदार दौरे ने विराम लगा दिया।

आगामी वार्तालाप के दौरे को जारी रखने का नैतिक दायित्व अब शैय्या मालिक चौहदा नम्बर वाले का था। जिसने आज सुबह-सुबह ही ढेर सारा गाढा-गाढा तसला भर खून उगला था। सम्भवत क्षय ग्रस्त मुफलिस क्षीयकाय फेफडो मे रक्त का जमाव सहन नही हो पाया हो, फलत जीवन-रूपी रुधिर को फौरन-बाडी मान कर, शरीर के बाहर धकेल दिया हो। वस्तुत शैय्या मालिक चौहदा अब, अपने आप को हल्का और तरोताजा महसूस कर रहा था। कर्त्तव्य पालन करते हुवे उसने कहना शुरू किया।

'किस्मत की करतूत ने आपको मेरा पडौसी, मेरा हम कक्ष बनाया है। लाईलाज बीमारियो दमा और क्षय जैसे आपस मे बहन-भाई का रिश्ता रखती है, इन बीमारियो के धारक आप ओर मै भी परस्पर रिश्तेदार ही हुये न? है ना? मेरा तॅवारूफ इतना ही है कि परिवार, समाज, मोहल्ले और शहर ने मुझे नाम दिया ही नही? लावारिस, नामाकूल, जलील, कमीना, गदी नाली के कीडे आदि नामो से मुझे दुत्कारते हुए सम्बोधित किया जाता रहा है। एक ही स्थान, एक सा कार्य और कुछ महीनो के हरेक अन्तराल मे

उसी विशिष्ट स्थान रूपी बदीगृह मे पाये जाने के कारण सरकारी दस्तावेजो मे मेरा नाम हजारपाँया अंकित है। अब आज से आप भी मुझे बेड न चौहदा के स्थान पर 'हजार पाया' के नाम से पुकार सकते है श्रीमान!

अचम्भा मत करो मित्र! हमारी दुनियाँ मे ऐसे नाम आम है। जब तुम अपना जीवन-चक्र का वृन्तात सुना रहे थे। तब मुझे भी बेहद ताज्जुब हुआ, क्या! पृथ्वी लोक पर ऐसा भी समाज है जिसका तुम वर्णन कर रहे थे। सच कह रहा हूँ बन्धु! मैने सद्भावना, करूणा, लोक-कल्याण, धर्म, सत्य, ईमानदारी, सदाचार आदि शब्दो को पहली बार की सुना है। हमारे समाज मे कपट, चोरी, धोखा, जालसाजी, जबरजिना, अप्राकृतिक शारीरिक सबध, जेब कतरी, घृणा, पुलिस, थाना, कोर्ट-कचहरी, रिमाण्ड, हिरासत, सजा, जेल आदि नामो की ही प्रमुखता रहती है।

हमारे समाज के उम्र दराज मौजिज लोगो के द्वारा मेरे बारे मे बताया जाता रहा है कि इस हजारपाँया की माँ कुलटा वेश्या थी। जो इसका जन्म होते ही, इसे शहर के रेलवे जक्सन के रेल यार्ड मे माल गाडी के खाली पडे डिब्बे मे छोडकर चली गई। यदि यह पुत्र के स्थान पर पुत्री होता तो शायद वह इसे, लावारिस दशा मे छोडकर नही जाती क्योंकि जिस्म फरोशी के कारोबार मे पुत्री उसके बुढापे का सहारा बनती। उनके पुश्तैनी धन्धे की वारिस होती जबकि पुत्र वेश्या समाज के लिये नकारा व बोझ माना जाता है।

ब्याही हुई झबरी कुत्तियों के पिल्लो के साथ उसका शैशव काल बीता तो बचपन औघड बाबा की कुटिया मे, उम्र की छठी, सातवी पायदान पर ही उसने कमाना-खाना शुरू कर दिया। प्रत्येक बडे शहर का रेलवे जक्सन प्राय अन्तर्राज्यो नकबजनो, जरायम पेशा वृति के लोगो का नैसर्गिक घर होता है। जहा उसे चोरी, जेब कतरी, लूट, हत्या आदि की अच्छी ट्रेनिंग स्वत ही प्राप्त हो जाती है। दिन भर चोर-उच्चको की टोली मे भिखमगो का रूप धरे, सम्पूर्ण शहर को अपना घर मानकर, उदर पूर्ति हेतु भीख मागकर खाद्धान एकत्र करना उसके लिए ज्यादा दुश्कर कार्य नही था। रातो के अँधियारे मे विशाल यार्ड मे खुले आसमान के नीचे, उसके नाक-नक्स जो दूसरो की तुलना मे अच्छे थे कि वजह से उसको, हम बिस्तर करने मे अक्सर युवाओ, प्रौढो मे मारपीट हो जाती। दारू, डोडा,

चरस, गाजा आदि के नशेडियो व कुत्सिग वृति के लोग उसे पास सुला कर चिपटाते, चाटते, लाड लडाते, तरह-तरह के आसन बनाते कुछ पलो के अपने लिये जिस्म से सटाकर हिचकोले मारते और उसके बाद सम्पूर्ण रात भर सुख-चैन, आराम व पुरसुकून से सोने का मौका देते।

यौवनवस्था मे शारीरिक ताकत और प्राकृतिक बदलाव के फलस्वरूप वह भी वही सब करने लगा जो अब तक बचपन मे उसके साथ किया जाता रहा। जवानी की तीव्र शारीरिक भूख से त्रस्त होकर उर्मी नामक युवती के पति सूरजमल की उसके हाथो हत्या हो गई। जिसके साथ ही पुलिस, रिमाण्ड, ज्युडिशल कॅस्टडी, हवालात, जेल, वकील, कोर्ट-कचहरी, तारीको के साथ-साथ, अपराध जगत के विश्वविद्यालय, जेल मे उसका नामाकन हो गया।

इस नामाकन के साथ ही, उसने अगले बीस सालो तक बडी-बडी जेलो के कुविख्यात, अपराध सरगनाओ, मॉफियाओ से जुर्म-जगत मे कुशलता, दक्षता प्राप्त करके अपने नाम का डका बजा दिया। भीषण मानसिक त्राण, उम्र की ढलान और बढते हुये दुश्मनो के साथ ही उसका पतन होना शुरू हो गया। दुर्दिनो मे शरीर का साया भी साथ नही देता, क्षय रोग की गभीर व्याधि ने उसके शरीर को धीरे-धीरे दीमक की भाँति चाटना शुरू कर दिया। वह अपने ही शरीर का खून उगल-उगल कर निढाल हो जाता। आवारा पशुओ का जीवन व्यतीत करता हुआ, शहर के कब्रिस्तान को उसने अपना नया अड्डा बनाया, जहॉ के ट्रस्टीयो ने उसे वहा का अवेतनिक चौकीदार घोषित कर दिया।

शमशान मे जलाये जाने वाले मुर्दो की लाशो के साथ लाये गये बॉसो, कफनो, व अन्य सामग्री को इकट्टा कर, वह पुन बेच देता। जो कुछ मिलता उससे अपना गुजर-बसर करता। तपेदिक के बढते मर्ज और ऑतो के कुलबुलाने ने उसे अधमरा कर नकारा और बेबस कर दिया। रात को चौराहो पर होने वाले टोने-टोटको और कब्रिस्तान मे औघाडी बाबाओ के द्वारा मृत-आत्माओ को बुलाने के आह्वान की तान्त्रिक क्रियाओ पर वह नजर रखने लगा। वहॉ से जो भी मिलता, प्राप्त कर उदर पूर्ति करता। उसके क्रबगाह मे की गई ऐसी ही एक तांत्रिक क्रिया के बाद शेष रही मदिरा और कच्चे सड़ाध मारते बासी गोश्त को खाने से वह मरणासन्न होकर

वेसुध हो गया था।

लगातार तीन दिन तक बेहोशी की हालत मे पडे रहने के बाद शव यात्रा मे आये शहर पादरी सर जोजफ की नजर उस पर पडी जिन्होने उसे यहाँ इस हॉस्पीटल तक पहुँचाया।

हजारपॉया को इस हॉस्पीटल मे आये सात माह व्यतीत हो चुके थे। उसकी दशा अब धीरे-धीरे सुधरने लगी। अब हजारपाया, मि सिह साब की तरह ही दोनो हाथो की कोहनियो पर, जिस्म का बोझ डालकर सरकता हुआ पलग से सटी दीवार तक पहुँचने मे सक्षम हो चुका था। हजारपॉया दीवार का सहारा लेकर पैतालिस डिग्री का कोण बनाते हुवे, आसानी से बैठने लगा।

मि सिह साब को अब लगातार मशीनी ऑक्सीजन की जरूरत महसूस नही हो रही थी। वे अब इत्मिनान से तकियो का सहारा लिये हुये, टेक लगाकर काफी देर तक पलग के पास वाली खिड़की से बाहर ताकने लगे थे। मि सिह साव को दमे का दौरा हफ्ताह मे अब एक दो वार ही रात के समय पड रहा था। नर्सिग कर्मियो के द्वारा मि सिह साब को टेबल घटी उपलब्ध करा दी गई ताकि उनको दौरा पडने पर वह घटी वजा कर नर्सिग कर्मियो को सूचित कर सके। घटी के बजते ही नर्सिग कर्मी कुछ ही अन्तराल मे वहा पहुँच जाते और उनके मुँह पर मास्क लगाकर, ऑक्सीजन की सप्लाई चालू कर देते जिससे उनकी जान बच जाती।

हजारपॉया की साप्ताहिक मेडिकल रिपोर्ट मे, उसके सभी अग अब धीरे-धीरे क्रियाशील होने प्रारम्भ हो गये थे। हजारपॉंया की काया मे नया रक्त बनना शुरू हो चुका था। जिससे उसकी व्याधि तेजी से घट रही थी। हजारपॉया को भी अब थोडा-थोडा ईश्वर, सत्य, धर्म मे विश्वास होने लगा था। उसके मन मे एक ही टीस बार-बार उठती कि मि सिह साव खिडकी के बाहर सुहावने और मनोरम परिदृश्य का अकेले अकेले लुफ्त उठा रहे है। ईश्वर इनको जल्दी से जल्दी अच्छा करे जिससे हॉस्पीटल वाले इनको डिस्चार्ज कर देवे और इस रूम मे वरिष्ठ होने के नाते खिडकी वाला वेड उसके कब्जे मे आ जाये।

कल मि सिह साब ने उसे खिडकी के बाहर के दृश्यो की अगली कडी के रूप मे बताया कि खिडकी के सामने वाले फ्लैट के नवयुवक की

शादी हो चुकी है। उसकी नव-यौवना पत्नी अत्यन्त ही खूबसूरत है। नाईटी पहने नववधु के द्वारा रात्रि के लगभग ईग्यारह बजे बॉलकानी मे आकर खिडकी के पर्दे बद करना और लाईट ऑफ करने से मि सिह साब को अपने घर, अपने पुत्र व पुत्रवधु की याद दिलाता है। सुबह मुँहअंधेरे इस नव-विवाहित युवती के द्वारा पुन बॉलकानी मे आकर, खिडकी के पर्दे हटाने का कार्य मि सिह साब को जैसे रोमाच से भर देता है।

हजारपाँया और मि सिह साब के बीच कई बार मौखिक समझौता हुआ कि वे परस्पर अपने-अपने बेड परिवर्तित कर लेवे। हमेशा के लिऐ नही तो कम से कम दिन मे या रात मे, ताकि दोनो ही खिडकी के बाहर के नजारो का आनद ले सके। परन्तु मिशनरी हॉस्पीटल के कडे-कानूनी, कायदो और शारीरिक रूप से बेबसी के चलते ऐसा हो नही सका। यह हसरत हजारापायॉ के मन की मन मे ही दबी रह गई।

प्रकृति के सर्वदा प्रतिकूल दोनो ध्रुव, सत्य-असत्य, धर्म-अधर्म, सदाचारी-व्यभिचारी को कुदरत ने एक साथ परिस्थितियो वश कर दिया था। परस्पर लम्बे समय से एक साथ रहे इन दोनो विपरीत ध्रुवो ने आपस मे सामजस्य बैठा लिया। अब जबकि इन दोनो से ही मौत पीछे छुटती और जिन्दगी बॉहे फैलाकर इनका खैर मकदम करने को आतुर हो रही थी। इसी क्रुर काल मे हजारपॉया ने मन ही मन निर्मम, फैसला कर लिया। वह अब मौके का बेसब्री से इन्तजार करने लगा। हजारपाँया को ऐसा कुअवसर अगली ही रात को प्राप्त हो गया जब मि सिह साब को दमे का दौरा पडा और उन्होने यथा स्थान रखी टेबल घटी को जोर से दबाया।

गहरी नीद का बहाना लिए, बनावटी खर्राटो की आवाज करता हजारपॉया अपनी पैनी निगाहो से कमरे की प्रत्येक गतिविधि का सूक्ष्म निरीक्षण कर रहा था। नाईट डयुटी मे आई मिस प्रकाश कौर ने एक क्षण की देर किए बिना धडधडाते हुये कमरे मे प्रवेश किया। यत्रवत मि सिह साब के चेहरे पर ऑक्सीजन का मॉम्क लगाया और ऑक्सीजन की मशीन चालू कर दी। मिनट-दो मिनट बाद मि सिह साब को सयत होता देख वह अपने ड्युटी रूम मे चली गई। हजारपॉया का पापी मन का शैतान जाग उठा था। सधे हाथो से उसने ऑक्सीजन मशीन का लीवर ऑफ कर दिया। धीरे-धीरे ऑक्सीजन की नली मे से ऑक्सीजन का आना बद हो गया

जिससे मि सिह साब के चेहरे और शरीर का जॉगुराफियॉ विकृत होने लगा, उनका सारा शरीर ऐठनो के सागर मे झुलने लगा, ऑखे उवल पडी और एक तेज धक्के के साथ ही मि सिह साब का शरीर शात होकर मृत अवस्था मे बदल गया। तब हजारपॉया ने कुशल हत्यारे का रूप धारण कर दक्षतापूर्ण ऑक्सीजन की मशीन के लीवर को पुन ऑन किया और सो गया।

नियमित अन्तराल के बाद जव नर्सिग कर्मी ने उसके कमरे मे प्रवेश किया तो हजारपॉया जानबुझ कर खर्राटो की आवाजे करता हुआ गहरी नीद मे सोने का किरदार बखूबी निभा रहा था। प्रकाश कौर जब मि सिह साब के पास पहुॅची और उन्हे निस्चेष्ट पाया तो वह सन्न रह गई। आनन-फानन मे उच्च स्तरीय, विशेपज्ञ डॉक्टरो से कमरा भर गया। मि सिह साब के निर्जीव काया का मेडिकल मुआवना करके उन्हे मृत घोपित कर दिया गया। सुवह की पहली किरण के साथ ही मि सिह साब के बेड न तेरह पर, उनकी याद दिलाने वाली एक भी वस्तु शेप नही थी।

सुबह की सफाई के बाद जव डॉक्टरो की टीम हजारपॉया के नियमित चैकअप के लिये आई तव हजारपॉया ने दबी आवाज मे उनसे गुजारिश की कि उसका बेड बदल दिया जाये। डॉक्टरो के दल ने सहज भाव से स्वीकृरोक्ति प्रदान करते हुये कहा-हजारपॉया लगता है सात माह मे पहली बार आपको रात मे इतनी गहरी नीद आई। यदि तुम जाग जाते तो शायद सहृदय, स्नेही मि सिह साब को बचाया जा सकता था। खैर मृत्यु अटल है। आज इन्हे तो कल तुम्हे भी मृत्यु अपने आगोश मे ले लेगी।

हेड ऑफ दी डिपार्टमेट के निर्देशानुसार जब नर्सिग कर्मी बुबरीक खान उसका बेड चेन्ज करने आया तब हजारपॉया का दिल प्रफुल्लित हो बल्लियो उछल रहा था। बुबरीक खान ने वेड न तेरह पर नया वेड-शीट विछाया, तकियो के कवर चेन्ज किए और बुतवत् हजारपॉया के खाने-पीने के बर्तनो आदि को खिडकी के पास रखा, और उसे दोनो वॉहो मे भरकर वेड न तरेह की खिडकी के पास लेटा दिया। हजारपॉया ने बुबरीक खान से अनुनय विनय किया कि वह उसको खिडकी के पास टेक लगवा कर बिठा दे ताकि वह कुछ ताजी हवा ले सके। बुबरीक खान ने यत्रवत् उसकी आरजू की पूर्ति हेतु, खिडकी के दरवाजो के पास, तकिये लगाकर, उसको सहारा देकर खिडकी के पास बैठा दिया ताकि वह तसल्ली और आराम से

खिडकी के बाहर के नजारो को निहार सके।

पूर्णतया सतुष्ट और पुरसुकून भाव से, हजारपाँया ने उल्लासित होकर खिडकी के बाहर झाका तो उसे गहरी निराशा के साथ भीषणतम् आघात लगा। क्योंकि खिडकी के बाहर झाकने पर उसे ना कोई सडक नजर आई ना कोई चौराहा दिखा, ना कोई सडक पार पॉश कालोनी दिखी, ना वह फ्लैट नजर आया जहाँ नाईटी पहनने वाली नवविवाहित युवती रहती थी। खिडकी के पार उसने जो देखा एकाएक उस पर उसको विश्वास ही नही हुआ। हजारपाँया ने अपनी मिचमिची आँखो को अपनी हथेनियो से सहलाया और पुन खिडकी के बाहर झाका तो उसे हॉस्पीटल का पिछवाडा दिखाई दिया। जहाँ गदगी के ढेर के ढेर लगे हुवे थे। इन ढेरो की सडान्ध भरी दुर्गन्ध मे कुत्तो, गधो, सुअरो व गिद्धो के कई झुण्ड के झुण्ड आपस मे लडते हुवे हिसा का ताण्डव नृत्य रहे थे।

OOO

सबक

उजास बहुत ही नेक दिल, सहृदय, सदाचारी और मेहनती किसान था। दस-बारह वर्षो पूर्व उसके पिताजी के देहान्त ने उस पर घर-कुटुम्ब की भारी भरकम जिम्मेदारी डाल दी थी, परन्तु उजास के धीरज, साहस एव समझदारी ने मुसीबतो को भी चुनौती के रूप मे लिया और परिणामस्वरूप आज वह गाँव का ही नही बल्कि आसपास के गाँवो की मानव जाति का आँख का तारा बनकर आभा मडल मे ध्रुव नक्षत्र की भाति आकाश मे दमक रहा था।

दु खो, अभावो, द्वेष क्लेशो के महासागर मे जुझता हुआ उजास वर्तमान मे अपनी हाड तोड कठोर परिश्रम के फलस्वरूप अथाह वीरान, भयावह निर्जन झुलसा देने वाले थार मरूस्थल मे 'आधुनिक भागीरथ' का रूप धारण किये हुये विकास, प्रगति, उन्नति और खुशहाल जिदगी से ओत-प्रोत होता हुआ, सार्थक जीवन की जीती-जागती मिसाल बनकर आसपास के क्षेत्र के ईर्ष्यालु, प्रदुषित वातावरण को नया सवेरा, नया जीवन देने के लिए कस्तूरी सा महकता हुआ, मानव श्रम का शान्ति पुज बनकर साक्षात् दृष्टात प्रस्तुत कर रहा था।

अग्रिम एव कुशाग्र बुद्धि के धनी उजास ने वीरान रेतीले थार मरूस्थल मे हरित क्रॉन्ति लाने का सपना बचपन से ही सजोये रखा था। कालातर मे इसे अमलीजामा पहनाने के लिये तीन वर्ष पूर्व उसने अपने खेत मे कृषि कुआँ खोदने के उपक्रम से इसकी शुरूआत की, शनै शनै काल चक्र के साथ-साथ शकाओ आकाक्षाओ के बीज अकुरित होने लगे। परन्तु निर्माणाधीन कुऐ की खुदाई मे बजरी के आ जाने से इनको भारी शिकस्त प्रदान की तो उजास के दिल को भी राहत प्रदान हुई। फुट दर फुट कुआ खुदता रहा और उजास का हौसला क्षण प्रति क्षण बढता रहा परन्तु उसके आर्थिक स्रोत रीतते रहे।

बाधाओ, अभावों व आर्थिक मुसीबतो ने उजास का उपहास उडाना प्रारम्भ कर दिया परन्तु दृढ निश्चयी, अपनी धुन का पक्का यह भगीरथ उजास सम्पूर्ण तन्मयता एव मनोयोग से अपने सार्थक प्रयास मे कर्मयोगी की भाति डटा रहा। अतत उजास ने पाताल तोडकर अपने कुऐ को अथाह जल राशि से लबालब कर ही लिया।

समय के साथ-साथ उजास के कुऐ का विधुतीकरण, बोरिंग एव लेरिंग कार्य भी पूरा होकर यह कुआ अपने मालिक की पुश्तो तक समर्पित

भाव से सेवा करने के लिये सगर्व सीना तान कर उसके साथ हो गया। उजास की अकथनीय हाडतोड सफल मेहनत की रगत के रूप मे हजारो वर्षो की प्यासी भू-सपदा आज उजास को एक मूँगफली के बीज के रूप मे लाखो मूगफलियाँ देने के लिये कटिबद्ध होकर तत्पर हो उठी थी।

सवेदना की प्रतिमूर्ति उजास के दिल मे इस बात का रत्ती भर भी रज नही था कि उसका रोम-रोम कर्ज मे डुबा हुआ है। परन्तु उजास को आज के कलुपित, प्रदूपित, अमानवीय और झकझोर देने वाले तानो, आलोचनाओ, झुलसा देने वाली जलन ईर्ष्या, नफरत एव असहयोग का दु ख उसकी अतर्रात्मा को भीतर तक बीधकर तार-तार कर रहा था। गाँवो की गलाकाट प्रतिस्पर्धा, ईर्ष्या, जलन का नगा ताडव देखकर कभी कभी तो उजास भी नीरव अधकार मे विलीन हो जाने की सोचना परन्तु धीर-गभीर दृढ निश्चयी प्रवृति के कारण वह पुन अपने सत्कर्म मे जुट जाता।

गाँव के ही नही, बल्कि दूर-दूर के गाँवो के ग्रामीण, क्षेत्र मे पहली बार पनपती मूगफली को साक्षात् फलते-फूलते देखने की जिज्ञासा की ललक लिये उजास के खेत पर दिन-रात आते-जाते रहते। आगतुको के छदम् सहानुभूति के रप मे जहर बुझे व्यग्य वाणो की तीखी कटारी का सा पैनापन लिये ईर्ष्या के शब्द उजास के हृदय को गहरे तक बीधते रहते।

आज भी सुबह तडके ही से तथाकथित हितैपियो की प्रखर टोली जो जलन, ईर्ष्या से जल कर कोयला हो चुकी 'काली-स्याह' आत्मा को सफेद झक बुगले के से सफेद आवरण से तन को ढक कर उजास के खेत मे विराजमान थी। बिध-विध कर क्षत-विक्षत् हो चुके उजास के बौद्धिक चार्तुय ने करवट लेकर कुछ कर दिखाने की ललक मे इन प्रचड आलोचको को 'सबक' देने का निर्णय मन ही मन कर लिया। खेत का काम बीच मे ही छोडकर मर्मान्तिक पीडा का अहसास लिये उजास अपने इन तथाकथित हितैपियो के पास आया तथा इनकी आवभगत के लिये हुक्का-चिलम लाने के लिये अपने पुत्र को पुकारा। पुत्र ने पिता के हुक्म की तामील की एव अगले फरमान की प्रतीक्षा मे शालीनता से खडा रहा।

उजास ने दु खी मन से खेत मे कार्य पर लगे सैकडो श्रमिको को पुत्र की मार्फत कहलवाया कि 'खेत का काम बद कर देवे तथा खेत मे जितने भी 'गुगलिये' है। उन सब गुगलियो को चुन-चुन कर एकत्र करके उसके पास लाये।' पिता के आदेश की पालनार्थ उसका पुत्र सरपट श्रमिको

की ओर लपक लिया। स्वय उजास ने फावडा उठाया और पम्प रूम के सामने एक गहरा खड्डा खोदने मे लीन हो गया।

ईर्ष्यालु तथाकथित दृश्य पटल के परिवर्तन से विस्मृत होकर जिज्ञासा भरी कुटिल दृप्टी से आगामी नजारे की प्रतीक्षा करने लगे। घडी-दो घडी के उपरात खेत मे काम पर लगे श्रमिक अपने-अपने झोलो मे इक्ट्ठे किये गये गुगलियो को उजास के दिशा-निर्देशो मे उसके द्वारा खोदे गये गहरे खड्डे मे उडेलते रहे। जब खेत के सभी गुगलिये इस अजुबे खड्डे मे एकत्र कर लिये गये तो तथाकथित हितैपियो के टोले की अगुवाई कर रहे दुर्जन ने खीसे निपोरते, कृत्रिम उदासी से उजास की तरफ ताका और पूछा-'भैय्या' उजास आज की दिहाडी के हजारो रूपये आपने इन गुगलियो को इस खड्डे मे कैद करवा कर क्यो बर्बाद किये है?'

'मेरे भाई! दुर्जन, मै यह जानना और समझना चाहता हूँ कि क्या मनुष्य की मानवता और पशुओ की क्रूर पशुत्त्व मे अब भी कुछ अतर शेष बचा है या नही? बुझे मन से उजास ने प्रत्युत्तर दिया।

'वाह रे! मूर्ख उजास, तू तो बडा अक्लमद बना फिरता है क्यॉ तुझ मे इतनी भी समझ नही कि सारे के सारे गुगलिये कुछ ही घटो मे इस खड्डे मे से बाहर निकल आयेगे और तुझे अगुठा दिखा कर पुन खेत मे समा जायेगे?'

'ऐसा नही होगा!' उजास ने सयत होकर आत्म विश्वास भरे शब्दो मे कहा।

'ऐसा ही होगा! ऐसा ही होगा!! ओ! मुर्खाधिपति! और यदि ऐसा हुआ तो तेरे खेत की यह मूगफली की खडी फसल मेरी होगी अन्यथा मै अपने कुटुम्ब-कवीले सहित ताउम्र तेरे इस खेत मे बधवा मजदूर बन कर गुलामी करुगा। बोल बोल जल्दी से शर्त बद?' दुर्जन ने तीखे शब्दो मे आवेश मे आकर उजास को ललकारा।

लोहे को गर्म देखकर लुहार की अंतिम चोट करते हुये नपे-तुले शब्दो मे उजास ने कहा-'हॉ, दुर्जन मुझे तेरी शर्त मजूर है। तू मै और सारा गॉव आज यही पर रात भर जाग कर 'रातिजगा देगे तथा इन गुगलियो की गतिविधियो पर कडी नजर रखेगे। यदि इन मे से एक भी 'गुगलिया' कल सुर्योदय तक इस खड्डे मे से बाहर निकल आयेगा तो मे शर्त हार जाऊगा अन्यथा तुझे शर्तानुसार ताउम्र क्रीतदास बनकर इस खेत

मे काम करना होगा।'

इस अजीबो-गरीब शर्त का समाचार पलक झपकते ही जगल की आग की भांति समूचे क्षेत्र मे फैल कर चर्चा का विषय बन गया। सम्पूर्ण इलाके के लोग कौतूहल वश अपना-अपना काम धन्धा छोडकर गिरते-पड़ते हाफते-दौडते सरपट उजास के खेत मे जमा हो गये। भय, हैरानी एवं तिलस्मी विस्मय की चादर ने सबके मुँह ढाप रखे थे।

पहर बीता दो-पहर बीते चार पहर बीत गये सूर्य अस्त हो चला गो धुलि से रात भी गहराने लगी और मध्य रात के धीरे-धीरे ढलने के साथ-साथ सुर्योदय का समय हो चला था परन्तु कारू के कुबेर रूपी खड्डे मे से एक भी गुगलिया बाहर नही आ पाया।

सुर्योदय के साथ ही स्पष्ट और तीव्र प्रकाश पुज मे समस्त ग्रामीणो ने उस खड्डे मे देखा कि आधे से अधिक गुगलिये लहु लुहान, मृत दशा मे पडे हुये है। जीवित बचे शेष अब भी युद्ध मे घायल क्षत-विक्षत शरीर लिये अपने अस्तित्व को बचाने के लिये खड्डे की दीवार पर चढने को प्रयासरत है। परन्तु उसका सजातीय प्रतिद्वदी दूसरा 'गुगलिया' उसकी टाग को पकड कर वापस नीचे खीच कर उसे हम जातीय बनाने का सफल प्रयास कर रहा है। अतत इसी उठा-पटक ऊहापोह मे एक भी 'गुगलियो को खड्डे मे से बाहर निकलने मे सफलता प्राप्त नही हो रही है।

उजास के खेत मे एकत्र सैकडो-हजारो का जन समुदाय बिना एक शब्द कहे-सार्थक जीवन के मर्म का भेद खोलने वाले अप्रतिम प्रतिभा के धनी, ओजस्वी बौद्धिक चार्तुय से लबरेज, सदाचारी-कर्मयोगी उजास को भाव विह्वल होकर अपने कधो पर विजेता की भांति उठा कर आत्म विभोर हो रहा था। जन सैलाब का उल्लास-उजास की श्रेष्ठता को उसके जयनाद के हुकारो से स्वर्ग द्वार तक पहुँचने को आमादा हो रहा था।

वाचाल एव कुटिल दुर्जन एव उसकी टोली के लोगो को जैसे साप सूघ गया हो, उनको काटो तो जैसे उनमे खून ही नही हो। वे सभी आवाक्, हैरान विस्फारित, फटी-फटी ऑखो से मुर्तिवत एकटक उजास की ओर निरही भाव से निहार रहे थे। उनके मस्तक नत हो गये। आत्म ग्लानि, क्षोम, शर्म और अपमान से वे जमीन मे गडे जा रहे थे।

उजास के द्वारा वात्सल्य से भरा हाथ प्रेमपूर्वक कधे पर रखने ही दुर्जन बच्चो की तरह फूट-फूट कर रोने लगा। उजास ने उसे नही रोका

ताकि उसकी आत्मा को ईर्ष्या, जलन ने कलकित कर रखा था, वह पश्चाताप के आसुओ से धुल कर स्वच्छ हो जाये, परन्तु जन समुदाय के गुस्से, आक्रोश एव कठोर दड देने के निर्णय ने उजास की तन्द्रा तोडी उसने गभीर, शात सयत भाव से कहना प्रारभ किया-

'मेरे प्रिय बन्धुओ परम सम्मानीय भाईयो' ईर्ष्या, जलन, द्वेष और नफरत मानव जाति की सबसे बडी जातीय और घातक शत्रु है। जो मनुष्य की मानवता को नष्ट-भ्रष्ट कर देती है। वह समाज कभी भी विकासोन्मुखी नही बन सकता। जिसकी नस-नस मे जहर रूपी ईर्ष्या प्रवाहमान है। विप वेल की भांति जहा जहा भी ईर्ष्या, नफरत की आग होगी। वह समाज को जर्जर बना कर विनाश के गर्त मे धकेल देगी।

रात भर आपने देखा कि खड्डे मे से बाहर निकलने को आतुर 'गगुलियो' को सफलता मात्र इसलिये नही मिल सकी क्योकि उसका ही भाई, उसका ही सजातीय बधु, उसकी टाग खीचकर वापस जमीन पर गिरा देता था। विकास की तरफ उन्मुख व्यक्ति का जिस समाज मे उचित सम्मान नही होता। अतत वह समाज ही धीरे-धीरे पतन के गर्भ मे समा जाता है।

अत आज मानव समाज मे जब तक समर्पण, त्याग, वलिदान, आत्मोसर्ग, सौहार्द की भावना पुन बलवती नही होगी और जब तक पद -प्रतिष्ठा, मान-अपमान, तगहाल-खुशहाल, ऊँच-नीच, छोटे-बडे की खाई नही पाटी जायेगी। तब तक समाज मे सुसस्कार, सुचिता ओर सामजस्य का होना सभव नही है। अत त्याग, कर्मठता, लगन, सदाचार, भाईचारा और कठोर परिश्रम ही सफलता की कुजी है।'

उजास के शब्दो के साथ ही दुर्जन ने उसके पाव पकड लिये। सदाचारी, श्रमशील, उजास ने रूधे गले, भरी ऑखो से उसको भर्राते शब्दो मे कहा-'तुम्हारी जगह मेरे चरणो मे नही है..मेरे भाई..तुम्हारी जगह तो यहाँ मेरे हृदय मे है परन्तु हाँ दुर्जन जिदगी भर मेरी 'यह' बात हमेशा याद रखना -

'अपनी ही करनी का फल है ये नेकियॉ, ये रुसवाईयॉ
आपके पीछे चलेगी, आपकी ही ये परछाईयॉ।'

OOO

सतमासी का विवाह ठाकुर खानदान मे हुआ। विवाह के समय उसकी आयु मात्र तेरह वर्ष की थी। उसके पिता गरीब ठाकुर किसान परिवार से थे। जन्म के साथ ही सतमासी शापित कन्या थी क्योंकि उसका धरती पर प्रदार्पण, कोख मे पलने के नियत समय से दो माह पूर्व ही अर्थात् सात मास मे ही हो गया था। अनतत सब उसे सतमासी के नाम से जानते, पहचानते व पुकारते थे।

जिस ठाकुर खानदान मे उसका विवाह हुआ। वह आधा देहाती-आधा शहरी परिवार था। खानदान का मुखियाँ सरकारी सेवा मे था। जिससे उसका परिवार शहरी सस्कृति का था। इस ठाकुर परिवार के अपने गॉव प्रवास मे एक काली रात को ठकुराईन को काले नाग ने डस लिया। नवे महीने के पूरे पाठे गर्भ से गर्भित ठकुराईन, उसी रात एक कन्या को जन्म देकर स्वर्ग सिधार गई।

ठाकुर परिवार जब पुन शहर प्रवास को आया तो भयकर मुसीबतो से घिर गया। ठाकुर के सात बच्चो मे ज्येष्ठ पुत्र जो नवयुवक था से लेकर दुधमुही बच्ची तक सम्मलित थी। परेशानी यह थी कि ठाकुर अब घर-गृहस्थी सभाल कर चौका-बर्तन करे या आजिविका पर दफ्तर जाये? ऐसी विषम परिस्थितियो मे ठाकुर ने अपने ज्येष्ठ पुत्र की शादी कर, घर-गृहस्थी को पटरी पर लाने का निर्णय लिया। परिणामस्वरूप सतमासी ब्याह कर इस घर मे आ गई।

सतमासी जिसका भ्रुणावस्था मे समुचित विकास नही हो पाया था। सीधी-सादी, सरल, अल्प भाषी, सर्द मिजाज और कुछ-कुछ मद बुद्धि भी थी। ऐसी दशा मे उसे सौपे गये कार्य चुल्हा-चौंका तो वह बखूबी कर लेती परन्तु घर परिवार को भविष्य के लिये तैयार करने सजाने सवारने के लिये उसकी बुद्धि मे औकात नही थी।

सतमासी के विवाह के एक वर्ष बाद ही उसका पति फौज की नौकरी मे लग गया। समय के साथ-साथ सतमासी भी मॉ बनी और एक के बाद एक चार कन्याए उसकी कोख से उत्पन्न हुई। काल चक्र के घुमते, ठाकुर साब सेवानिवृत्त होकर गॉववासी स्थायी रूप हो गये। उन्होने अपनी शेष रही सभी सन्तानो का ब्याह किया। सतमासी का मझला देवर

कुछ उदण्ड प्रवृत्ति का था। सो वह शहर के कामधधे मे लग नही पाया। परन्तु उसका छोटा देवर शहर मे ही पढ लिख कर वही खप गया।

वयोवृद्ध ठाकुर का देहान्त होने पर सतमासी का पति फौज छोडकर गाव मे ही आ बसा। दोनो भाई अब गॉववासी हो गये। सतमासी का गॉव सदैव ही अकाल के थपेडो से जुझने वाला गॉव था। जहॉ चार पॉच वर्षो के अन्तराल के बाद बारानी खेतो से कुछ अनाज पैदा होता, शेष वर्षो मे वही फाका कसी लगी रहती।

पहाड से चली नदी ढलान की ओर लुढक कर अपना रास्ता बना ही लेती है। इसी प्रकार सतमासी के इस नगे-भूखे अभावग्रस्त गॉव के लोगो ने भी, जीने की विधा का गलत रास्ता अख्तियार कर लिया और उन्होने गाँव मे घर-घर देसी दारू की भट्टियॉ लगाई। जो आग उगलती, दारू बनाती, बेचती और उदर पूर्ति करती।

गॉव के इस अराजकता के माहौल मे फौजी भटक गया। दिन रात दारू की भट्टी से दारू पैदा करता, पीता और गाँव भर मे झगडा-फसाद करता। सतमासी मन मसोस कर रह जाती। धीरे-धीरे जब फौजी की काया दारू की मारक क्षमता झेल ना सकी तो उसने अफीम, डोडा लेना शुरू कर दिया। पोस्ती फौजी की हालत दिन व दिन बिगडती ही चली गई और एक दिन वह चल बसा।

विधवा सतमासी के उदण्ड देवर के हाथो मे जब इस खानदान को चलाने की बागडोर आई तो उसके ग्रामीण परिवेश पर शहरी सोच हावी रही। उसने पैतृक विरासत मे शेष बच रहे पचास बीघा के खेत मे आधुनिक तकनीकी से खेती करने की ठानी। परिणामस्वरूप कुछेक महीनो बाद ट्यूव वैल के कारण यह खेत बारानी के अभिशप्त श्राप से मुक्त होकर सिंचित खेत मे परिवर्तित हो गया।

सतमासी के लिये यह परिवर्तित काल खण्ड कुछ-कुछ सौभाग्यशाली रहा। जिसमे उसकी तीन पुत्रियो की तथा उसके देवर की दो लडकियो मे से एक की शादियाँ रच गई। अब सतमासी की एक मात्र पुत्री अनव्याही थी तो उनके देवर के दो पुत्र और एक पुत्री अभी भी कुवारे थे।

दिन रात काल चक्र का पहिया घूमता रहा। जिससे अब विधवा सतमासी वृद्धा हो गई और उसकी पुत्री और देवर के पुत्र जवान हो गये।

परन्तु अनहोनी के गर्भ मे कुछ ओर ही छिपा हुआ था। कालान्तर मे सतमासी का देवर भी काल के क्रुर पजो मे फसता चला गया। उस पर खेती व टय्यूव वैल का कर्जा बढता चला गया। यह खानदान अच्छे समय का सदुपयोग नही कर सका। सतमासी का देवर अपने क्रोध पूर्ण स्वभाव से वशीभूत होकर, कर्जो की मार, जवान पुत्रो के अवज्ञा पुर्ण व्यवहार को बर्दास्त नही कर सका और सप्नीक आत्महत्या कर बैठा।

विधवा सतामसी ने इस भीषण आघात को कलेजे पर लेकर सहन किया और देवर के दोनो पुत्रो व पुत्री को अपनी कोख मे आश्रय दिया। उसे कुछ-कुछ आस बधी हुई थी कि उसके देवर के जवान पुत्र जो अब उसके दत्तक पुत्र भी थे। अपनी भरी जवानी का करिश्मा दिखायेगे और कठोर परिश्रम रूपी वरदान से चट्टानो को भी चीर कर मीठे जल का स्रोत बहाकर खानदान की खोई प्रतिष्ठा को पुर्न स्थापित करेगे।

विधवा सतमासी का यह स्वप्न कोरा, मृग-मरीचिका ही साबित हुआ। जब चार पॉच वर्ष बीत गये। कामचोर, आलसी, पडखाऊ, पेटू दत्तक पुत्रो से खेती की सार सभाल नही हुई तो उधारी व कर्जो मे बढोतरी सुरसा के मुह की तरह फैलते ही चले गये। घर मे जवान पुत्रियो की आयु ढलने लगी। दत्तक पुत्र अपनी-अपनी गृहस्थी बसाने को बाडे फॉदने लगे, समाजिकता का रौद्र रूप विधवा सतमासी को धमकाने लगा। तब उसने सामुहिक रूप से टय्यूव वैल सहित जमीन बेचने के लिये फैसले पर अपना अगूठा टेक दिया और यह सभ्रात ठाकुर परिवार गॉव मे भूमिहीन होकर गॉव के अन्य लोगो ढोली, चमारो, डेढो की जमात मे सम्मलित हो गया।

गॉव के कुछेक बुर्जुग और निरपेक्ष मौजिज रसुखदारो ने जो विध वा सतमासी से वास्तविक गहरी सहानुभूति रखते थे ने उसे सुझाया कि एक अगूठे टेकने से प्राप्त लाखो की नगदी सतमासी स्वयम अपने और कोख जाई पुत्रियो के साथ सयुक्त खाता खुलवाकर रखे ताकि आगे उसको और पुत्रियो पर किये जाने वाले सामाजिक ब्यौहार मे उसे किसी का मोहताज नही होना पडे। विनास काले विपरीत बुद्धि, विधवा सतमासी की बुद्धि तो बैमाता ने उसे जन्म देते समय ही हर ली थी। सो अब प्रौढावस्था मे उसकी बुद्धिमना कैसे जागृत होती?

आपार नगद राशि के बहाव मे देवर के दोनो पुत्रो की शादियॉ

धूम-धाम से सम्पन्न हुई। देवर की शेष रही बेटी और स्वय सतमासी की पुत्री की शादी रचा कर उन्हे बाबुल के आगन से विदा कर दिया गया।

समय निर्बाध गति से अनवरत रूप से चलता चला जा रहा था। वक्त के बदलाव के साथ-साथ ससारिक लोग भी परिवर्तित होते गये। सतमासी अब घनी प्रौढता धारण कर चुकी तो उसकी पुत्रियॉ अधेड होकर जवान बेटे-बेटियो की मा ओ का रूप अख्तियार कर गई। विधवा सतमासी दत्तक पुत्रो के सामने भीख का टोकरा नही फैलाती।

बेचारी, दुखियारी, सतमासी जो अब भी अपने दत्तक पुत्रो-पुत्र वधुओ की सेवा-चाकरी मे जी जान से जुटी रहती। उनको चारपाई पर ही चाय, पानी, भोजन परोसती। उनके सुख दु ख का ध्यान रखती। गोबर से लिथडी अस्त व्यस्त, फटे-पुराने पहनावे के साथ सतमासी सदैव काम मे लगी रहती।

गायो-बकरियो की दुहारी हो या घर के आगे का मैदान रूपी बाखल की बुहारी, कच्चे मकानो को गोबर से लीपना हो या घर की कटीली बाड को दुरस्त करना हो, सारा गॉव जब सोकर उठता, तब वह विधवा सतमासी को किसी न किसी काम मे सलिप्त होता हुआ ही देखता और जब देर रात गये जब गॉव सोता तब भी वह इसे किसी न किसी काम को अजाम देते हुये ही पाता। चिटी को यदि किसी ने निठल्ला बैठा हुआ देखा हो तो वह विधवा सतमासी को ठाले बैठे देखता।

काल के क्रूर प्रहारो को झेलती-विधवा सतमासी की छाती को अब अपनी ज्येष्ठ पुत्री की पुत्री के शादी मे मायरॉ भरने का आघात झेलना था। सतमासी की नातिन की शादी नीयत हो चुकी। पुत्री, दामाद सामाजिक रीति-नीति के अनुसार अपनी वृद्धा मॉ सतमासी के साथ कुटुम्ब-कबीले को टीक (निर्मन्त्रित) चुके। सतमासी के बुढे जर्जर अस्थि-पजर मे जहॉ पहले-पहल सामाजिक कार्य का उत्साह हिलोरे ले रहा था। तो उसके दत्तक पुत्रो उनकी पत्नियो की छाती पर साप लौट रहे थे।

बुढिया-विधवा सतमासी का सब कुछ हडप चुके दत्तक पुत्र मायरॉ भरने मे खर्च होने वाले हजारो रुपयो को बचाने की जुगत सोचने लगे।

काईयॉ शातिर दिमागी, दत्तक पुत्रो को एक ऐसी कारगर चाल की सख्त जरूरत थी। जिसे सामाजिक ढाल बनाकर अपनी नैतिक जिम्मेदारी

को निभाने से बच सके। जहाँ चाह वहाँ राह के चलते उन्हे ऐसी साजिशपूर्ण युक्ति मिल ही गई और उन्होने अपनी ही बहन, अपनी ही भानजी, की शादी मे मायरॉं यह कह ले जाने से इन्कार कर दिया कि जिस घर मे वह ब्याही जा रही है। वह खानदान जाति मे कमत्तर है। हमारे लायक वह घर नही है। धीरे-धीरे उनका यह कथन जगल की आग की तरह चौबीसो कोसो मे दानावल बन कर फैल गया।

दत्तक पुत्रो के वार से सतमासी सन्न होकर, भौच्चकी रह गई। मायरे की तारीक आई और निकल गई। शादी का दिन आया और शादी भी हो गई परन्तु धुर्त दत्तक पुत्र ठस से मस नही हुये।

बुढापे मे उसका सर्वसव हडप चुके पापाण हृदय द्रवित नही हुये तकदीर की मारी, सदा दुखियारी, प्रौढा सतमासी यह भीषण सदमा सहन नही कर सकी और उसने एक रात को गॉव के सूखे कुऐ मे कूद कर अपनी *इहलीला समाप्त कर ली।*

OOO

इन्तज़ार

बुगले की सी सफ़ेद झक कम्पनी से नई-नई क्रय की गई मारुति जिप्सी शहर के हाइवे की काली पेवर रोड से उतर कर, ग्रामीण क्षेत्र के मुडिया काकर सडक पर सरपट तेज गति से दौडती चली जा रही थी। सडक के किनारे-किनारे कच्चे झुग्गीनुमा झोपडे, खपरैलो से ढके आधा कच्चे, आधा पक्के मकान जो कीकर के पेड, बेर की झाडियो से बनी बाडो से घिरे हुये थे। एक-एक कर पीछे छूटते जा रहे थे।

यात्रा के अनवरत जारी रहते हुये जब सडक पर स्थित पाचवाँ गॉव भी पीछे छुट गया तो जिप्सी चालक लेबर कॉन्ट्रेक्टर मुलताना राम के चेहरे पर परेशानी की हल्कि सी शिकन उभरी, उसने वेचैनी से अपना पहलू बदला और जिप्सी की गति को ओर बढा दिया। उवड-खाबड मार्ग मे जव सफर का आठवॉ गॉव आया तो, मुलताना राम के चेहरे पर परेशाननियो की स्पष्ट लकीरे दिखाई पडने लगी।

गॉव मे प्रवेश के साथ ही सरकार के द्वारा अकाल राहत कार्यो के तहत चलाये गये राहत कार्यो के रूप मे यत्र तत्र, जहॉ तहॉ उग आये सरकारी अस्पताल, सामुदायिक भवन, पचायत भवन, राजकीय विद्यालय, ग्राम सेवा सहकारी भवन की जर्जर इमारते गाँव होने का अहसास दिलाने लगी।

गॉव के मध्य मे सडक के किनारे पीपल के पेड के गट्टे के पास ग्रामीणो की जरूरतो की पूर्ति करने वाली परचून की एक दुकान पर उसने जिप्सी रोकी। गाड़ी के रूकते ही तपाक से दुकान मे से एक व्यक्ति उसकी ओर लपक कर बढा 'जी मै राम लाल हूँ। मैने ही आपको यहॉ बुलवाया है और शायद आप मुलताना राम जी है?'

'हॉ मै ही मुलताना राम हूँ, जो पिछले चार-पॉच माह से सेलफोन पर आपसे सम्पर्क करता चला आ रहा हूँ।' जिप्सी मे बैठे-वैठे ही मुलताना राम ने अपना परिचय दिया।

'आप द्वारा क्रय की जाने वाली सौ बीघा खातेदारी जमीन जो ट्यूब वैल से सिचिन होती है। यहॉ से सात किलोमीटर दूर, अगले गॉव मे स्थित है। वैसे तो मैं सेकडो-हजारो बीघा जमीनो का सौदा करवा चुका हूँ परन्तु आप जिस जमीन को खरीदने को इच्छुक है उसकी एकमात्र मालकिन

बहुत ही खुसट, सनकी और कुछ-कुछ पागल सी बुढिया है।

इस इलाके मे क्रय योग्य एक मात्र उसकी ही भूमि बेचान से शेष रही हुई है। क्योकि यह बुढिया अपनी जमीन के दाम बाजार भाव से दस गुना अधिक माग रही है। वह अपनी जिद्द पर अटल है। शायद इसी कारण से उसके खेत का सौदा वर्षों से अटका पडा हुआ है।' भूमि दलाल रामलाल ने खुलासा किया।

'ये सब ठीक है, राम लाल जी! सौदे की बात आप मुझ पर छोड दीजिये। आप तो उसका ठीक-ठीक पता बता दीजिये बस?'

'हाँ हाँ क्यो नही, आप इसी सडक पर नाक की सीध मे चलते जाईये। आगे सडक पर सात किलोमीटर के माईल स्टोन के दाहिनी तरफ गॉव है। गाँव से आगे आधा किलोमीटर चलने पर बायी ओर कच्चे मार्ग पर एक झोपडी बनी हुई है। उसके कुछ ही गजो की दूरी पर उस बुढिया का खेत व ढाणी है।'

'हॉ बस ठीक है अब मै खेत ढूढ लुगा। और हॉ, राम लाल जी यदि सौदा पक्का हो गया तो आपका दो फीसदी कमीशन भी पक्का रहा। मै अब चलता हूँ।' यह कह कर मुलताना राम ने जिप्सी को गियर मे डाला और गाडी आगे बढा दी।

कुछ ही मिनटो के बाद मुलताना राम की जिप्सी सडक को नापती हुई अगले गॉव को पार कर रही थी। अगले कुछ क्षणो मे जिप्सी कच्चे मोर्ग की झोपडी व उसके बाद गन्तव्य स्थल बुढिया के खेत के फलसे पर खडी हार्न दे रही थी।

काफी इन्तजार के बाद खेत का फाटक खुला और एक आठ नौ बरस के लडके ने उसे अदर आने का इशारा किया। मुलताना राम जिप्सी को लेकर खेत के अदर दाखिल हुआ और सभावित खेत मालिक की हैसियत से उस सौ बीधा के खेत को निहायत ही आत्मीयता से निहारने लगा। उसने टयूब्बैल के पम्प रूम के पास जिप्सी को खडी कर उसका इजन बद कर वह बाहर आ गया। पम्प रुम के पास ही बने टीन-छप्पर, घास फुस की छत से ढके दो-तीन कच्चे-पक्के मकानो को गौर से देखने लगा।

पम्प रूम और झोपडेनुमा मकानो के बीच एक बडे आकार का

आगन बना हुआ था। जिसे लगता है कि हाल ही मे गुढ एव गोबर से लीपा गया हो। इसी आगन मे एक लम्बी छरहरी विधवा वृद्धा बैठी हुई काकडियो, मतीरो को ढेरी मे से लेकर लम्बे से छुरे नुमा चाकू से काट काट कर पास रखे लोहे के बठटल मे इनका ढेर लगा रही थी।

इस दरमियान उस लडके ने झोपडे मे से एक मुढा निकाल कर आगन मे लगा दिया। बुढिया ने बेहद रूखेपन से आगन्तुक को उस पर बैठने का इशारा किया। उसके बैठने के साथ ही पानी का लोटा लिये वह लडका पुन हाजिर हुआ। मुलताना राम ने एक ही सास मे लोटे को खाली कर दिया जैसे वह कई दिनो से प्यासा हो।

थोडा सहज होकर मुलताना राम ने कहा-'मा सा मै पास ही जिले का रहने वाला हू। महानगर मुबई, बगलूरू, चेन्नई, सूरत, अहमदाबाद मे मेरा लेबर सप्लाई का कारोबार है। मैने इस धधे से अपार धन-सम्पदा अर्जित की है। परन्तु अब मै इन धधो को छोडकर अपने परिवार के साथ अपने पैतृक धधे खेती बाडी को अपना कर सुख चैन से जीना चाहता हूँ। इस कारण मै आपकी बिकाऊ जमीन खरीदने यहाँ आया हूँ।'

बुढिया ने सर्द मिजाजी से मेहमान नवाजी का प्रदर्शन करते हुये हाथ मे लिये हुवे कार्य को पूर्ववत ढग से करती हुई बोली-'हाँ बेटा यह सच है कि मै अपना यह खेत बेचना चाह रही हूँ। लगभग सत्रह वर्षो से यह जमीन बिकाऊ है। परन्तु ऐसा ग्राहक आज तक नही आया जो इसका वाजिब मूल्य चुका सके। मुझे आज भी सुपातर ग्राहक का इन्तजार है।'

'पास गाँव का रामलाल बता रहा था कि आपने इस जमीन की कीमत कई गुना बढा कर लगा रखी है। इस इलाके मे जहाँ प्रति बीघा दस हजार रुपये से अधिक का बाजार भाव नही है परन्तु आपने इस जमीन की कीमत एक लाख रुपये प्रति बीघा आक रखी है। इसी कारण शायद आज तक कोई ग्राहक यह भूमि खरीद नही सका?'

'यह सच है मेने जो कीमत लगा रखी है। उससे एक भी पैसा कम नही लूगी। मेरी पीढियो मे आज तक किसी ने भी अपनी जमीने नही बेची। पिछली चार पीढियो से हमारे खानदान मे एक ही वारिस पैदा होता आया है। मेरी कोख से भी एक ही पुत्र का जन्म हुआ है। उसका नाम प्रताप था। एक ही वारिस होने के कारण ही इतनी बडी जमीन बची रह गई है।'

'हाँ माँ सा, मै भी तो आपके बेटे प्रताप के समान ही हूँ। पर सच कहूँ माँ सा धन-कुबेर होते हुये भी मै सुखी नही हूँ। मेरी जवान बेटी भरी जवानी मे विजातीय लम्पट पडौसी के साथ घर छोड़ कर भाग गई। मेरे एक लौते लडके को लकवा हो गया और सात वर्षो से वह बिस्तर पर पडा हुआ है। घर पर मेरी गैर मौजुदगी मे मेरी पत्नी के पैर भटक गये और वह बदचलन हो गई। इन सब घटनाओ से मैं बेहद परेशान और दु खी हूँ। अत अब मै शाति से एकात मे अपनी जिदगी के शेप बचे दिन अज्ञात वास मे रहकर बिताना चाहता हूँ।

मै आपको मुँह मागी कीमत अदा करूगा यानी एक लाख रुपये प्रतिबीघा के हिसाब से सौ बीघा के इस खेत के मै आपको नगद एक करोड का भुगतान करूगा बस आपकी सहमति भर चाहिये।'

दोपहर कब की ही बीत चुकी थी। धीरे-धीरे दरख्तो, टापरो के साये लम्बे होते चले जा रहे थे। हौले-हौले शाम का धुँधलका जमीन पर उतरने को उद्दत हो रहा था।

बुढिया अब कटे हुये मतीरे-काकडियो से भरा बठट्ल उठाकर, जिप्सी के पास बधी गायो की ओर बढ रही थी। गायो के बछडे भूख से व्याकुल हो रहे थे। वे अपने खुँटे उखाड कर, गायो के पास जाने को बेताब हो रहे थे।

मुलताना राम ने अपने शरीर को ढीला छोडकर, पीठ को मोढे से टिका कर, टागे फैला कर कुछ-कुछ आश्वस्त सा होकर निश्चिन्तता के भाव मे आ चुका था। वह कुछ प्रफुल्लित सा होकर उसने अपनी बेशकीमती सिगरेट सुलगाई और उसके लम्बे-लम्बे कश लेकर वह तल्लीनता से भविष्य के मधुर स्वप्नो मे डूब गया।

बुढिया बठट्ल गायो के पास रखकर, झोपडे मे घुसी और गाय दुहने की टोकनी लेकर, चित्तकबरी गाय के पास बैठकर उसे दुहने लगी। शेप गायो की दुहारी से निवृत्त होकर उसने बछडो को खुटो से खोल दिया। गायो के डकारने, बछडो की उछल कूद से वातावरण की तन्द्रा भग हुई। जिससे मुलताना राम एकाएक चौक कर सजग हो उठा।

बुढिया ने झोपडे मे से निकल कर काँसे का लम्बा गिलास जो दही की लस्सी से लबालब भरा हुआ था। मुलताना राम के हाथ मे देकर अपने

आचल से अपना मुँह पोछकर, पास ही पडी चारपाई पर बैठ गई मुलताना राम नमक-जीरॉं मिश्रित दही की लस्सी के लम्बे-लम्बे घूट भरने लगा।

'बेटा! मुलतान तुम्हारा कहना शायद सही ही हो। पिछले सत्रह सालो से सैकडो-हजारो ग्राहक मेरा यह खेत खरीदने आये। उनमे से कुछ ने प्रलोभन दिये तो कुछ ने ऑखे दिखाकर घुडकियॉ और धमकियॉ भी दी। परन्तु मैंने भी जैसे प्रतीज्ञा ही कर ली हो कि मै अपना खेत सुपात्तर को ही बेचूगी। ऐसा जान पड रहा है कि तुम्हारे रूप मे मुझे सुपातर मिल गया है और मेरा वर्षो का इन्तजार अब समाप्ती के कगार पर है।

मेरा होनहार प्रताप यदि आज जिंदा होता तो शायद तुम्हारे जैसा ही लगता। तुम्हारी तरह ही सफलता के शिखरो को चूमता और शायद तुमसे अधिक धन-सम्पत्ति का मालिक होता। परन्तु बेटा मुलतान होनी को कौन टाल सकता है। आज से ठीक सत्रह साल पहले जब वह तुम्हारी ही तरह महानगरो से अपने गाँव अपने इस खेत मे आया था। उस वक्त उसके साथ उसका एक मित्र भी साथ मे था।

वे दोनो शाम के धुधलके मे लम्बी सी मोटर गाडी लेकर यहॉ पहुँचे। दोनो मित्र उस समय कुछ हडबडाए व घबराये हुये से जान पड रहे थे। उन्होने आते ही अपनी गाडी वहा खडी की जहॉ अभी तुम्हारी गाडी खडी है। आनन-फानन मे गाडी खोलकर उसमे रखे तीन लोहे के बडे-बडे ट्रको को घसीट-घसीट कर बाहर निकालने लगे। हडबडी मे उनके हाथ पैर काप रहे थे।

मै बदहवास सी उन्हे अपलक देखती ही चली जा रही थी। घीस घासकर उन्होने ट्रको को झोपडी मे जमा किये और झोपडी अन्दर से बद कर ली। झोपडी के अन्दर से पहले तो कानाफुसियो और बाद मे धीरे-धीरे बोलने और उसके बाद तेज लडने झगडने की आ रही थी। तेज आवाजे अब परस्पर धक्का-मुक्की व मार पीट की आवाजो मे बदल गई। तभी अचानक झोपडी के अन्दर से धाँय-धॉय पिस्तौल से गोलियॉ चलने की आवाज सुनाई दी।

मै किंकर्त्तव्यविमूढ होकर सन्न रह गई। पलक झपकने ही प्रताप का दोस्त झोपडी मे से निकला और तीर की तेजी से गाडी मे बैठा और गाडी को हवा मे उडाता हुआ तत्काल ही गायब हो गया।

कुछ लम्हो के बाद मेरा सदमा टूटा मै भागती हुई झोपडी मे घुसी तो पूरी झोपडी मे सोने के बिस्कुटो का अबार लगा हुआ था। इसी सोने के ढेर पर मेरा खरा सोने जैसा बेटा प्रताप खून से लथपथ मरा हुआ पडा था।

उसी क्षण, उसी पल मैंने प्रतीज्ञा कर ली। जिसने भी मेरे बेटे की हत्या की है। मै उसे जिदा नही छोडूगी। जब तक मै उस नर पिशाच को खत्म नही करुगी तब तक इस खेत, इस जमीन से बाहर कदम तक नही रखूगी और प्रताप के कातिल का यही इन्तजार करुगी।

मेरी आत्मा चीख-चीख कर कह रही थी। कि वह हत्यारा एक ना एक दिन सोने के ढेर के लालच मे यहॉ जरूर आयेगा और वह सोने के खजाने को पाने के लिये इस जमीन की मुँहमॉगी कीमत देने का प्रस्ताव करेगा और उसी हत्यारे रूपी सुपात्तर को ढूढने के लिये ही मैंने अपने इस खेत की कीमत दस गुना बढा कर रखी है।

मुलतान! मैने तुमसे ठीक ही कहा था कि तुम्हारे रूप मे मुझे सुपात्तर ग्राहक मिल गया है। मेरा इन्तजार अब समाप्त हो गया है क्योंकि सोने के ढेर मे मुझे उस रात एक सिगरेट का पैकिट मिला था और वही यह पैकिट है जिस मे से तुम सिगरेट निकाल कर पी रहे थे।'

बुढिया आक्रोश और भावावेश मे कब से बडबडाती चली जा रही थी। जबकि मुलताना राम तो घातक जहर मिले दही की लस्सी के चार पॉच घूट पीते ही मुढे पर लुढक कर दम तोड चुका था। उसके मुँह, नाक से झागो का झरना बह रहा था और उसका शरीर नीला पड कर अकडने लगा था।

बुढिया के सत्रह सालो का इन्तजार कब का ही खत्म हो चुका था और वह अब भी अपने प्रताप के हत्यारे मुलताना राम की लाश से बतियाती जा रही थी।

OOO

क़िरदार

लम्बा, चौडा, मजबूत, कडियल किम्म का कद्दावर, वृद्ध जाबाज इन्सान जिसकी उम्र सत्तर के पार थी। देहाती वेशभूषा सफेद धोती कुर्त्ता पहने, हाथ मे तारो गुथी अपने कद के अनुरूप साढे छह फीट की लाठी लिये, चेहरे पर रूआबदार गल मुच्छो एव सफेद सन जैसी चितार्पक दाढी जिसे उसने ठुड्डी पर दो हिस्सो मे बाट कर, अपने दोनो कानो पर लपेट रखा था।

उसने दहकती लाल लाल अगारे नुमा ऑखो से तनिक नाराजगी का प्रदर्शन करते हुए, सामने बेठे लिपिकीय कार्य मे जुटे अधेड कायस्थ मुसद्दी लाल को सबोधित करते पूछा-'महाशय! चार घटो से कतार मे लगे रहने के बाद, अब आप तक पहुँचा हूँ। कृपया बतलाये कि आपके इस यमलोक मे मेरा स्थान कौन सा मुकर्रर किया गया है?'

मुसद्दी लाल अपने सामने खडे साढे छह फुट के इस शख्स की ओर एक नजर देखा, तो उसकी आत्मा अदर तक हिल उठी। वह बोला-'आपका नाम, वल्दियत कौम और रिहायश बतलावे?'

'मै जमीदार सिह वल्द महाराज सिह कौम राजपूत, ठिकाना ठाकुरपुरा, राजपूती परगना, प्रात राजपूताने का हूँ।' मृत्यु लोक से यमलोक पहुँचे अडियल ठाकुर ने कर्कश स्वर मे मुसद्दी लाल को करारा उत्तर दिया।

यमलोक मे मृतको का लेखा-जोखा रखने वाले और उनको यथा स्थान व्यवस्थित ढग से पहुँचाने का सतकर्म करने वाला मुसद्दी लाल स्वभाव विपरीत कुछ भयक्रात होकर सकपका गया। उसने अपने सामने रखे विशाल लेखो-जोखो की पोथियो मे जमीदार सिह का नाम ढूढने लगा। खोज-पडताल के उपरात भी इन्द्राज मे ठाकुर का नाम नही पाकर मुसद्दी लाल का शरीर पसीने से नहा उठा। उसके अग शिथिल होकर बेदम होते जान पड रहे थे।

मुसद्दी लाल ने हकलाकर मद शब्दो मे जमीदार सिह से अर्ज किया-'मान्यवर जी! आपका मृत्यु प्रकरण सदिग्ध है। सभवत इसी वजह से आपका लेखा-जोखा प्राप्त नही हो रहा है। आप कारिदे के साथ हाजा-सिगेदार के यहा तसरीफ ले जाये। साथ ही उसने आठ दस काले भुजग यमदूत जो छाट-छाट कर नियुक्त किये गये थे। उनमे से एक के साथ जमीदार सिह को प्रस्थान करने का इशारा किया।

तग, परेशान, हौसलापस्त जमीदार सिह ने जब यमलोक के हाजा सिगेदार के कक्ष मे हब्शी कारिंदे के साथ प्रवेश किया तो वहा नीरवता लिये भय मिश्रित सन्नाटा पसरा पडा था। सिगा प्रभारी अपने आसन पर बैठा नीद मे झपकियॉ ले रहा था।

जमीदार सिह के साथ आये कारिन्दे ने उसके प्रकरण की व्याख्या की व तुरन्त ही कक्ष छोडकर प्रस्थान कर गया। हाजा-सिगेदार हाजी सुलेमान खा ने गहरी नजर से जमीदार सिह को देखा और जिगर मे खजर घोपने की सी कर्कश आवाज मे मुखातिब हुआ और बोला-'बरखुरदार ये घिनौनी वारदात तुम्हारे साथ ही क्यो हुई?'

जमीदार सिह ने आबदार आवाज मे कहना शुरू किया-'जनाब! हाजी सुलेमान खॉ साहेब हुआ यूँ कि मेरी अकाल मृत्यु किसी प्राकृतिक आपदा, से नही हुई बल्कि मै तो अपने गॉव, अपने टीबे, अपने वतन की गैर मुल्कियो से अपने मादरे-वतन ठाकुरपुरा की हिफाजत के लिये जग-ए-मैदान मे जिरह-बख्तर पहन कर जुझ रहा था।

उसी समय मेरे हम वतन, मेरे हमदम, मेरे अजीज, मेरे अपने सजातीय भाईयो ने दुश्मनो से मिलकर युद्ध भूमि मे धोखे से घेर कर मुझे हलाक कर दिया।'

नूरानी चेहरे वाले हाजी-सुलेमान खॉ ने गहरी सॉस भरी और सूरतेहाल पर गौर करने के बाद कहा-'मुझे इल्म है, ऐ-जगबाज, बहादुर, शेर दिल, इसाफ पसद, वीर राजपूत सरदार! सदियो से पृथ्वी लोक पर नफासत और अदब से इन्सानो पर हकुमत करने के लिये खुदा ने तुम्हारी कौम को सल्तनत की सत्ता अत्ता की है।'

मुक्कमल पूर सुकून के बाद हाजी-सुलेमान खॉ ने पुन कहना प्रारम्भ किया-'ऐ! जुझारू बेखौफ, गैरतमद राजपूत सरदार! यमलोक के कायदे आजम ने यहॉ अपने तराशे कानूनो को अमलीजामा पहनाया है। हमे उन्ही का इस्तकबाल करना होगा। जिसके अनुसार जन्नत मे तुम्हारी जगह इसलिये मुकर्रर नही है कि तुम्हारा कत्ल तुम्हारे ही सजातीय बन्धु ने किया है। यह कुटुम्ब हत्या है अत तुम जन्नतवासी नही हो सकते? मादरे वतन की रक्षा मे तुमने प्राण गवाये है। इसलिये तुम जहन्नुम वासी भी नही हो सकोगे? तुम्हे आजादी है कि तुम इस यमलोक मे भ्रमण करके अपने

वजूद के अनुसार खुद-मुख्तियारी से अपना ठौर-ठिकाना मुकर्रर करो।

हाजी ने अपने बख्तरबद कारकुनो के एक टोले को अपने हुक्म की तामील का फरमान दिया। मुलाजिमो का दल जिसका नेतृत्व एक सात फुटा दैत्यनुमा हब्शी कर रहा था के पीछे-पीछे जमीदार सिह यमलोक मे अपना स्थान निर्धारित करने चल पडा।

खिदमतगारो के गिरोह का सरगना हब्शी अखलाक खॉ ने अपने पहले व दूसरे पडाव क्रमश जन्नत और जहन्नुम को पार करके यमलोक के फिसलवा, लिजलिजा, हेरतअगेज पडाव मे जमीदार सिह के साथ पदार्पण किया।

जहाँ का दृश्य बेहद खौफ्नाक व दर्द भरा था। कोस भर की परिधि मे दामिनी की लपटे सैकडो गज ऊची उठ रही थी। इस अग्निकुड मे बेपनाह मोहब्बत का जज्बा लिये मृत्यु लोक वासी आदमी, औरते व बच्चे चुपचाप बिना हिले डुले, स्वेच्छा से जल जल कर भस्म हो रहे थे। जमीदार सिह के नकारात्मक ढग से सिर हिलाने पर काफिला आगे चल पडा।

पडाव का अगला अग्निकुड पहले पडाव से भी ज्यादा वीभत्स और खौफजदा था। जहा हजारो नर-नारी, बच्चे आग की तपन मे अपनी एडिया रगड-रगड कर जलते अगारो से कोयलो मे और कोयलो से राख मे तब्दील हो रहे थे। इस कुड मे चारो तरफ हाहाकार, चीत्कारो की आवाजे अतर्रात्मा को बीधती जान पड रही थी। जल रहे हजारो नर-नारी बच्चे अग्नि कुड मे एक दूसरे को अपने, आपको आग की भीषण गर्मी से बचाने के लिये परस्पर धक्का-मुक्की कर रहे थे। इनके सिरो के बाल, चेहरे व शरीर का मास जल-जल कर घिनौना गाढे मास का दरिया बना रहा था।

ऐसा दर्दनाक नजारा दोजख मे ही सभव था। जमीदार सिह ने टुकडी के सेना नायक अखलाक खाँ से इसरार भरे शब्दो मे निवेदन किया-'महाशय! मुझे मेरी मजिल मिल गई है, यही स्थान मेरा है, कृपया मुझे इसी अग्निकुड मे पनाह लेने दीजिये।'

हैरतअगज चेहरे से अखलाक खॉ ने जमीदार सिह की ओर ताका और विस्मय से पूछा-'जनाब इस अग्निकुड मे जले हुये नर-नारियो के ककालो के अलावा कुछ भी शेष नही है। जले ककालो मे आप अपने कुटुम्ब कबीले को कैसे पहचान सकते है? ऐसे घिन भरे वीभत्स मजर मे

आपने कैसे जाना कि यह स्थान आपका ही है?'

'गभीर और शात स्वर मे जमीदार सिह ने उत्तर दिया-'जनावे वाली! खॉ साहेब आपकी बात दुरुस्त है। परतु कोमे, शक्लो सूरत से नही पहचानी जाती बल्कि कौमे अपने किरदार से, अपने चरित्र से जानी व पहचानी जाती है! देखिऐ इस अग्निकुड मे जलने वाला हर इसान, परस्पर हमदर्दी, भ्रातृत्व प्रेम, मानवता और सहृदयता खो चुका है। इस अग्निकुड मे से बाहर निकलने मे प्रयासरत इन्सानो की यदि दूसरे इन्सान मदद करे, इमदाद करे, और इनके प्रयास मे सहायक बने, यदि इन मे से कुछ को इस अग्निकुड से बाहर निकालने का जज्बा हो तो ऐसे इन्सान स्वय अपने आपको जला कर सीढी बना कर दूसरे कुछ इन्सानो को बाहर निकालने मे यकीनन सफल हो सकते है जनाब!'

लेकिन यहॉ तो उल्टा ही नजारा हे, अग्निकुड से बाहर निकलने की दहलीज पर खडे इन्सान को उसका ही सजातीय बधु, उसके ही समाज का प्रतिद्वद्वी उसकी टाग खीच कर वापस अपना हमदम अपना हम सफर बनाने मे सफल हो रहा है। ताकि वह उससे बडा व ज्यादा हुनरमद नही हो पावे। इनकी परस्पर ईर्ष्या, डाह, नफरत इन्ही सबको जला कर भस्म कर रही है।

यह किरदार दुनियॉ मे मेरी कौम के सिवाय और किसी कौम मे नही है। मेरी कौम मे सगठित होने की कुव्वत के स्थान पर बिखराब, बग्ज और दुश्मनी रखने की फैसलाकून भरी फार्माबरदारी है। इसी तिजारती बेकसी की बजुदअत लिये मेरी कौम आज पृथ्वीलोक मे तवारीख के हाशिऐ पर खिसका दी गई है।

'हॉ अखलाक यही मेरी कौम है, और यही मेरी कौम का किरदार। यही हमारा कौमी चरित्र है और मुझे मेरी कौम के इस किरदार के साथ यही इसी अग्निकुड मे रहना है। हॉ, यही मेरी नियती है!'

कह कर जमीदार सिह वल्द महाराज सिह कोम राजपूत ठिकाना ठाकुरपुरा राजपूत परगना, प्रात राजपूनाना, पृथ्वीलोक का वासिदा आहिस्ता-आहिस्ता डग भरता दोजख के जलते अग्निकुड मे समा गया।

OOO

गाँव–बदर

रात्त भर काया की चमडी के भीतरी अस्तर मे चल रही खुजली को शात करने की गरज से भीकू चिम्पैजी की तरह खाज करता हुआ जुझता रहा। मुफ्तखोरी का आदी हो चुका पोस्ती भीकू को कल शाम को ही आभास हो गया था कि गाँव मे बडे ठाकुर के माँ के तेहरवे पर दिन भरे चले डोडा–पोस्त के दौर दौरा मे वह छक कर फाँके पर फाके मार कर, हैसियत से अधिक डोडा चूर्ण ले चुका था। जिसका दश उसे रात भर की खुजली के रूप मे भुगतना ही है सो वह अब तक भुगत रहा है।

पोस्ती भीकू से जब, अब और ज्यादा सहन नही हुआ तो वह अपनी चिथडे हो चुकी गुदडी से उठ बैठा। जहर को जहर से मारने की गरज से वह अपने कारु के खजाने की ओर लपका। बैठक रूपी तिबारी के आले मे से उसने डालडा घी का खाली डिब्बा, जिसमे डोडा चूर्ण भर कर रखा हुआ था को उठाया। घडे के पास बैठकर उसने डिब्बा खोला। इसमे रखी डडा टूटी चम्मच को लबालब भरा और मुह मे उडेला। एक, दो, तीन चम्मच डोडा चूर्ण से जब भीकू का मुँह गले तक भर गया तब उसने ठूसना रोका।

कुछ–कुछ सयत हो पानी के दो तीन घूट की जगह मुह मे बनाई और पास पडे लोटे को मुह से लगाकर पानी को मुह मे घुसेडा। जिससे पोस्त का चूर्ण गाढा तरल हुआ। मुह मे गले तक भरे गाढे तरल पोस्त चूर्ण को निगलने के लिये भीकू की आँखे उबल कर बाहर आ गई। जब कुछ अश निगला जा चुका तो उसने मुह मे पुन पानी भरा। अब की बार उसने अपेक्षाकृत आसानी से गाढे मलबे को उदरस्थ कर लिया।

दतहीन पोपला मुह, पिचका जबडा, पकौडे की सी लोथडे नुमा नाक, मिचमिचायती गाढे, गन्दगी युक्त गीढ से भरी आँखो को लिये भीकू अपने अस्थि–पजर नुमा काया को दोनो घुटनो के बीच अपनी खोपडी फसा कर हथेलियो से जमीन को साधे, फेफडो मे नही समाने वाली सासो को सयत करने के लिये काफी समय तक ऐसे ही बैठा रहा।

आतडियो मे गये डोडाचूर्ण का जब कुछ–कुछ अवशोषण हुआ। जिससे उसकी मारक क्षमता, भीकू के रक्त मे परिसचरित होने लगी। इससे भीकू की पौरुष शक्ति जागृत हो उठी। वह पुन डिब्बे पर झपटा और

उसने पूर्व की प्रक्रिया पुन दोहराई। इस बार उसे पहले की तुलना मे कम समय लगा।

भीकू के पेट की आतडियो मे हलचल भरी कुलबुलाहट हुई और वह नशे की पीनक मे हौले-हौले झूमने लगा। भीकू को लगा की उसकी खुराक पुरी हो चुकी है, तो वह इस सुखद अहसास से आन्ददित होता हुआ, लाठी टेकता अपने घर से बाहर गाँव मे हथाई भ्रमण को निकल आया।

भीकू का गॉव प्रात के सैकडो हजारो गॉवो की तरह ही था। इन गॉवो मे अन्तर करना सिर्फ भौगोलिक एव प्राकृतिक परिस्थितियो के कारण ही सभव था। परन्तु इन गॉवो मे रहने वाली मानवीय आकृतियो का अतीत-इतिहास, रहन-सहन, रिश्ते-नाते, सामाजिक ढाचा परिवेश कमोवेश एक ही माला मे गुथे मनको की तरह ही थी।

इस गॉव के वासिन्दे भी पृथ्वीलोक के अन्य सभ्य, सभ्रान्त लोगो की तरह ही हँसते थे। उनकी ही तरह रोते भी थे। सबकी तरह सुख दु ख का अहसास करते। इन गॉव वासियो को भी सर्दी मे सर्दी लगती, गर्मी मे गर्मी लगती तो इन पर भी वसत ऋतु की मस्ती छाया करती थी।

भीकू का गॉव मरू भूमि के रेगिस्तानी इलाके के थार के अचल मे बसा हुआ था। जो चार-पॉच सदियो पुराना था।

मध्यकालीन युग के बर्वर बाहु बल ने तलवारे थाम कर घोडो की टापो से वसुन्धरा को एक छोर से दूसरे छोर तक पदान्क्रत कर रौदा। ताकत के इस युग मे वीरो ने वीरता से प्राणो को न्यौछावर कर भूपति की पदवी पाई थी। भीकू के पूर्वज भी इन्ही भूपतियो मे से एक थे।

परिवर्तन सृष्टी का अटल नियम है। इसी के चलते सदिया बदली, युग बदले, बादशाहो की सल्तनते बदली, राजा के रजवाडे बदले, जमीदारी, पट्टेदारी प्रणाली को हवा ले उडी। तो लोकतत्र की बयार चली। भूमि के अधिपत्य के हको-हकूक तलवार से छीन कर कलम को दे दिये गये। प्रजातांत्रिक व्यवस्था मे जो किसान जिस भू-खण्ड पर काबिज था। वह उसका स्वामी बना दिया गया। भीकू के पूर्वजो के कुटुम्ब के सदस्यो की सख्या अनुसार भूमि का बट हजारो खेतो से, सैकडो खेतो मे और भीकू तक आते आते यह भूमि बट ईकाई खेतो पर आकर रुका।

भीकू के पिता-छोग सी जब तक जिन्दा रहे। तन पर एक

धोती और एक बडी मे ही रहे। उन्होने पैरो मे कभी चमरौधा तक नही डाला। वे अपने पिता के अकेले वारिस थे। इससे उनको भूमि बट का दश नही भोगना पडा। जिसके फलस्वरूप उनके अधीन आसपास के बारह गॉवो मे सबसे अधिक भूमि, खातेदारी के रूप मे सरकारी रिकार्ड मे दर्ज हुई। चूंकि भीकू उसका एक मात्र पुत्र है। अत वह अब वर्तमान मे एक सो साठ बीघा भूमि का एकलौता, अकेला वारिस बना।

गॉव के वर्तमान स्वरूप मे लगभग तीन सौ घरो की वस्ती है। जिनमे लगभग चार-पॉच हजार किसानो की आबादी है। इस गॉव के सस्थापको द्वारा अन्य जाति के लोगो को गॉव मे बसने नही दिया। जिसके परिणाम स्वरूप भीकू का यह गॉव आज भी एक वशीय, एक गौत्रिय गॉव रुप मे विख्यात है।

भीकू के दादा के काल मे देश की लोकशाही ने ग्रामीणोत्थान के नाम पर रेल मार्ग, सडक मार्ग ने इस गॉव मे भी पॉव पसारने की जुर्रत की थी। परन्तु गॉंव के मौजिज लोागो ने इस विकास को विनाश का दर्जा देकर इसका जोरदार ढग से सशस्त्र विरोध किया। विकास को गॉव की मौलिकता, उसकी अस्मिता से खुल्ला खिलवाड मानकर गॉव मे रेल मार्गो को यह कह बिछाने नही दिया कि इस रेल मार्ग पर सरपट दौडती चील गाडियो से उनके गॉव का वातावरण कुलिपित होकर, दूपित हो जायेगा। गॉव की जवान बहु-बेटियॉं घरो से भाग कर चील गाडियो मे चढकर गॉव की इज्जत आबरू को सरे राह नीलाम कर देगी।

सडक मार्गो से गुजरती रात्रि कालीन लोरियो को देखकर गॉंव भर मे यह ढिढौरा पिटवा दिया गया कि अग्निवाणरूपी ये लोरियॉ जब गॉव मे प्रवेश करेगी तो इनकी ऑखो से निकलने वाली लपलपाती आग की लपटो से सारे खेत, खलिहान, पेड, पौधे, घर वार, घरो की बाडे जल कर भस्म हो जायेगी। सो भीकू की बाप की पीढी तक यह गॉंव बाहरी दुनियॉ हो रही विकासोन्मुखी गतिविधियो से अछूता ही रहा।

अधेड भीकू के यौवनावस्था मे सर्वत्र चल रही उन्नति, प्रगति की ऑंधियो से यह गॉव बिलकुल निरपेक्ष अछूता नही रह सका। गॉंव के आसपास के गॉंवो मे सडको के विस्तार, टय्युव वैलो के निर्माण, बजरी की खानो के खनन कार्यो से खुशहाली का दौर तरुणाई पर था। इस गॉंव मे

भी दबे-स्वरो के विरोध को दर किनार कर राज ने विकास कार्यो के तहत अपना जाल फैलाना प्रारम्भ कर दिया था।

सरकार के द्वारा बडी-बडी विदेशी कम्पनियो से किये गये करारो-समझौतो के तहत इस गॉव मे भी भूमिगत लिग्नाईट, कोयला, चाईना क्ले, जिप्सम आदि की खदानो का सर्वे कार्य विगत कई वर्षो से शुरू किया जा चुका था। इन शोधपूर्ण कार्यो के परिणामस्वरूप भीकू के गॉव मे अत्यधिक बहुल मात्रा मे लिग्नाईट कोयले के अकूत भूमिगत भण्डारो का पता चला। सर्वे रिर्पोटो से सम्पूर्ण गॉव मे बेचैनी भरी सनसनी दौड गई। उड-उड कर आ रही खबरो से गॉव वालो को जानकारियॉ मिल रही थी कि उनके गॉव के सैकडो कोसो मे, खेतो के नीचे, फैली अथाह खनन सम्पदा पर राज की अनुशपा पर केन्द्रिय सरकार का अधिपत्य हो जायेगा। सारे गॉव को मुआवजा देकर उनको खेतो घरो से बेदखल कर खानाबदोश बना दिया जायेगा।

माहौल मे रिसती अफवाहो को जब मूर्त रूप मिला तो भीकू के गाँव मे हाहाकार मच उठा। राज्य हित मे भू-उपयोग करने हेतु भूमि के अधि ग्रहण से खौफजदा भीकू के पडौसी गॉव मे विदेशी कम्पनी से जब सत्तासीन शासक वर्ग ने बिजली पैदा करने हेतु थर्मल प्लाट लगाने का समझौता कर, उस गाँव की हजारो बीघा जमीन पर कब्जा कर प्लाट निर्माण कार्य को प्रारम्भ किया। तो भीकू का समुचा गॉव खौफ से सनका खाकर भौच्चका रह गया।

भीकू के गाँव के ही कुछेक शातिर, लम्पट, भूमि रूपी माँ के दलालो ने विकास को मुद्दा बनाकर इस गाँव मे भी सेधमारी चालू कर दी। अनपढ, अबोध, सीधे-सादे किसान, जिन्होने अपने गॉव की गवाड से बाहर पाँव तक नही रखा। इनके बुर्जुगो ने अपनी भूमि, अपने खेतो को, अपनी जननी, अपनी माँ का दर्जा दिया था। इस माँ रूपी भूमि का सौदा करने को वे कत्तई तैयार नही थे। युगो-युगो से वे सैकडो वर्षो तक अपने परिवार का लालन-पालन इन्ही खेतो रूपी माँ के प्रश्रय मे रह कर करते चले आ रहे थे। इस भूमि रूपी माता ने इनको हजारो वर्षो से पाला-पोसा। इस ध रनी माँ को आक्रान्ता छीनने को उद्दत हो रहे थे। इस कल्पना से ही भीकू के गॉववासी भयाक्रत हो उठे।

सीधे-सरल भीकू के गॉववासियो को नित्य प्रनिदिन गॉव मे ही लोभ वृत्ति के बढते माँ रूपी भूमि के सौदागरो के तीव्रतर हो रहे हमलो से यह अहसास हो गया था कि अब जब गॉव मे ही माँ रूपी खेतो के दलाल उत्पन्न हो चुके है तो अब इस गॉव का वचना नामुमकिन है।

गॉववासियो को पचतत्र की प्राचीन कथा का सस्मरण हो आया। जिसमे जगलो के हरे भरे वृक्षो को काट कर उस पर अधिपत्य करने गये, मानव जाति के समस्त प्रयास असफल सिद्ध हुये। अन्त मे जब वृक्षो के परदादा बुढे वरगद ने जब देखा कि मनुष्य जाति ने जगलो का सर्वनाश करने हेतु कुल्हाडी को अमोघ ब्रह्मास्त्र बनाया है। इसी कुल्हाडी मे जगलो के पेडो के वशज लकडी को उसमे हत्था लगाया गया है। तब उस अति वृद्ध बरगद ने रुआसे होकर करूण शब्दो मे जगल के वृक्षो, पेडो, पौधो को चेताया था कि जब कुल का गद्दार विनास को के साथ कुल्हाडी का डडा बनकर आ रहा हो। तब इस निर्णायक विनाश से बचा जाना असभव है। घर का भेदी लका ढाये।

भीकू के गॉव के ही भूमि के दलालो ने तुच्छ स्वार्थो से वशीभूत होकर पावर प्लाट के कारकुनो से समझौता कर लेने से अब गॉव को उजडने से रोका जाना असभव हो गया। जब बाढ ही खेत को खाये तो खेत की रक्षा करना मुश्किल ही नही अपितु असभव होता है। भीकू का सारा गॉव अपना अस्तित्व, अपना वजूद, अपना अतीत, इतिहास सब कुछ गवा कर प्रगति के नाम पर पावर प्लाट कपनी की भेट चढ गया।

खेतो, खलिहानो, ढाणीयो, झोपडियो, ठाणो, जलकुडियो, बुजो, बाठो, वाडो, घर-आगन, तिबारी, सालो, ओरो आदि। सब कुछ का नाप तौल करके निर्धारित मुआवजा राशि से समस्त गॉववासियो को भुगतान इस कडी चेतावनी के साथ कर दिया गया कि वे अपने-अपने घर-बार, खेत-खलिहान एक माह के भीतर-भीतर खाली कर दे अन्यथा सशस्त्र बल की मदद से उन्हे खदेड कर दर-बदर कर दिया जायेग।

ऐसी घोर गारी विपत्ति!! ईश्वर!! दुश्मन को भी ना देवे!! गॉव पर कहर टूट पडा भैय्या! धरती डोल गई, कयामत आ पडी। पैदल, ऊँटो, बैलगाडियो पर, आस-पास के गॉवो मे बराती बनकर जाने वाले सरल सीधे-सादे ग्रामीणो को अब हमेशा-हमेशा के लिये, लाखो, करोडो कोसो मे

फैली विशाल धरती माँ की गोद मे अपना आश्रय पुन ढूढना होगा। नया करोबार जमाना होगा जो इन देहातियो के लिये दुश्कर कार्य था। ऐसी भीषण त्रासदी रूपी विप भरे वातावरण मे गाँव के बुर्जुगवार तो सामुहिक आत्मदाह के लिये तैयार हो उठे। जिन्हे नव युवको ने समझा बुझाकर शात किया। गॉव वालो के लिये बेदखली का फरमान मौत के फरमान से कम नही था।

भविष्य की गहरी चिता मे डूबा पोस्ती भीकू दिन भर गाँव मे अपने हमजोलियो हल्कू, कोदर, भदावर, रूपसी, मुखियाँ जी आदि से विचार-विमर्श करता रहा। अगूठा टेक भीकू को कोई राह नही सुझ रही थी। उसने दारु की भट्टियो पर सर खपाया, डोडा पोस्त की सजी महफिलो मे दिल रमाया परन्तु उसे आशा की कोई किरण नजर नही आई। थक हार कर वह अपने स्थाई घरौदे, अपने घर जो अब कुछ ही दिनो का आश्रय स्थल रह गया था, पर लौट आया और अनमने भाव से बाखल मे बिछी चारपाई पर पसर गया।

शाम के गोधुलि के धुधलके से धीरे-धीरे रात के गहराने के समय अचानक की कारो, जीपो की तेज रोशनियो से सारा गाँव नहा उठा। जिससे ग्रामीण जन सिहर उठे। उनका कलेजा मुँह को आने को हुआ। भूचाल की सी हडकम्प लिये शहरी लोगो का काफिला जब भीकू के घर के दालान मे घुसा तो भीकू और उसकी घरवाली मुनियॉ अपनी तीनो बच्चियो को छाती से चिपटा कर अजाने भय से कपित होकर थर थर कापने लगी।

सफेदपोशो का जन समुदाय जब आयातित कारो की कैद से बाहर निकला तो उनकी देहो से लिपटे सुरमय, सुरभि सुगन्धो से भीकू का बाखल भर उठा। सभ्रान्त पढे-लिखे सभ्य पुरुपो के इस समूह की अगवाई कुछेक अति सौभ्य सुशिक्षित स्त्रियाँ कर रही थी। जिनके पीछे पानी के रेले के समान जन सैलाव उबल पड रहा था।

जनसमूह का नेतृत्व कर रही औरतो के चेहरे दिप दिपा रहे थे। जब वे भीकू के निकट पहुँची तो चारो ओर से कैमरो की फ्लैश लाईटे जगमगा उठी। जिससे भीकू का कुनवा लपलपाती जगमगाहटो से नहा उठा। भीकू-मुनियाँ को वताया गया कि ये ऊँची जात महिलाये देश भर की ख्यात नाम हस्तियॉ है। इनके नाम से राज की सत्ता थर्राती है। इनका काम सरकार द्वारा उजाडे गये लोगो का पुर्नवास करवाना, उनका हित लाभ

देखने का है। यह जानकर भीकू तथा मुनियॉ ने राहत की सास ली।

मुनियॉ झटपट घर के अन्दर आये मेहमानो की खातिर तवज्जो करने दौड पडी। भीकू को मुआवजे के रूप मे गॉव मे सबसे बडी धन राशि मिली थी। एक बीघा जमीन के बदले एक लाख की नगदी। एक सौ साठ लाख रुपये यानी एक करोड साठ लाख रुपये। इसलिये सबसे पहले उसके घर पर ही पुर्नवास कमेटी के लोग पहुँचे।

पुर्नवास कमेटी की अध्यक्षा मिस रेणुका बन्ध्योपाध्याय की एक-एक कारगुजारी कैमरो मे कैद की जा रही थी। भीकू के साथ पुर्नवास कमेटी का काफिला उसके आगन मे निरीक्षण हेतु पहुचा। तब मुनियॉ आगन मे कच्चे गारे के चुल्हे पर देगची चढाये मेहमानो के लिए चाय बनाने मे जुटी हुई थी।

चारो तरफ के जन शैलाब से घिरी मुनियॉ ने अपनी व्यस्तता के बीच कहा-'हजुॅर, माईबाप जब से गाँव छोडने की बात तय हुई हे। ये तो बावले ही हो गये है। घर बार की इन्हे तनिक भी सुध ना रही है। दो दिन से इनको कह रही हूँ कि घर मे जलाने को इधन चूक गया है। जगल से गोबर कडे लकडियॉ ला दो परन्तु इन पर इसका रत्ती भर भी असर नही हो रहा है।!'

कहती हुई मुनियॉ ने चुल्हे के पास रखे मुॅआवजे मे मिली नगदी के बोरे मे हाथ डाला और मुठ्ठी भर कर नगदी को चुल्हे की कम पडती लपेटो पर उडेला जिससे चूल्हे की आग ओर अधिक प्रज्जवलित हो उठी।

उपस्थित प्रत्येक नर नारी के हृदय मे मुनियाँ के सरल, उदार व आवभगत के जज्बे से करूणा का ज्वार उमड पडा। विकास-समृद्धि का साक्षात् साक्षात्कार कर उनकी ऑखो से अविराम आँसुओ की धाराये बह चली। मुनियाँ अपने अतिथि देवो भवो के कर्त्तव्य पालन मे पुर्ववत क्रियाशील थी। पुर्नवास कमेटी के समक्ष निरक्षरो को ढेरो रुपया देकर उन्नति व प्रगति का सपना दिखा कर उनकी विरासत से, गॉव से बेदखल करके, गॉव बदर कर उनके भविष्य को सजाने-सवारने का यक्ष प्रश्न, दम घोटू विषैले-वातावरण मे अनुत्तरित होकर तैर रहा था।

OOO

फैली विशाल धरती माँ की गोद मे अपना आश्रय पुन ढूढना होगा। नया करोबार जमाना होगा जो इन देहातियो के लिये दुश्कर कार्य था। ऐसी भीषण त्रासदी रूपी विप भरे वातावरण मे गॉव के बुर्जुगवार तो सामुहिक आत्मदाह के लिये तैयार हो उठे। जिन्हे नव युवको ने समझा बुझाकर शात किया। गॉव वालो के लिये बेदखली का फरमान मौत के फरमान से कम नही था।

भविष्य की गहरी चिता मे डूबा पोस्ती भीकू दिन भर गाँव मे अपने हमजोलियो हल्कू, कोदर, भदावर, रुपसी, मुखियाँ जी आदि से विचार-विमर्श करता रहा। अगूठा टेक भीकू को कोई राह नही सुझ रही थी। उसने दारू की भट्टियो पर सर खपाया, डोडा पोस्त की सजी महफिलो मे दिल रमाया परन्तु उसे आशा की कोई किरण नजर नही आई। थक हार कर वह अपने स्थाई घरौदे, अपने घर जो अब कुछ ही दिनो का आश्रय स्थल रह गया था, पर लौट आया और अनमने भाव से बाखल मे बिछी चारपाई पर पसर गया।

शाम के गोधुलि के धुधलके से धीरे-धीरे रात के गहराने के समय अचानक की कारो, जीपो की तेज रोशनियो से सारा गाँव नहा उठा। जिससे ग्रामीण जन सिहर उठे। उनका कलेजा मुँह को आने को हुआ। भूचाल की सी हडकम्प लिये शहरी लोगो का काफिला जब भीकू के घर के दालान मे घुसा तो भीकू और उसकी घरवाली मुनियॉ अपनी तीनो बच्चियो को छाती से चिपटा कर अजाने भय से कंपित होकर थर थर कापने लगी।

सफेदपोशो का जन समुदाय जब आयातित कारो की कैद से बाहर निकला तो उनकी देहो से लिपटे सुरमय, सुरभि सुगन्धो से भीकू का बाखल भर उठा। सभ्रान्त पढे-लिखे सभ्य पुरुपो के इस समूह की अगवाई कुछेक अति सौभ्य सुशिक्षित स्त्रियॉ कर रही थी। जिनके पीछे पानी के रेले के समान जन शैलाब उबल पड रहा था।

जनसमूह का नेतृत्व कर रही औरतो के चेहरे दिप दिपा रहे थे। जब वे भीकू के निकट पहुँची तो चारो ओर से कैमरो की फ्लैश लाईटे जगमगा उठी। जिससे भीकू का कुनबा लपलपाती जगमगाहटो से नहा उठा। भीकू-मुनियाँ को बताया गया कि ये ऊँची जात महिलाये देश भर की ख्यात नाम हस्तियॉ है। इनके नाम से राज की सत्ता थर्राती है। इनका काम सरकार द्वारा उजाडे गये लोगो का पुर्नवास करवाना, उनका हित लाभ

देखने का है। यह जानकर भीकू तथा मुनियॉ ने राहत की सास ली।

मुनियाँ झटपट घर के अन्दर आये मेहमानो की खातिर तवज्जो करने दौड पडी। भीकू को मुआवजे के रुप मे गॉव मे सबसे बडी धन राशि मिली थी। एक बीघा जमीन के बदले एक लाख की नगदी। एक सौ साठ लाख रुपये यानी एक करोड साठ लाख रपये। इसलिये सबसे पहले उसके घर पर ही पुर्नवास कमेटी के लोग पहुँचे।

पुर्नवास कमेटी की अध्यक्षा मिस रेणुका वन्द्योपाध्याय की एक-एक कारगुजारी कैमरो मे कैद की जा रही थी। भीकू के साथ पुर्नवास कमेटी का काफिला उसके आगन मे निरीक्षण हेतु पहुचा। तब मुनियॉ आगन मे कच्चे गारे के चुल्हे पर देगची चढाये मेहमानो के लिए चाय बनाने मे जुटी हुई थी।

चारो तरफ के जन शैलाब से घिरी मुनियॉ ने अपनी व्यस्तता के बीच कहा-'हजुॅर, माईबाप जब से गॉव छोडने की बात तय हुई है। ये तो बावले ही हो गये है। घर बार की इन्हे तनिक भी सुध ना रही है। दो दिन से इनको कह रही हूँ कि घर मे जलाने को इधन चूक गया है। जगल से गोबर कडे लकडियॉ ला दो परन्तु इन पर इसका रत्ती भर भी असर नही हो रहा है।।'

कहती हुई मुनियॉ ने चुल्हे के पास रखे मुॅआवजे मे मिली नगदी के बोरे मे हाथ डाला और मुठ्ठी भर कर नगदी को चुल्हे की कम पडती लपेटो पर उडेला जिससे चूल्हे की आग ओर अधिक प्रज्जवलित हो उठी।

उपस्थित प्रत्येक नर नारी के हृदय मे मुनियॉ के सरल, उदार व आवभगत के जज्बे से करूणा का ज्वार उमड पडा। विकास-समृद्धि का साक्षात् साक्षात्कार कर उनकी ऑखो से अविराम आँसुओ की धाराये बह चली। मुनियाँ अपने अतिथि देवो भवो के कर्त्तव्य पालन मे पुर्ववत क्रियाशील थी। पुर्नवास कमेटी के समक्ष निरक्षरो को ढेरो रुपया देकर उन्नति व प्रगति का सपना दिखा कर उनकी विरासत से, गाँव से बेदखल करके गाँव बदर कर उनके भविष्य को सजाने-सवारने का यक्ष प्रश्न, दम घोटू विषैले-वातावरण मे अनुत्तरित होकर तैर रहा था।

OOO

सवेरा

आधी भूखी-प्यासी, काली अमावस्या की रात मे वह अपनी गुदडी पर उठ बैठी। नाग वर्णी, काली स्याह रात के नीरव भयकर सन्नाटे के गभीर साम्राज्य को यदा कदा गॉव के आवारा कुत्तो की कुऊँ ऊॅं ऊॅं कुऊॅं की कर्कश कर्ण भेदी चीत्कारो की चीखे तैरकर वातावरण को अत्यधिक घिनौना बना रही थी। उसने अपनी एक वर्षीय छुटकी को अधेरे मे टटोल कर, चिथडे-चिथडे हुई गुदडी से सहेज कर लपेटा व घास के झोपडे की दीवार की ओर धकेल दिया।

वह उठी और अधेरे मे खोजती-खोजती हुई अपने खाद्धान की टूटी-फूटी मटकी के पास पहुॅची। उसने मटकी को सावधानीपूर्वक उठाया और झोपडे मे ही रखी पत्थर की चक्की के पास आ बैठी। मटकी के तले मे से मुठ्ठी भर बाजरा निकल कर उसने चक्की मे डाला व चक्की के हत्थे को गोल-गोल घुमाने लगी। धर्र-धर्र की आवाज के साथ ही पिसा हुआ आटा रिस-रिस कर चक्की के पाटो मे से निकलने लगा।

अपने कार्य मे तल्लीन होकर वह सोचने लगी। मानव जाति के गौरवपूर्ण इतिहास मे मानवीय जीवन लेकर भी वह पशु से भी बदत्तर जीवन जी रही है। आठ वर्ष के वैवाहिक जीवन मे उसने छ बच्चो को जन्म दिया। हमेशा आधी रात मे उठकर नित्य के कार्यो मे लगती है और एक पहर रात गये तक गृहस्थी के कार्यो मे यत्रवत लगी रहती है। वह अगरबत्ती की भाति तिल-तिल जल का सदैव दूसरो के घरो को आनद और सम्पनता से भरती रहती है। परन्तु स्वयम् के घर मे मात्र अभावो, दु खो के अलावा कुछ भी नही बचता है।

इन्ही विचारो मे मटकी का बाजरा कब का ही खत्म हो चुका था। उसने दोनो हाथो से सहेज कर, आटे की मात्रा का अनुमान लगाया कि आधा सेर, तीन पाव तो चून होगा ही खैर! आज की सुबह तो वह अपने परिवार को खिला-पिला दी देगी। आटे को पुन उसी मटकी मे डाल कर, उसने उसको यथा स्थान रख दिया। झोपडी के पास रखे पानी का घडा उठाया और वह बाहर आ गई।

आज अमावस्या है। सोचा उसने पिछली तेरस को बडे गॉंव मे

सरकार की ओर से पानी का ट्रैकर आया था। पानी का ट्रैकर हर दूसरे दिन पानी लेकर आता है। इन्ही विचारो ने उसके क्रिया-कलापो को गति प्रदान कर दी। वह झटपट झोपडे की पगडडी से गॉव के किनारे से गली मे आ गई।

इस वर्ष भी लगातार तीसरे अकाल ने ना केवल उसकी गृहस्थी को बल्कि सैकडो गॉवो की हजारो गृहस्थियो को मौत की विभिपिका से जुझने को मजबूर कर दिया था। और जो अकाल से जुझ नही पाये। वे काल के ग्रास बनकर परलोकवासी हो गये। आये दिन ही ना जाने कितने नर-नारी, बच्चे, पशु, डॉगर मौत के मुँह मे समाते ही जा रहे है।

गॉव से निकलते ही गोचर भूमि मे पहुँचते ही उसको अपने मुँह-नाक फट्टी-पुरानी ओढणी से ढकना पडा क्योकि यहा पर मृत मवेशियो के ककालो से मैदान अटा पडा था। जहॉ कुत्तो, कौओ, गिद्धो के खाने पीने की दावले बहुत ही मजे से चल रही थी। मवेशियो के मरने से चमारो, खटीको की जैसे चादी बन गई थी। आधा कोस का नरक पार करके वह अब निस्कटक मार्ग पर रेल की भांति सधी-सधाई चाल से आगे वढती चली जा रही थी। अभी उसे दो घडी का सफर ओर तय करना है।

सूरज उगने से लगभग एक घडी पहले ही वह पानी का घडा लेकर वापस अपने घौसले मे आ समाई। जहॉ उसका मर्द नित्यकर्म से निवृत्त होने जगल को जा चुका था। बच्चे अभी भी गुदडियो मे दुबके पडे सो रहे थे। उसने लकडिया बीनी, दो पत्थर पास-पास मे रखकर बनाये गये चुल्हे मे आग जलाई। मिट्टी की परात मे आटा गुथा। अपने परिवार मे हैसियत के अनुसार उसने रोटियॉ पकाई।

उसका मर्द 'जगल' से लौट आया था। उसके सिर पर एक लकडियो का गठ्ठा था। जिसको उसने झोपडे के बाहर एक ओर पटक दिया। झोपडे मे प्रवेश कर उसने भावी पीढी को उठाना प्रारम्भ किया।

अब तक सूरज उग आया था। जिसका प्रकाश झोपडे मे छन-छन कर आ रहा था। जैसे इस गरीब गृहस्थी को नया सदेश दे रहा हो। उसने पकाई गई सारी रोटियॉ एल्मुनियम की परात मे डाली व इन्तजार कर रहे अपने मर्द व बच्चो के समुख खिसका दी। वह स्वयम् भी ओढनी से पसीना पोछकर उनके समीप जा खिसकी। सारा परिवार कुत्तर-कुत्तर कर रोटियाँ

खाने लगा।

कुछ ही पलो मे परात खाली हो गई। बच्चे अभी भी ककाल पर लगे मास को नौचते गिद्धो की तरह खाली परात को चिचौड रहे थे। उसके मर्द ने उदर पूर्ति हेतु डटकर पानी पिया, भूख भगाने की गर्ज से कृत्रिम लबी डकार ली। बच्चो को भरपेट पानी पिलाया और स्वय ने भी छक कर पानी पिया। अलसाये से बच्चे पुन गुदडियो मे दुबकी मार गये। उसका मर्द पास ही पडी टूटी चारपाई पर कमर सीधी करने की गरज से लेट गया। वह भी थकान उतारने, बच्चो को एक तरफ धकियॉ कर उनके पास जा लेटी।

परन्तु ये सदभावी गृहस्थ परिवार अब कभी नही उठने के लिये सोया था। यमपुरी से यमदूत पृथ्वी लोक पर इनके प्राणो को हरने पहुँच चुके थे। चिर निद्रा इस गृहस्थी की प्रतीक्षा कर रही थी। सूरज सिर पर चढ आया फिर भी इस गृहस्थी मे किसी प्रकार की हलचल ना पाकर सम्पूर्ण गॉव मे भय मिश्रित आश्चर्य फैल गया।

सारा गॉव इस गृहस्थी की झोपडी की ओर उमड पडा। सभी गहरे शोक और दु ख मे डूब गये। गॉव वालो ने यहा आकर देखा कि इस गृहस्थी की सपत्ति रूपी पानी के घडे मे बुड्ढा नाग मरा हुआ पडा है। गॉव वालो के सामने कहानी दर्पण की तरह साफ थी। 'वह' और 'उसकी' गृहस्थी निश्चेष्ट शवो मे तब्दील होकर गिद्धो व कौवो का इन्तजार करते हुये पडे हुवे थे।

OOO

त्रासदी

सुर्योदय के कुछ अतराल बाद ही सूर्य देव ने अपनी भयकर अगारो रूपी गर्मी को पृथ्वी पर उडेलना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे धरती आग से झुलसती रोटी की भांति सिकने लगी। इससे गॉव के किनारे कच्चे किंतु विशाल मकान के आगे मैदान मे सोया 'वह' ताप की अकुलाहट के कारण उठ बैठा। अलसाया सा ऑखे मलते हुए, उसने हमेशा की तरह गॉव के कुऐ की ओर देखा। कुऐ की जगत बिल्कुल सुनी पडी हुई थी। उसने सोचा आज भी सदैव की तरह गॉव वाले सुर्योदय से पूर्व ही जाग गये होगे। उनकी औरते अपने घरो की आवश्यकतानुसार पानी भर कर ले जा चुकी होगी। गॉव के मर्द अपनी-अपनी भेडो, गायो, भैसो, ऊँटो को चराने थार के मरुस्थलीय जगलो मे ले जा चुके होगे।

बेमन से उसने अपनी गुदडी को लपेट कर गोलाकार किया तथा चारपाई उठाकर अपने मकान के कच्चे कमरे मे डाल दी। बगल मे दबी गुदडी को उस पर पुन बिछा दिया। वह कमरे से बाहर आया और मकान के पिछवाडे मे अकडू बैठ कर मूतने लगा। उसकी देह मूत क्रिया मे संलिप्त थी तो उसका मस्तिष्क सोच क्रिया मे। उसने सोचा क्या आज भी 'वह-सासण' पानी भरकर चली गई होगी? 'नही-नही वह तो गॉव वालो के पानी भरने के बाद ही पानी भरने कुऐ पर आती है क्योंकि वह अछूत जो है। वह तिरस्कृत सासण सबसे बाद मे ही कुऐ से पानी भर सकती है? दिमाग की इस दलील ने उसे असीम शाति प्रदान की। वह उठा और खेजडे के भारी वृक्ष के नीचे खडा होकर वीरान कुऐ की ओर एकटक ताकने लगा।

कुछ समय के अतराल बाद सासण उसे मटकी लिये कुऐ की ओर आती दिखाई दी। उसने अपने शरीर मे स्फूर्ति से भरे लबालब दौरे के सचरण का अनुभव किया। वह तुरन्त मकान मे घुसा, बाल्टी उठाई और कुऐ की ओर उड चला। उसने गॉव के हम उम्र युवक साथियो से सुन रखा था कि यह सासण भी अपनी मॉ की तरह ही ग्राम वधु है जो अपनी सामान्य जरूरतो की पूर्ति हेतु देह समर्पित कर देती है।

परन्तु वह अपने नैतिक दायित्व, उच्च कुल की गरिमा तथा गॉववालो के 'डागदर साब' के सबोधन को खडित नही होने देना चाहता था। अन्तत वह चाहता था कि वह स्वय उसके गॉव मे दूर किनारे पर बसे

सुनसान मकान मे उचित मौका पाकर पहुच जावे। वह उससे इस बाबत एकात मे बात करना चाहता था। जिसके लिये उसे पानी भरने का बहाना, कुऐ पर पसरा सन्नाटा, सासण की उपस्थिति स्वर्णिम मौका लगा।

सासण कुऐ पर उससे पहले पहुच चुकी थी। उसने अपनी मटकी को टोटी से अनवरत गिर रही जलधारा के नीचे रख दी। वह भी कुऐ की जगत पर अपनी बाल्टी रखकर ललचाई भरी निगाहो से मत्र मुग्ध होकर बिना पलके झपकाये सासण के चिदी चिदी हुये चिथडे नुमा कपडो मे से झाकते हुये उसके मासल अगो को निहार रहा था। उसको लगा सासण की आँखो मे मौन भरा निमत्रण है।

वह सुखे हुये कठ से, थोडा साहस करके मैमने की मिमियाती आवाज मे बोल पडा-'आज क्या तू घर पर अकेली ही है'?

'नही मेरा बडा भाई रावता घर पर ही है।-

'और तेरी माँ कहाँ है?'

'माँ तो पडोस के गाँव फेरी लेने गई है।'

उसका हौसला वार्तालाप से कुछ कुछ बढ चुका था। उसने साहस किया और बोला-'तेरे कपडे तो बिल्कुल ही फट गये है। तू मेरा 'काम' कर दे तो मै तुझे नये कपडे सिलवा दूगा?'

भरपूर अगडाई से शरीर के मासल उभारो को और अधिक उजागर करके मादक शब्दो से सासण बोली-'डागदर जी! आपकी तरफ आने का बहाना ही नही मिलता। वर्ना आपका एक काम ही नही सारे के सारे कामो को निपटा दू।'

दूर से गाँव का वृद्ध लिच्छु, अपनी गायो को पानी पिलाने कुऐ की खेलियो की तरफ ला रहा था। अत उसने शंकित होकर वार्तालाप तोड दिया। सासण भी पानी की मटकी उठा कर चल पडी। वह भी बाल्टी मे पानी भर कर अपने मकान की ओर भावी कार्यक्रम के विचार से आन्ददित होते हुये चल पडा।

आनद के झुले मे झुलते हुये उसने घर मे प्रवेश किया। सासण की जवानी से भरा मद मस्त यौवन उसके मस्तिष्क पर बार-बार गहरी चोटें बरसा रहा था। सासण की स्वीकृति भरे निमत्रण की आवाजे उसके कानो मे मधुर रस घोल रही थी। अत्यन्त-प्रसन्नचित मन से उसने चुल्हा जलाया,

सब्जी पकाई, आटा गुथा और रोटियॉ सेकी। विशाल एव एकात से भरा उसका मकान आज उसे दैत्याकृति के रूप मे नही लगा बल्कि सासण की मधुर मीठी कल्पना मे यह एकाकी जीवन उसे स्वर्गिक आनद दे रहा था। खाना खाकर उसने रेडियो ऑन किया और चारपाई पर लेट कर भविष्य के मादक स्वप्नो मे खो गया।

'डागदर जी ओ! डागदर जी' की आवाज ने उसकी नीद को भगा दिया। आवाज मकान के बाहर से आ रही थी। वह उठा स्लीपर पॉव मे डाले। तौलिया कमर पर लपेटा और बाहर आ गया। दोपहर का दिन अभी बाकी था फिर भी सूर्य की किरणो मे तीक्ष्णता बरकरार थी। तेज धूप मे उसकी ऑखे चुधियाँ उठी। आँखो के सामान्य दशा मे आने पर उसने देखा कि सासण का भाई रावता उसके सामने खडा हुआ है।

उसने गहरी नजरो से उसको घूर कर देखा और रूखे स्वरो मे प्रश्न फेकता हुआ तेज शब्दो मे बोला-'क्यो बे रावते! क्या बात है। क्यो आया है?'

रावता प्रति प्रश्नो से घबरा कर मरी मरी, दबी आवाज मे बोला-'जी रात की गाडी से घरवाली को लेने ससुराल जाना है? सारे गॉव से मॉग आया हूँ परन्तु पचास रुपये उधार नही मिले। वापस आते ही घासियॉ (मृत पशु की खाल) बेचकर आपको वापस लौटा दूगा डागदर जी?'

'अच्छा-अच्छा ठीक है तू यही ठहर? अदर आकर घर भ्रष्ट मत करना!' कह कर वह अदर आया। लोहे की सदूक मे से पचास का एक नोट निकाल कर बाहर खडे रावते को पकडाया। रावता गद् हो पुन अभिवादन कर लौट पडा। वह मकान के अदर आकर चारपाई पर लेट गया और सासण से हुई वार्तालाप मे डुबने-उतरने लगा।

शाम को गोधुलि के धुधलके मे, वह गॉव के नियत घर से बदी का दूध लेकर आया। दूध गर्म किया। सुबह की बची सब्जी को गर्म किया और रोटियाँ बनाने के कर्म मे लग गया। खा-पीकर निवृत्त होकर उसने चारपाई को बाहर मैदान मे डालकर उस पर गुदडी बिछाई। चारपाई के सिरहाने पानी से भरा लोटा रखकर, उसे ढका और लेट गया। लेटे-लेटे उसने रेडियो चालु कर उसकी सुई को घुमाया है। विविध भारती, ऑल इंडिया रेडियो, 'आज कल' बीबीसी की यह आवाज उसे अत्याधिक

आकर्पित करती है। फाक लैण्ड सकट, भारत के उप चुनाव, पाकिस्तान मे जिया का इस्लामीकरण और आज मगलवार है। आजकल के बाद 'हमसे पूछिए' उसका मन पसद कार्यक्रम है।

वह उठता है, चारपाई के सिरहाने रखे लोटे से चार पाँच घूट पानी के पीता है। लोटे को यथा स्थान पर रख देता है। तँवे की सी काली, स्याह घनघोर अधेरी रात मे गाँव की तरफ से टिमटिमाता हुआ प्रकाश पुज धीरे-धीरे उसकी ओर बढता चला आ रहा है। उसकी निगाहे उस पर टिक जाती है। उसका मन आशा-निराशा मे डूबने उतरने लगा है।

निकट आते प्रकाश पुज के साथ-साथ वतियाने की आवाजे भी उसके कानो मे स्पष्टत पडने लगी। वह समझ चुका था कि गाँव के चौधरी के साथ उसका हाली उसके पास चले आ रहे है। 'डागदर जी राम राम' वह भी अभिवादन का प्रत्युत्तर देकर उत्सुकता से आगन्तुको की ओर ताकने लगता है। चौधरी का हाली कासु अपने कधो पर लदे मेढे को उतार कर उसकी चारपाई के पास लिटाता है।

'डागदर जी! मेरा मेढा आफर गया है?' यह आवाज चौधरी की थी।

'अच्छा-अच्छा, बैठो-बैठो! मै अभी देखता हूँ। कह कर वह तकीये के नीचे से टार्च व सैल निकालता है, सैल टार्च मे डालकर, उसके बटन को अगुठे से आगे धकेलता है।

कासु चारपाई के पास जमीन पर नीचे वैठ जाता है और चौधरी चारपाई पर वैठ कर हुक्के की नली मुँह मे फसा कर जोर से कश खीचता है। इससे गुड-गुड की आवाज के साथ उसकी छाती मे ढेर सारा धुआ समा जाता है। ढेर सारे धुऐ को सास के साथ बाहर उडेलते हुये, हसते हुये चौधरी कहता है-

'डागदर जी सासण कह रही थी, मरे समान इस मेढे को मुझे दे दो हमारी गोठ हो जायेगी। परन्तु मैंने उससे कहा अरे! बावली यह तो मामूली बीमारी है डागदर जी के हाथो मे जादू है जादू! वे इसे एक पल ही मे ठीक कर देगे।'

उसे लगा उसका दिमाग एकाएक घुमने लगा है। सेंकडो विचार अनायास ही उसके दिमाग मे कौध उठते है। कर्त्तव्य, स्वार्थ, स्वार्थ सिद्धि

ही आज के युग मे कर्त्तव्य की परिभाषा है। आज मौका है। सासण का भाई रावता यहा नही है। माँ उसकी दूसरे गाँव मे फेरी लेने गई हुई है। घर पर सासण अकेली है। उसे बहाने और मुझे मौके की तलाश है और वह बदली परिस्थिति को मौके का रूप दे सकता है। यह एकाकी भरी अंधेरी रात उसके लिये जवानियो की रगीनियो मे तब्दील हो सकती और वह निर्णय ले लेता है।

टार्च जला कर वह मेढे की ओर रोशनी फेकता है। मेढे का पेट दोनो तरफ घडो की तरह उभरे हुये थे। उसकी सासे रूक-रूक कर चल रही थी। वह उठता हुआ बोलता है-

'चौधरी जी। आपने बहुत देर कर दी, खैर। मै फिर भी कोशिश करता हूँ'। कमरे के अन्दर आकर वह दवाईयो का ट्रक खोलकर उसमे से डिस्टील वाटर की वाईल निकाल कर उसका सिरा फोड कर, कापते हाथो से सीरीज मे भरता है। वह बाहर आता है मेढे के पास बैठ कर उसके हार्ट की धडकन को हाथ से महसूस कर, नीडल को गहरे तक धसा कर, इजेक्शन लगा देता है। मेढे का हार्ट पक्चर हो जाने से वह तेजी से कपकपाता है और कुछ मिनटो मे ठडा पड कर मर जाता है।

चौधरी कई देर तक सुनी आँखो से मेढे की तरफ ताकता रहता है फिर बोलता है-'डागदर जी परसो कसाई ने इसके डेढ हजार रुपये ध मे थे। परन्तु मैने ही नही बेचा, खैर। अब तो यह मिट्टी हो गया है। हरि करे सो खरी! रात को आपको तकलीफ दी, क्षमा करे।'

चौधरी हाथो मे हुक्का लिये चारपाई से उठ खडा हुआ। प्रस्थान पूर्व कुछ याद करता हुआ सा बोला पडा-'अरे! हाँ ओ कासु.जा अभी ही चला जा सासण के पास उसे कह देना मेरे मेढे को तत्काल यहा से उठा कर ले जाये। नही तो रात भर कुत्ते, भेडिये डागदर जी को सोने नही देगे?'

कासु आज्ञा की पालना को तेजी से लपकता है। चौधरी हुक्का गुडगुडाते गहरी निराशा से श्वास छोडते धीरे-धीरे गॉव की ओर अंधेरे मे विलीन हो जाता है।

वह प्रफुल्लित हो उठता है। उसका मन नाचने को करता है। घटाटोप अंधेरे मे भी उसके चेहरे पर खुशियॉ नाचने लगती है। तत्परता से उठता हुआ टार्च की रोशनी मे कमरे मे प्रवेश करता है। सीरीज ट्रक मे यथा

स्थान रखता है, मेहमानो के लिए सुरक्षित खाट पर ट्रक मे रखे साफ
बिस्तर उस पर बिछाता है। चरम आनद की प्राप्ति कि अनुभूति लिये
मैदान मे पडी चारपाई पर आकर लेट जाता है। सासण के इन्तजा
उसका हृदय धबाक-धबाक की ध्वनि के साथ तीव्रतर गति से धड़
लगता है।

धीरे-धीरे गॉव की तरफ से आती हुई परछाई एव उसकी
ध्वनि उसके दिन की धडकनो को द्रुत गति से धडकने को बाध्य कर
है। छाया रूपी पगध्वनि धीरे-धीरे निकट आती हुई, उसके पास उ
चारपाई के सिरहाने तक पहुँच जाती है। वह फूर्ति से तत्काल उठ
चारपाई पर बैठ जाता है। विस्फारित ऑखो, पसीने से नहाये अपनी निस्
काया से रात के अधेरे मे प्रेतात्मा से दिखते रावते की ओर ताकता है।
मृत मेढे के नीचे अपनी बाहे फसा कर उसे कधो पर लादने का प्र
कर रहा है।

उसका चेहरा सफेद पड गया। दिल पाताल की गहराइयो मे
लगा। हलक सुख कर लकडी हो गया। टूटे-फुटे हकलाते शब्दो मे
रावते से पूछता है। रा व ता तूॅ यहॉ क्यॉ तूॅ ससुराल नही गया?'

'डागदर जी मै जाने के लिए घर से निकला ही था कि
काके ने मरे मेढे की सूचना दी। चौधरी की तावीद की याद दिल
ससुराल तो मै कल भी जा सकता हूॅ। घरवाली तो ताउम्र टाग नीचे ही
परन्तु डागदर जी इतने मोटे ताजे घेटे का मास तो वर्ष मे एक दो बार
नसीब होता है।

यह कह कर रावते ने मृत मेढे को अपने कधो पर लादा। ब
भरी बैल गाडी की हौले-हौले की सी रफ्तार से रात के गहराते अधेरे
विलीन हो गया। और वह घनघोर, काले, स्याह अन्धकार मे जागृत हुये

OO